

सियबरकेलिपदावली ॥

जिसमें

श्रीरामचन्द्र आनन्दकन्द व श्रीजगज्जननी जानकीजी का जन्म बिहार व बाललीला व श्रीविश्वामित्रयज्ञरक्षण व जानकीस्वयम्बर व शम्भुधनुभङ्ग व राम जानकी बिवाहादि सुन्दर रसीले ध्रुपद, ख़्याल, भैरवी, खेमटा, धनाश्री आदि रागों में वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीअयोध्यानिवासी परमानन्यभक्त श्रीज्ञानाअलि सहचरिने श्रीरामचन्द्रचरणारबिन्दरसरासिक पुरुषों के निमित्त अतीव भक्त्युदारता से निर्मित किया ॥

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपी

सन् १९१४ ई० ॥



अथ सियबरकेलिपदावली ॥

दोहा ॥

श्रीहनुमत सतगुरु चरण, सकल सुमङ्गल खानि ॥ ताते प्रथमहिं बन्दिहौं, भावभक्तिके दानि १ श्रीबाणी गौरीशपद, गणपति कबिबर शेश॥ बालमीकि आदिक अमित, तिनसों लहि उपदेश २ भरत माण्डवी पद कमल, लषण उर्मिलासङ्ग ॥ श्रुतिकीरति शत्रूहनहिं, बँदिहौं लहिरस रङ्ग ३ श्रीसीतापति पदकमल, हिय धरि पायप्रसाद ॥ कहौं यथामति बिशद यश, जासों मिटै प्रमाद ४ बुधिबिबेक बिद्या नहीं, काब्य-कला नहिं ज्ञान ॥ छन्दप्रबन्ध न जान कछु, श्रीगुरु-कृपा प्रमान ५ चरितामृत अवगाह अति, निगमनेति कहिगाय ॥ तदपि कहेबिनु रहत नहिं, नितनव कहत न घाय ६ श्रीकेशवदासेति कहि, रामरतन गुरुसोय ॥ रतनगोप हिय यतनकरि, अब प्रकटत जसहोय ७ चरित रतन गुरुदेत जो, नामरूप अरु धाम ॥ बिना

यतन ताके किये, मन न लहै बिश्राम ८ रामरतन दासेति जो, त्रिगुणी बपुको नाम ॥ ज्ञानाअलि कहि त्रिगुणपर, नामसो तन सुखधाम ९ प्रथम नाम शरणागती, द्वितिय भोग सम्बन्ध॥ रसिकजान यह रीति रस, और न जानै अन्ध १० देही देहबिभाग नहिं, केवल सच्चिद्रूप ॥ बिनु समुझै यह तत्त्वनर, परे जगत तमकूप ११ युगल सुकेलि पदावली, नामावलि रसजाल ॥ रसिकजनन मन फँसन हित, ज्ञानाअली निहाल १२ उनइससै बाइस बिशद, संवत जानि बिशेश ॥ गावतहौं सियलाल यश, श्रुति जेहि गावत शेश १३ शरद सुखद ऋतु पञ्चमी, शुक्लपक्ष अभिराम॥ भौमबार शुभ योगग्रह, लगनघरी सुखधाम १४ श्रीसरयूतट अवधपुर, कातिक सुखद सुमास ॥ श्री गुरु रसिकनकी कृपा, भयो सुचरित प्रकास १५ सियबरकेलिपदावली, षटऋतु रसदरशाय ॥ ज्ञानाअलि यश गाय नित, श्रीगुरुपद शिरनाय १६ ऋतु बसन्त रघुबर जनम, बहुरि सियाको जान ॥ बालकेलिकल बिबिध बिधि, चारिउ बेद बखान १७ ग्रीषम सियबर बिरह कहि, पावस मिलन उमङ्ग ॥ बरषाऋतु झूलैं दोऊ, श्रीसरयू तट सङ्ग १८ शरद सुखद रसरास कहि, हनुमत जन्म उछाह ॥ हिमऋतु चारिउ बन्धु को, गावोंगो बरब्याह १९ शिशिऋतु केलि बसन्तपद, गाय धमारि सुराग ॥ होरी खेलैं पीयसँग, सियजू भरीसुहाग २० जस मयंक सुखमासुधा, पियत तृप्त नहिं कोय ॥ ज्ञानाअलि प्यासी सदा, चितवचकोरि

कहोय २१ मालपुआ बासीसरस, सेंके नव दरशात॥ त्यों मुनिकथित पुराणयश, सेंकि सेंकि सोइ खात २२ ज्ञानागौर गुमानतजि, सियबर को यशगाय॥ रसिकन सङ्ग उमङ्गभरि, निशिदिन नहीं अघाय २३ निमि-कुल उद्भव भूपबर, जनकनाम जगजान॥ तिनके भ्राता अष्टहैं, यह अगस्त्य परमान २४ चन्द्रकान्ति मम मातुपितु, शत्रूजित नृपजान॥ चारुशिला भगिनी बड़ी,ताकी अनुचरि मान २५ ज्ञाकहिये जो गोप्यरस, नानिश्चय जियजान॥ ताकी शरणागत भई, ज्ञाना अली बखान २६ अष्टसखी सिय मुख्य हैं, तिनमहँ ज्ञाना जोय॥ ताकीसहचरि द्वितियबपु, ज्ञानाअली सो होय २७ ज्ञानाज्ञान न जानकछु, ना निषेध करिदीन॥ केवल सियबर शरणगहि, तासों गुनत प्रबीन २८ ज्ञानअखण्ड अनादि अज, जनकलली को पीय॥ तासों बरी निशङ्क ह्वै,ज्ञाना सहचरि सीय २९ अजअ-खण्ड श्रीरामबर, मूरतिबिश्व निवास॥ तासों बरिगुरु कृपाकरि, ज्ञानाज्ञान प्रकास ३० श्रीमिथिला नैहर स-मुझि, सासुर अवधहि जानि॥ दोउघर सुखद सुस-बदा, रहिहौं जहँ मनमानि ३१ यह सन्ध्यान प्रबन्ध कहि, रसिकराज कोइ जान॥ जिन सतगुरु सँगपढ़ि समुझि, ज्यहि जग लसत मशान ३२ प्रथम बधाई जन्मपद, प्रकटभये सुतचार॥ कौशल्यादिक मगन मन, घरघर मङ्गलचार ३३ बन्दनवार पताकध्वज, चौक सुमङ्गलमूल॥ कनककलश गृह द्वारप्रति, जानि समय अनुकूल ३४ पान पुंगिफल दूब दधि, श्रीतुलसी-

दल आनि ॥ ज्ञानाअलि गावनलगी, बालचरित्र बखानि ३५ अवधपुरी मङ्गलमहा, धूपधूम रहिछाय ॥ नभनिशान ध्वनि गान ध्वनि, जयध्वनि मुनिमन भाय ३६ पांचसुरस संस्त्रब्धके, तामें चारि प्रधान ॥ सख्यदास्य बात्सल्यकहि, अरु शृङ्गारहि जान ३७ पंचमरस जो शान्त कहि, सो नहिं रसिकनलीन ॥ ज्ञानी योगी जपी तपी, सो तिन्हकहँ दै दीन ३८ झूलन रास बिलास सुख, अरु बिवाह रसराज ॥ सख्यसुकेलि बसन्तपद, अरु होरी सुखसाज ३९ दास मिलित सब रसनमें, पियप्यारी सुखदेत ॥ ज्ञानाअलि बात्सल्यरस, सबरस उतपति हेत ४० ॥ अथ जन्मपद धुरपद ॥ आजुको उमङ्ग रामजन्मको उछाह सुनि सुमन बरषि देव दुन्दुभी बजायहै । गावैं गुरा गन्धर्ब कुमारि वौ कुमारनीके चढ़िकै बिमानन अवधपुर छायहै ॥ दशचारि चौदहौ भुवन तिहूंलोकहूमें तिहूंकाल बिदित सुयश श्रुति गाय है । पाय है सुकृतफल महाराज रानिजू ने ज्ञानअलि सुनत श्रवरा मनभायहै १ ॥ अथ ख्याल बधाई ॥ उरउमँग बधाई बाजै । अति अपार नृपद्वार चहूँदिशि मनहुं सुभग घनगाजै ॥ भये प्रकट नृपसुवन सुहावन मनभावन दुख दोषनशावन । श्रीरघुबंश तिलक कुलदीपक मदन कोटि छबिलाजै ॥ सुनि सुनि भवन भवन ते भामिनि कामिनि कलाकुशल द्युतिदामिनि । चलीं हरषि उर कनकथार भरि सजिसजि मङ्गल साजै ॥ बीणा वेणु शंख सहनाई सरसाई नौबति सुखदाई । मङ्गल गानन गाय नाचि तुम तननननगति छाजै ॥

ज्ञानाअलि पताकध्वज चामर कनककलश चौकै रचिकै। बन्दनवार द्वारप्रति राजै कौशल्यासुत काजै २ जाये सुत श्रीमहरानी। कहाकहौं छबिरूप माधुरी चारिउ शिशु सुखखानी॥ देखनयोग जगतके जीवन दुइ श्यामल दुइ गौर मनोहर। मधुऋतु चैतशुक्ल नौमी तिथि चारिउबेद बखानी॥ हरिहैं भूमिभार भक्तनहित थपिहैं सुर आसुरमदभानी। करिहैं बिबिधकेलि कल कीरति जेहि गावहिं मुनिज्ञानी॥ कियो सफल पितु मातु मनोरथ सकलभांति सबके मनमानी। ज्ञाना-अलि नृपराजसुवन को गावत यश असजानी ३॥ राग-खमाच॥ जनम बधाई निशि बासर सरसै। जायो मह-रानि जूने सुवन सुकृतफल अचल सोहाग जाको नितनव दरसै॥ बन्दि बेद बिशद सुयश बरणत नित बानि अकुलानि थकि गतिमति भूलि सबताको नृप रानि करकमलन परसै। जैसोइ उमङ्ग नृपसदन नगर नभ घरघर रचना कलश चारु चौकै रचि ज्ञानाअलि सुमन सलोनि सुर बरसै ४ आजु अवध नृपसदन ब-धाई जारी। अधिक सोहाई भाई उपमा न आई कछु कैसे करि गाई सोतौ त्रिभुवन न्यारी प्यारी॥ जाको बिधि नारद शारद सनकादि कबि कोबिद बखानै जानै जैसी जाकी मति तैसी सोई चारौ बेदतत्त्व प्रकट सु-वन चारी। जैसे नृप रानी तैसो सुवन सुभग जायो तैसोई सहाय सुर सुकृत सराहैं भाग ज्ञानाअलि गावै यशबिशद उमगभारी ५॥ लावनीछन्द॥ आजु नृपभवन भीर भारी। घरघर द्वारद्वार पुर चौहट प्रमुदित नर

नारी ॥ भये सुतसुन्दर सुखकारी । बदन कोटिशतमदन कदन छबि सुवन सुभगचारी ॥ नवेली अलबेली सारी । सजि नवसप्त बारहौ भूषण भरि मङ्गलथारी ॥ बधाई देनचलीं प्यारी । दल फल फूल दूब दधि रोचन नाचैं दैतारी ॥ छई नभ धूपधूमकारी । मनहुँ घटा दामिनिसि अटापर दमकै मतवारी ॥ दुंदुभी जयध्वनि मनहारी । ज्ञानाअलि निवछावरि करि करि तन मन धन भारी ६ ॥ बधाईपदमङ्गल ॥ बाजे अवध नृप द्वार बधाई शुभघरी । घरघर मङ्गलचार निछावरि मन भरी ॥ मणि बसन भूषण वारि तन मन नारि नर आनँद महां । बरषहिं सुमन सुर सूत मागध भाट नट गायक जहां ॥ मध्य दिवस गतभानु बिमानन सुरबरी । नाचहिं गावहिं सुमुखि मगन गतिमतिहरी॥ गतिहरी हियहरषि निरखहिं नगर रचना छबिसनी । कहि सकहिं नहिं सुखसुयश सुखमा उमा रति बाणी गनी ॥ तिथि नौमी मधुमास पुनर्वसु सुखभरी । योग लगन ग्रह बार सुबिधि दाहिन करी ॥ सुन्दरि कौशल्या रामजननी प्रकटि सुवन सुश्यामहैं । केकयसुमित्रा सुवन चारौ चतुर सुखमाधाम हैं ॥ नितनवमङ्गल चार गाय किन्नरनरी । ज्ञानाअलि बड़भाग सुयशबांटे परी ७ ॥ छन्द ॥ जग बिदित तिहुंपुर चारि युग श्री जन्मभूमि सुहावनी । सुख अवधि बर कारनि रमापुर भाविकन मन भावनी ॥ झूलत मातु उछंग कबहुं बर पालने । कबहुं पिताकी गोद फँसे सुखजालने ॥ गहिपद अँगुष्ठ मयङ्क नख द्युति कञ्ज मुख पी-

वत छके । सुरतरुसुभग नृपरानि शिशुफल पाय जनु सुन्दरपके ॥ नितनव बाल बिनोद मोदभरि राजहीं। मातुकौशला आदि मनहिं मन गाजहीं ॥ भरि भाग अचल सोहाग मातु नृपाल लालहि पालहीं । पय प्रेम प्याय लगायउर प्रमुदित सुवन नित लालहीं ॥ ज्ञानाअलि पुरनारि सुसोहिल गावहीं। तनमनधन निवछावरि करि सुख पावहीं ८॥ ठुमरी ॥ चलोरी सजि सोहिलो गाई नवरस बरसाई। जायो सुभग सुवन महरानी अनुपम छबिछाई ॥ दोहा ॥ गुणआगरि नागरि सबै गृहगृहतेधाई। गावहिं मङ्गल चार सबै मिलि तनमन निवछाई ॥ जन्म बधाई नौबति बाजै पुरनभ सरसाई। सुमन सुगन्ध माल सुरबरसैं सरसैं मनभाई ॥ दोहा ॥ चारि सुवन चारौ रतन, चारि सुफल पाई। बड़भागिनि रानी सबै, जगजीवन जाई ॥ लै लै गोद चन्दमुख चूमत, पयसुप्रेम प्याई । ज्ञानाअलि कौशल्यासुत यश, गावोंगी मनलाई ९ बधाई मनमोहनी बाजै। रामजन्मकाजै ॥ आजु महामङ्गल नृपआंगन घर घर सुख साजै। चौकै चारुकलश पताक ध्वज अनुपम छबि छाजै ॥ बन्दनवार द्वारद्वारनप्रति दीपावलि राजै। धूप धूम नभ घनघमण्ड लखि मनमयूर गाजै॥ ज्ञानाअलि सुर सकल अशीषत भूपतिशिरताजै १०॥ ठुमरी ॥ मन भावन सुन्दर भाग भले भक्तन हित प्रकटे जगमहिंआं। मनुराज मनोरथ सुफल कियो ऐसो तपशालि कहूं नहिंआं॥ रानी शतरूपहि मातु कह्यो सोई कौशल्यासुत लहिआ। श्रीरामजन्म आनन्द

बधाई उमँगि सरितसरयू बहिश्रा ॥ सुखमा समुद्र शिशु बालकेलि कल को बरणै सांची कहिश्रा । नभ नगर बगर गृह डगर सगर निवछावरि मणिगण भरि तहिश्रा ॥ ज्ञानाअलि गाय बजाय सदा लहि भक्तिबधाई दृढ़गहिश्रा ११ ॥ ख्याल ॥ गह गह बाजे नभनगर बधाई । जायो श्रीकौशल्यासुत सुदिन सोहाई ॥ बालक कलोल केलि कञ्जबन फूल्यो मानो सुख मकरन्द मातु पियत अघाई । भरिहै प्रमोद लिय गोद दुलरावै लाल पलना झुलावै शिशु सुखमा लोभाई ॥ ज्ञानाअलि केकयी सुमित्रासुत चारौ प्यारे जग उजियारे चन्दमन्द सो लखाई १२ जियै महारानी तेरो सुवन सलोनो । लागै न कोऊ डीठि मूठि तिय टोनो ॥ जाको नामरूप गुणअगम अपारयशसोई शिवमानस मरालसरसोनो । तोसों बड़भागी अनुरागी वैसोहाग काको काके गोद खेलै ब्रह्म भयोहै न होनो ॥ ज्ञानाअलि बारेहिते लगन लगीहै मेरी जाहिर जरूर याके पदपरसोनो १३ आईहौं सुनि सुख सोहिलो । देखोगी मुखचन्द लाल को बहुत दिनन मगजोहिलो ॥ ल्याई हौं शिशु खेल खिलौना छबिछौना मनमोहिलो । शुक सारिका मोर मुनिआं बर हंस कबूतर कोइलो ॥ खास लखेरिनिराजमहलकी बचन सुधारस बोहिलो । ज्ञानाअलि कौशल्यासुत यश सुमति सूतबर पोहिलो १४ ॥ बधाई ॥ गावोरी हिलिमिलि नागरिया । रामलाल को जन्म सोहिलो रहसि रहसि गुण आगरिया ॥ लेउ बधाई जो मनभाई महरानीसँग झागरिया । भूषण

बसन बाजिगज बाहन दशस्यन्दन शिर पागरिया॥ झुण्ड झुण्ड गायक गुण रमनी गजगमनी छबिसागरिया। ज्ञानाअलि गर्बीली नागरि मन्दमन्द गति बागरिया १५॥ ग़ज़ल॥ गानेलगीं सखि सोहिलो रस रँगभरी बानी। निशिदिन छकीं शिशुकेलि में जीवन सुफल मानी॥ नाचैं नटी छबिगुणजटी चितचटपटी जानी। निवछावरैं देनेलगीं मणिमाल बरसानी॥ जीवैं सुवन चारौ सदा श्रीअवधपतिरानी। जौलौं भरा जल गङ्गमें सरयूसरित पानी॥ याचक अयाचक करि दिये धन राज नृपदानी। ज्ञाना अली जय ज़य भनै नवनेह सरसानी १६ चारौ चतुर चितचोर हैं नृपराजदुलारे। दुइश्याम दुइगोरे मनोहर जक्त उजियारे॥ सुखमा छई मुखचन्द्रपर अँग अङ्ग सुकुमारे। किलकनि नटनिहँसि हेरिहेरैं चित्त हमारे॥ गोदैलिये मोदैं सबै जननी दृगनतारे। जाती है बलिबलि लाल पर तन मन बचन वारे॥ पीरीझँगूली अङ्गमें, शिर ताजसँवारे। अञ्जन अँजीले नयनबर, ज्ञानाअली प्यारे १७॥ ठुमरी लावनी॥ जनमदिन सुदिन आजु माई। अवधपुर मङ्गलध्वनि छाई॥ चैततिथि नौमीसित जानी। योग ग्रहमङ्गल सुखखानी॥ भये शिशु त्रिभुवन सुखदानी। सफल जग जीवन नृपरानी॥ दोहा॥ शुचिसुगन्ध सुरसुमन बहु, बरषहिं उमगनथोर। बिप्र वेद बिरदावली, बन्दीजन चहुँओर॥ यही सुख जीवन धन पाई॥ भरीसुख संपतिरजधानी। सदा गुण गावहिं मुनिज्ञानी॥ सोहागिनि सुन्दरि बरबानी।

सोहिलो गावत हरषानी ॥ दोहा ॥ रतनाकर श्रीअवध-
वर, प्रकटि रतनसुत चारि । ज्ञानाअलि गाहक भये,
नृपरानी धनधारि ॥ माधुरी परखनि मनभाई १८ ॥
खेमटा ॥ नृपसदन सोहावन आजु बधाई बाजिरही ।
रामजन्म सुखसिन्धु सुधासरि उमँगि मनहुँ चहुँओर
बही ॥ मङ्गल साज समाज नगरनभ जगजीवन फल
प्रगटलही । कनकथार सजि सजिकर कञ्जनदल रो-
चन फल फूल दही ॥ केकयसुवन सुमित्रानन्दन चा-
रिउ शिशुजस प्रगट मही । दलि तृण प्राण निछावरि
करिकरि निरखि सुवन छबि मौनगही ॥ नित नइकेलि
करत मातनहित चहुँयुग तिहुँपुरबातसही । ज्ञानाअलि
यह मधुरसुधारस पियत सुखद नहिं जात कही १९ ॥
ठुमरी ॥ आजुतौ बधाई नृप सदन सोहाई माई ।
पायोहै सुकृतफल रानिजु सुवन जाई ॥ नगर निशान
नभ दुन्दुभी बजनलगी । बरषैं सुमन सुर हरषि सुयश
गाई ॥ नाचैं पुर नरनारी निरखि सुमनचारी । लैलै बलि-
हारी मन मुदित उमँग छाई ॥ ज्ञानाअलि बानीमन
करम अगमजानी । तदपि बखानी जैसी मति हुल-
सानी माई २० ॥ रागगौरी ॥ जनमदिन आजु बधाई
बाजै । सुत सपूत जायो महरानी त्रिभुवन के सुख
काजै ॥ अवध नगर नरनारि मगन मन घर घर म-
ङ्गल साजै । चौक चारु चांदनी कलश ध्वज चँवर
द्वार प्रति राजै ॥ सातहु द्वीप लोकतिहुँ चहुँदिशि राम
जन्म सुखछाजै । ज्ञानाअलि नभ धूपधूम लखि मन
मयूर ज्यों गाजै २१ ॥ दादरा ॥ धन्य नृपरानी महासुख

दानी। निगमागम जेहि अगम बखानत ताहि प्रगट किये आनी॥ करि जप योग याग नानाबिधि जेहि खोजत मुनिज्ञानी। कौशल्या तेहिगोद खेलावत मुख चूमत महरानी॥ चौथेपन बिधि भयो दाहिनो यह सबके मनमानी। ज्ञाना अलि मुख निरखि लाल को बिनहीं मोलबिकानी २२ दश स्यन्दन नृपद्वार बधाई बाजिरही है। घर घर नगर निशान गानध्वनि प्रगट भये सुतचार॥ राम भरत अरु लषण शत्रुहन नाम ललित श्रुतिसार। दुइ श्यामल दुइगौर मनोहर त्रिभुवन तिहुँ गुणपार॥ चौकै चारुकलश पताकध्वज रचना बिबिध प्रकार। ज्ञानाअलिको सफल मनोरथ गावत चरित अपार २३ रसिकशिरोमणि प्यारे चितवो मेरि ओर मोरे रामाहो। कौनसि चूक हमारी बिनवों कर जोर॥ बिनुदेखे श्यामलि मूरति व्याकुल जियमोर। ज्ञानाअलि बिलँब न कीजै बाकी बयथोर मोरे रामा हो २४ बारे के श्याम सनेहिया सुनिये नृपलाल मोरे रामाहो। सूरति प्यासी अँखिया अति बिरह बिहाल॥ मिठि मिठि बतियां प्यारी चितवनि छबिजाल। ज्ञाना अलि बिहँसनि तेरी निशिदिन हियशाल मोरे रामा हो २५ चतुर चूड़ामणि प्यारो नृपराज दुलारो मोरे रामाहो। बोलै मधुर रसबतियां यौवन मतवारो॥ चितवनिशर बिषसानी जानीहो गुमानि। ज्ञानाअलि

उजियारो कारो नृपबारो । ज्ञानाअलि पियछबि प्यासी सियचरण उपासी मोरे रामा हो २७ मिथिला शहरकी गलियां बांकी बरजोर मोरे रामा हो । भूलेजहँ चतुर चूड़ामणि त्रिभुवन चितचोर ॥ सोहै सुमनकर दोना मोहै मन मोर । ज्ञानाअलि सियछबि प्यासो ढूंढै चहुँ ओर मोरे रामाहो २८ (इति श्रीरामजन्म बधाई पद समाप्त) अथ जानकी जन्म बधाई प्रारम्भ ॥ धुरपद ॥ सुनौरी बधाई नभनगर सोहाई भई सुभग सलोनि बेटि रानिजूने जाई है । सुभग सोहाग जाकि सुखमा अपार छाई नेतिनेति निगम अगम करि गाई है ॥ सोई मिथिलेशजूके भवन प्रगट भई कियो है सफल जाकि जैसी रुचि पाई है । कबहूं उछंग मातु पलना झुलावै गावै ज्ञानाअलि देवनबधूटी सुखदाई है २९ ॥ तिल्लाना ॥ तितनइनइ आनंद बधाई । बड़भाग नृप भवन भले दिन सुताभई सुखदाई ॥ निमिकुल सुधासमुद्र रमासी प्रगट भई सुखमा गुणरासी । असुरन मारि सुरनकी जीवन बिश्वबिशद यशछाई ॥ जीवन जरी जगतकी स्वामिनि अङ्गअङ्ग छबिद्युति बहुदामिनि । उमारमारति देखिललीछबि तनमन धन बलिजाई ॥ सुन्दरि सब गुणखानि सलोनी ऐसी कहूं भई नहिं होनी । नवषट चारि अठारह चौदह ज्ञानाअलि यशगाई ३० मङ्गल तिथि नौमी आजरी । लियोजन्म जानकी जनक गृह

बन्दनवार द्वारसजिकै। हरदि दूब दधि कनक थार भरि साजिसजि साज समाजरी ॥ चलीं उमँगि उरसोहिलो गावैं निरखि सियाछबि नयन जुड़ावैं । ज्ञानाअलि नभनगर सोहावन जन्म बधाई बाजरी ३१ जनक नृप रानिसयानी सिय जननी जग जानी । श्रीनिमिबंश चन्द्चाँदनि सी सुधा सुयश बरसानी ॥ नामसुनैना सुभग सोहागिनि बड़भागिनि दरशानी । जाईसुता सलोनी सुन्दरिरूप गुणनकी खानी ॥ जाके चरण रेणुको तरसत उमा रमा ब्रह्मानी । सोइ मिथिलापुर गलिन अलिन सँग खेलि रही मनमानी ॥ नितनवबाल कलोल लोलचित सुखमासरि सरसानी । बढ़ीं अवध नृप राज सुवनहित ज्यों शशिकला सोहानी ॥ शिशुबिनोद सिय जन्म सोहिलो गावत हृदय जुड़ानी । ज्ञाना अलि मति सालि फूलि फरि पाय सुयश बरसानी ३२॥

लावनी ॥ सुनयना सुता सुभग जाई । तब ते दिन दिन उदै जनकपुर नितनव सुख छाई ॥ नगर नभ कौतूहल भारी । गान निशान बेदधुनि सुनि सुर सबके मनभाई ॥ बधाई देनचलीं नारी। साजिकै कनक कलश शिरधरि मृगनैनी मङ्गल दरशाई ॥ मोदभरि मातुगोद सोहै । ज्ञाना अलि नितरहो सोहागिनि सुन्दरबर पाई ३३ ॥ लावनी ॥ भले दिन जन्मलियो प्यारी । श्री मिथिलेश सुकृतफल प्रगटी अनुपम छबिधारी ॥ सुनि

हारी ॥ सोहिलो उमँगि उमँगि गावैं । ज्ञानाअलि निवछावरि सियपर आरतिकरि नारी ३४॥ बधाई ॥ घर घर मङ्गलचार जनकपुर नृप गृह बजत बधाई । जाई सुता सुनैना रानी उपमा बरणि न जाई ॥ माधवमास शुक्ल नौमी तिथि योग लगन सुखदाई । नर अरु नारि प्रशंसत जहँ तहँ पुर प्रमोद अधिकाई ॥ गृह गृहते बनिता बहु बनि ठनि मङ्गल बिपुल बनाई । दलरोचन फलफूल दूबदधि सोहिलो गावत आई ॥ जासुख को अनुमान करत शिव ब्रह्मादिक तरसाई । सोई सुख सुलभ रायरानी कहँ निमिकुल सुयश सोहाई ॥ सुनि सानन्द उठे नृपसादर निज सौभाग्य बड़ाई । तुरंग धेनु गज बसन महामणि बहुसम्पदा लुटाई ॥ नित नव उमँग अनन्द नगरनभ बिप्रबेद यश गाई । चर अरु अचर प्रसन्न सन्तजन मनबाञ्छित फल पाई ॥ काह कहौं केहिभांति सराहौं सियस्वामिनि गुणताई । ज्ञानाअलि निजभाग उदैलखि तनमन धन निवछाई ३५ ॥ ठुमरी ॥ लली मिथिलेशकी लोनी ऐसी न भई होनी । प्रकट भई मिथिला कमलासी सुन्दरि छबि क्षोनी ॥ सुकृतसिन्धुयशबिशद सुधासरि बसुधा सरसोनी । चली उमँगि चहुँओर भरी सुख कबिजन मनगोनी ॥ सेवन योग सुनैना जू को दीन्हों जगयोनी ।

योग अति सुन्दर मधुऋतु सरस सोहायो ॥ बन्दनवार कलश पताक ध्वज चौकें चारु पुरायो । मिथिलापुर नरनारि उमँग उर तन मन धन निवछायो ॥ मङ्गल गान निशान नगर नभ अधिक अधिक अधिकायो । ज्ञानाअलि निजभाग सराहत जनकलली अपनायो ३७ बधैया बाजै जनक नृपद्वार । रानि सुनैना बेटी जाई सकल सुकृत को सार ॥ मास पक्ष तिथि योग लगन ग्रह सबप्रसन्न दिशिचार । ब्योम बिमान बिपुल नभ छाये बरषत सुमन अपार ॥ ब्राह्मण बेद बन्दि बिरदावलि बरणत यश बिस्तार । ज्ञानाअलि सिय जन्म सोहिलो गावत तनमन वार ३८ सखीरी आजु भई मनभाई । सब गुणखानि सलोनी सुन्दरि बेटि सुनैना जाई ॥ बहुत दिनन नृप शिवधनु पूज्यो सो फल प्रगट देखाई । पुर प्रमोद केहिभांति सराहौं रानी कोखि जुड़ाई ॥ सुनि सखि बचन साजिसब मङ्गलमणिगण बिपुल लुटाई । गजगामिनि दामिनिसी दमकत उरप्रमोद अनमाई ॥ जाको निगम नेति कहि गावत शंकर हृदय चोराई । ज्ञानाअलि तेहि प्रगट देखियत निमिकुल सुयश बढ़ाई ३९ ॥ गज़ल ॥ जाहिजगत बाजैभली सियजन्म बधाई । मिथिला शहरमें धूम है नितनव उमँग छाई ॥ सुनिसुनि अवाजें औरतें ज्योंकी त्योंहीं धाई । हिलिमिलि सबै सुकुमारियां सजिसोहिलो गाई ॥ जीवन जरीया जक्कको बेटी भली जाई । युग युग जिये रानी सुनैना सुकृत फल पाई ॥ गावैं गुणी गायक भले सबहीके मनभाई । ज्ञानअलि नाचै

सलोनी सुमन बरसाई ४० जीवै तेरी बेटी सलोनी छबिगुणन भरी। आईहौ सुनि सुख सोहिलो जीवन जगतजरी॥ सारी कहो तेरे दिगक्यों खूब शुभघरी। मुख देखि हौं सिय लाड़िलीको कर्नजर्खरी॥ पालीहौं तेरे नेहकी गातीहौं गुणगरी। ज्ञानाअली रहिहौं सदा द्वारे परी अरी ४१॥ रागकाफी॥ सोहागिनि रानि सुनैना बड़भागिनि माई। जाईसुता सुलक्षणि सुन्दरिसकल गुणन सरसाई॥ उपमा रहित सरस सुखमा छबि कबि कोबिद गाई। नेति नेति नितनिगम अगम कहि अस बेटी पाई॥ कबहुं उछंग पलँग पलनापर खेलत खेल सोहाई। कबहुं बिलोकि बिलोल खेलौना किलकत सुख बरसाई॥ नभपुर गान निशान सोहावन सुनि श्रवणन मनभाई। ज्ञानाअलि मुख चूमत माता पुनि पुनि हृदय लगाई ४२॥ रागश्री॥ सुनैना रानी तोसि तुहीं बड़भागी। निशिदिन सियछबि पागी॥ जाहि शम्भु सनकादिक ध्यावत कोह मोह ममता मदत्यागी। सो तवसुता भई सुखदायक गोद खेलावन लागी॥ उमा रमा बाणी ब्रह्माणी जासु चरण रज रसअनुरागी। ज्ञानाअलि ताकी लघुचेरी जाको यश जगजागी ४३ सियछबि प्यारी लागै अतिहि सलोनी। करपल्लव पद गहि मुखमेलति पालन सुख सरसोनी॥ शुक सारिका मोर मुनियांगण बोलत सुनि किलकोनी। उचकि उचकि रहिजात न पावति तब थकि मृदुस्वररोनी॥ मातु उछँग गोय फणिमणि ज्यों बालकेलि दरशोनी। कबहुं निरखि शशिबरण अजिरबर चरण घुटुरुवन

गोनी ॥ कबहुं मातुपय प्याय लाय उर गायगाय गुणं लोनी । मुखशशि किरणि सुधाछबि पूरित पियत दृगनभरि दोनी ॥ शुक्लपक्ष शशिकला बढ़त ज्यों त्यों नितनव छबि होनी । ज्ञानाअलि यह शिशुबिनोद उर बसत कहे मतिकोनी ४४ जानकी जग जीवन फल दीनो । जनकराज महराज पितागृह बालकेलि बहु कीनो ॥ घरघर अमित प्रगट सिय सहचरि और बहिनि सँग तीनो । श्रुतिकीरति उर्मिला माण्डवी नित नव केलि नवीनो ॥ पय पयोधि मिथिला कमला सी प्रगटि कुवँरि छबिपीनो । श्रीनिमिबंश उजागरि चारौ कोटिनरति छबिछीनो ॥ गिरिजा चरण पूजि सिय पियहित नारद कह्यो प्रबीनो । ज्ञानाअलि नद्ध लगन मगन मन पितुप्रण धनु आधीनो ४५ युगयुग जियै तेरी बेटि सुनैना रानी । बड़भागिनि तेरे घर प्रगटी सकल गुणन खानी ॥ अचल सोहाग भाग यशभाजन भाविक जन जानी । जेहि सेवत तजि लोक लाज गृह करम बचन बानी ॥ श्रीमिथिलापुर नारि निहोरत बचन सुधासानी । ज्ञानाअलि सिय जन्म सोहिलो त्रिभुवन सुख दानी ॥ ४६ ॥

इति श्रीसियबरकेलिपदावलीग्रन्थश्रीपद्मसदनिअनुचरिज्ञानाअलिकृतारघुनन्दनजनकललीबालकेलिपदावलीबधाईबर्णनन्नामप्रथमऋतुबसन्त ॥ १ ॥

अथ ग्रीष्मऋतु पद ॥

रागमलार ध्रुपद ॥ ये सखी ग्रीषम बिषम तपनलागे कैसेकै आवैंगे पिय परदेशी मोरा । अँशुवन भीजै तन

चोली चूनरी पवन चलत मानों बिषघोरा ॥ दुसह दाहतन तपनि नशावन मनभावन चितचोरा। प्रीति लगाय अवध पिय रमिरहे लगन जगी है जिय बर-जोरा ॥ मिलन आश पावस मिथिलापुर सुनि घन-ध्वनि चहुं ओरा। ज्ञानाअलि पिय बिरहबावरी सहै नित मदन मरोरा ४७ ॥ पूरबी ॥ लगन लागि मोरी तोरी बारे के सनेहिया श्याम। लाजगई गृहकाज न भावे सुधि बुधि भइ भोरी ॥ दोहा ॥ सोइ जानै जाके लगी, बिना लगे क्या होय। लगन बिना पिय नहिं मिलै, कोटि करै जो कोय ॥ लगन हमारे श्याम सों, जाको लागी होय। ज्ञानाअलि सोई सगो, और नहीं जग कोय ॥ को जानै पिय पीर तुम्हैं बिनु नव योवन जोरी ॥ दोहा ॥ लगन करौ तौ लागिरहौ, तन मन आठौ याम। लगन में तेरो क्या लगै, केवल सुमिरण नाम ॥ लगन बिना लाखों यतन, करि पचि मरै अयान। लगन लगी जाके हिये, सो अति चतुर सयान ॥ आशिक भई पिया अपने पर यामें क्या चोरी ॥ दोहा ॥ पीर लखै पीतम सोई, सदा जियै सो जीव। लगन सोई लागी रहै, ज्यों चातक जल पीव ॥ प्रीति परीक्षा जानिये, पिय बिनु कछु न सोहाय। पीर सहै पिय पिय कहै, परी परी पछिताय ॥ ज्ञाना-अलि छबि फन्द परीहो कसी प्रेम डोरी ४८ सँव-लिया ने ना जानौं क्या कीन। सुधि बुधि सब हरि लीन ॥ नेकु चितै चित चोरि मोरिमुख जनु जादू करि दीन। छल करि बिवश कीन मनभावन चतुराई में

पीन ॥ दोहा ॥ लगन बिना मन नहिंलगै, जप तप कछु न सोहाय। लगन बिना दृढ़ प्रीति नहिं, ज्ञानाअलि पछिताय ॥ विवश भई छबि सरस पिया लखि जाहिर गुणखान प्रवीन ॥ दोहा ॥ रसिक शिरोमणि सांवरो, मेरो जीवन प्रान। चेरी ह्वै नेरीरहौं, यह मेरे मनमान ॥ ज्ञानाअलि अवधेश ललन छबि लखि को न होय अ-धीन ४९ ॥ रागसोरठ ॥ सँवलियाहो लगन लगी दिन रैन ॥ जब लागी तब काहु न जानी अब लागी दुख दैन। भौंह कमान नयन रतनारे मनहुँ मदनशर पैन ॥ फिरत बिहाल हाल कासों कहौं बिनु देखे नहिं चैन। ज्ञानाअलि दिशि नेकु चितौ हँसि करि कटाक्ष मृदु सैन ५० सियाबरहो कैसि लगाई प्रीति। प्रीति लगाय निठुरह्वै बैठे किन सिखई यह रीति ॥ कासों कहौं सुनै को मेरी यह तेरी अनरीति। ज्ञानाअलि ऐसी नहिं चहिये ज्यों बारूकी भीति ५१ प्रीति कि रीति नि-यारी करु यारी। प्रीति सराहन योग मीन को बिनु जल मरण बिचारी ॥ ज्यों चातक स्वाती जल चाहत पियत न सुरसरि बारी। ज्ञानाअलि सियबर मनभा-वत जग सब लगत उजारी ५२ कहौ सजनी श्याम-सुन्दर की बातैं। जासों कटैं दिन रातैं ॥ जबते गये कुवँर मिथिलाते बिरह जरावत गातैं। कहँ वह हँसनि बिलोकनि तिरछनि बोलनि चलनि सोहातैं ॥ चरबण पान पीक झुकिडारनि मन्दमन्द मुसुकातैं। घरिपल छिन छिन कल्पसरिस दिन यामिनि मोहिं बिहातैं ॥ ज्ञानाअलि कब सोदिन ऐहै सुनिहौं अवधते आतैं ५३

दृगनभरि श्यामसुरति बिनुदेखे । होत न चित में चैन सखीरी बीतत पलक कलपके लेखे ॥ जब आवत भुज अंसधरनि सुधि होत हियेबिच बिरह बिशेखे । कर-कत हिये हहरिहारी हौं प्राणरहो अवशेखे ॥ सुन्दर मधुर माधुरी मूरति मधुर मनोहर बेखे । ज्ञानाअलि दिल्दार याराबिनु दुखी सुखी छबिपेखे ५४ हमारी सुधि लीजै राजिवनैन । दृगभरि हेरि फेरि अंसन भुज लावो हिये सुखदैन ॥ ललकत मन छिन छिन मिलिबे को बिनुदेखे नहिं चैन । आरतहरण बेद यश गावत क्यों न सुनौ ममबैन ॥ रूपसुधा छबिदृगन पिआवो करिकटाछ मृदुसैन । ज्ञानाअलि पियबिरह बावरी नहिं सोहात दिनरैन ५५ ॥ ठुमरी ॥ अवधनृप ललन बिना रतिया । नहिं भावै बतिया जरै नित छतिया ॥ पीतम रसिया वे दिलबिच बसियाहो । हाथ नहिं आवै सदा तरसावै लखै को घतिया ॥ ज्ञानाअलि गलियन आवै । नइनइ तानै गावै दृगन दरशावै करै रस-बतिया ५६ दरसरसप्यास पिया तेरी । रसिक रसखानि सकल सुखदानि अरजमेरी ॥ दिलका मेहर वे जाहिर जग उजियारा । अवधनृप प्यारा प्रेमबश हारा बिहँसि हेरी ॥ ज्ञानाअलि माधुरि तेरी सुख सुखमाकी ढेरी । जानि सिय चेरी कअकर फेरी राखुनेरी ५७ गर्बीला दिल्दार यार जादू सा किया कियावे ॥ मृदुहँसि हेरनि में भौंहैं मरोरनि में बोलनि चलनि चोरि चितवत बरबस मनलिया लियावे ॥ साँवलि मूरतवे क्या खुब-सूरतवे । ज्ञानाअलि साजन्मेरा निशिदिन सुखदिया

दियावे ५८ है प्यारा दिल्दार सही दिलमें बसिरहा रहावे॥ जो दिलभावे करता काहूसों नेक न डरता। है महरम महबूब सजनपायामन चहा चहावे॥ रूपमदन पदमाती प्रीतम मनभाती। ज्ञानाअलि जिसने जाना तिरुकाकर गहा गहावे ५९ ॥ ख्याल ॥ जानिहो गुमानि मैंने तेरि मुसुकानी। भौंहैं चाप संधानि नयन शर मारत तकि तकितानी॥ करकत हिय बिच घाव न सूझै कासों कहौं मैं बखानी। ज्ञानाअलि दिल्दार यार की घातैं सब मनमानी ६० मेरा वो रँगीला साजन् बाँके चीरे वाला॥ बाँकी है कलंगि तापै मोतियों दिमाला। बाँकी भौंहैं जुल्फैं जाकी वाकी छबिजाला॥ बाँके नयन बिलोकनि बांकी चितवत करत निहाला। ज्ञानाअलि वाके पियकारण निशि दिन फिरत बिहाला ६१ ॥ रागभैरवी ॥ सांवलिया तेरी आंखड़ियों में जादूसा भरा। जुल्फैं कारी नागिनियोंने प्राणको हरा॥ भौंहैं चढ़ी कमानसी मेरी नजरपरा। मालुम नहीं अब क्या करै जुलमी असलखरा॥ ज्ञानाअली मुसुकायके प्यारेने करधरा। सारीदरद पलमें गई मन मौज में परा ६२ सुनुरी सहेली श्यामने नयनों में घर किया॥ बैठा बदन छपायकै प्यारी को संगलिया। क्या खूब है जोरीयुगल युगयुग सियापिया। जीतारहै संसारमें जाहिर मेरेहिया॥ ज्ञानाअली महबूबको तन मनबचन दिया। सारी गरूरी छोड़िके रटिहौं सिया पिया ६३ सुनिय रसिक पियप्यारे मैंतौ तेरे दावन लगी। नयनमदन मदमाते जुल्फैं जुलुमकटारि भौंहैं

चढ़ि हैं कमान चितवनि सरस पगी ॥ रूपसुधारस प्यासी निशिदिन रहत उपासी बिहँसनि फन्दपरी बिरह दवारिदगी। नेह महानद पाई प्रेम सलिल अवगाही तामें रहतपरी ज्ञानाअलि भागजगी ६४ ॥

ग़ज़ल ॥ जक्कमें जीवे सोई जिस्को लगन सियराम की। और सब जीते मरे जिस्को फ़िकर धनधामकी ॥ जिस्तरह जिसने लखा सूरत सलोने श्यामकी। तिस्तरह तिस्को तकें लायक न लायककामकी ॥ छोड़िकै सारीगरूरी मानमन बिश्रामकी। करिकै मजलिस देख ले क्या मौज आठौ यामकी ॥ है असल आशिक सोई जिस्को लगी रट नामकी। इश्कतो हासिल नहीं निशिदिन् गुलामी चामकी॥ क्या वफ़ा तिस्कोमिले ऐसे निमकहारामकी। ज्ञानाअली देखो युगलछबि ज्यों घटाद्युति दामकी ६५ श्रीजानकी जीवन्बिना जीना न काम है। षट रस प्रकार चार का खाना हराम है॥ दश आठ औ नव चारषट बकना तमाम है। तन धाम धन धरणी जगत यमलोक धाम है॥ करिकै क़रार क्या किया मन में न श्याम है। आखिर गुलाम चाम का बिधि कर्म बाम है ॥ जीवन यतन इस जीवको श्रीरामनाम है। ज्ञानाअली क्षण पल सदा जय आठयाम है ६६ आखिर हमैं पिय श्याम सों मिलना ज़रूर है। पैरोंबिना ज्यों पंगु को चढ़ना खजूर है ॥ मन तौ मिला महबूबको यातन सों दूर है। सो तनकभी मिलिजायगा सोभी सबूरहै॥ माशूक मन मानै नहीं आशिक हुज़ूरहै। निशि दिन

मुझे सियलाल को भारी गरूर है॥ ज्ञानाअली जि-
स्हाल में राखौ मंजूरहै। मानौ न मानौ क्याकरै तन
मनतौ चूरहै ६७ हाजिमैं हुजतछोंड़के करु चाह ह-
मारी। मैंभी तुम्हें चाहौं सदा यह हुस्न है भारी॥ गा-
रक हौं तेरे नामपर तन मन बचनवारी। राखो चतुर
चूड़ामणी सब तौरसँभारी॥ गाहक हौं तेरे रूप की
बिन दाम मनहारी। थोरे में थोरी रहिगई मरनेकि तै-
यारी॥ अबतौ सुनौ नृप लाड़िले क्यों जान बिसारी।
ज्ञानाअली कहि कहि थकी मनकी ब्यथा सारी ६८
श्रीजानकी जीवनसों मेरा नेह लगाहै। जैसे चकोरी
चन्दसों जल मीनपगाहै॥ जप योग याग यज्ञको मन
देखि भगा है। लखिमाधुरी सियलाल की तनमन में
जगाहै॥ इस जक्कके दरम्यान में कोई न सगाहै। सोहै
मेरे महबूब सों तनमन सों तगाहै॥ बचिकै चलौ पिय
श्याम सों चितवन्में दगा है। ज्ञानाअली घायलपरी
प्यारेने ठगा है ६९ चितवन् मेरे दिल्दार कि दिल्बीच
गड़ीहै। किस्से कहौं इस हालको तनपीर बड़ी है॥
बलि बलि गई मुसुकानि पर छबि देखि खड़ी है। जैसे
चकोरी चन्दसों तनमनसों अड़ी है॥ शिरताज की
कल्गीं झुकी मोतियोंदिलड़ी है। कुण्डल चमक झू-
मक झूमक शिर पेंच पड़ी है॥ सुखमाछबीले छैलकी
नयनों में जड़ी है। ज्ञानाअली प्यारा मिला क्या खूब
घड़ी है ७० ललन तेरि समुझिपरी बतिया। रूप-
ठगोरी डारि भोराई यह कीन्हीं घतिया॥ मैं तेरी छबि
छकिहौं छबीले कल नहिं दिन रतिया। अब यह नेह

निबाहो चहिये दूजी नहिं गतिया ॥ सियनाते नातो
पिय तुमसों धन बल कुल जतिया । ज्ञानाअलि दिशि
नेकु चितौ हँसि बांचु बिनयपतिया ७१ आशिक होना
ज़रूर समुझु सजनी । जो दिलदार यार नहिं बोलै तौ
भी रहना हजूर ॥ सियबर सुयश सुधा बसुधातल
और यतन सबधूर । सो तजि योग यज्ञ ब्रत साधन
पियत बिषय बिषकूर ॥ रसिक सोई रसना निशिबासर
नाम सुधारस पूर । पियमुख चन्दचकोर दृगनकरि
पियै छबि रसनहिं दूर ॥ तन धन जाय जानदे प्यारी
लगी लगन मति तूर । जख़मी होय जख़म क्या देखै
है जाना चकचूर ॥ बिरहिनि होय बिरहशर तीषो सहै
कहै नहिं शूर । ज्ञानाअलि सोइ पियकि सोहागिनि जो
जिय धरै सबूर ७२ ॥ ठुमरी ॥ जिवनधन प्राणपिया
प्यारी । सकल सुखदानि रूपरस खानि गुणनभारी ॥
सुभगसलोनी वे ऐसिकहुं भइहै न होनी । मौन लखि
बानी रमा सकुचानी उमाहारी ॥ ज्ञानाअलि स्वामिनि
चेरी जबते भई मति मेरी । भई पिय योग मिटी हिय
शोग लगन जारी ७३ ॥ खसखानापद ॥ ठुमरी ॥ क्याखाँसे
खसखाने बँगले पियतेरे लिये किया कियावे । फूली
चमन चहुंदिशि तिनपै भौंरा दखल दियावे ॥ हौद
हज़ारों भरे गुलाबी शीतल नीर पिया पियावे । सारी
तपन हरौंगी तनकी शीतल करौं हिया हियावे ७४
सुनि बानी सुख सानी मानी पिय प्यारि संग लियावे ।
ज्ञानाअलि हिय तपन दूरकरि बिहरत सिया पियावे ७५
क्या फूली फुलवारी प्यारी लाखों यतन किया कियावे ।

हे भौंरा सुखमा रसपीजै लीजै मौज पियापियावे ॥ जाही जुही गुलाब मोंगरा सेवति सुखदाहियावे। गुल्क्यारी गुलनार गुलाबी सारी पहिरि तिया तिया वे ॥ रस लोभी रसराज मनोहर चितवत चित्त लिया वे। ज्ञानाअलि चित चमन् बिहारी सिय छबि देखि जिया जिया वे ७६ ॥ रागसोरठ ॥ खसखस के बंगले नीके छाये नव कुसुम कलीके। सरस फुहारे बरसत झरिझरि सुखद मनोहरहीके॥ केशरि अगर अङ्गअनुलेपन सुमन शिंगार सीय पीके। झीने बसन अङ्ग छबि दरसै सरसै स्वाद अमी के ॥ फूले कमल तड़ागन बागन सुमन सुगन्ध सरस जीके। ज्ञानाअलि त्रिभुवन सुखमा सुख जेहि लखि लागत फीके ७७ ॥ पावसपद॥ रागमलार ॥ धुरपद ॥ पावस पिय मिलन आश सुनि सुनि घन धुनि अकाश दरशत पिय छबि प्रकाश मन मयूर नाचेरि। दामिनि दमकत न थोर रिमि झिमि बरसत झंकोर कोकिला कलाप मधुर दादुर धुनि माचेरि ॥ झिंगुर झुम झननननन पवन चलत सुंसननननन लेत तान तुंतननननन सप्त स्वरन सांचेरि। ज्ञाना अलिचित बिलास पावस ऋतु पिय निवास आये लखि हिय हुलास बिरह जरनि बांचेरि ७८ ललना नवेलि लाल मनहुँ नवल तरु तमाल आलबाल कनक बेलि चहूं ओर छाइहै। सुन्दर मुख छबि रसाल चितवत लखि दृग निहाल अनुपम छबि हृदय शाल जीवन धन पाइहै ॥ प्यारी छबि नवल जाल प्रियतम मन फँसि मराल मुक्तागुन मञ्जुमाल निशि दिन

यश गाइहै। ज्ञानाअलि चित चकोर प्रियतम दृग दृगन जोर पीवत छबि रस न थोर क्षणक्षण सरसाइ है ७९॥ रागसोरठ॥ पावस ऋतु प्रियतम प्यारी निरखत चढ़ि कनक अटारी। घनघमण्ड दामिनि दुरि दमकनि बहु सुखसरस बयारी॥ श्याम किशोर किशोरी गोरी घन दामिनि द्युति कारी। नटनि मयूर कोकिला कुहुँकनि सरयू उमग निहारी॥ झुण्ड झुण्ड दामिनिसी दमकत पहिरि कुसुम रँग सारी। ज्ञानाअलि लखि ऋतु बिलास छबि बरसत सुख बर बारी ८०॥ राग मलार धूरिया॥ सखि उमड़ि घुमड़ि डेरवावै। कारे कारे बदरा गरजि गरजि करि प्रियतम छबि दरशावै॥ पिय पिय रटत पपीहा प्यारी दादुर मोर शोर सुनिकै झनन झनन झींगुर झनकारै त्रिविधि पवन सरसावै। अति अँधियारि कारि बिजुलि चमक न्यारि घुम घननन घहरावै॥ बरसत बारि सुखकारि मनहारि भारि घनघमण्डकरि छावै। आवन अषाढ़ सुनि पिय मन भावन को मन अनन्द सुख पावै॥ प्रेम तृण अंकुरन बिन दरशन लागे ज्ञाना अलि अति मन भावै ८१ देखो कारे कारे बदरा प्यारे। मनहुँ पिया घनश्याम मिलनको उमगि चले मतवारे॥ घूमि घूमि महि लूमि झूमि करि घननननन घहरावै। बड़े बड़े बूंदन बरसै दरसै उमड़ि चले नद नारे॥ महि हरियाइ भाइ द्रुमन सुमन शोभा सरयु पुलिन छबि छाई। घन घोर शोर सुनि मोर कुहुंकन लागे नचत महासुख भारे॥ देखि ऋतु पावस सरस

सरसानि हिय पिय प्यारी मन भावै। ज्ञानाअलि क-नकअटारि चढ़ि हेरि जब गावत स्वरन सम्हारे ८२
घुम घननननन घनगरजै। तियबिरहिनि पिय श्याम सुंदर बिनु सुनिसुनि जियरा लरजै॥ कोकिलाकि कूक हूक दामिनि दमक लूक मोर शोर सुनत न भावै। प-पिहा पियारि पिय पिय झरिलाइ सुनि बारबार तेहि बरजै। सुम सननननन चल पुरवाइ माइ रिमि झिमि बूंदन बरसै॥ पिय बिहीन दिनरैन चैन नहिं मदन बाण हिय तरजै। अवधाबिहारि सुधि आइ घन कारे लखि ललकि ललकि हिय हरजै॥ ज्ञानाअलि पपिहा पियासि सिय दासि लखि बरसत छबि जलधरजै ८३॥
मेघमलार ॥ अरज मेरि मानिले प्यारी पिय संग ऋतु सुख लीजिये। अबकी पावस सुख सरसावत मनभा-वनबश कीजिये॥ नइ नइ तानन गाय रङ्गभरि अध-राधररस पीजिये। मुख मयङ्क छबि सुधा सरोवर चष चकोर लखि लीजिये॥ श्रीप्रमोद बन लता निकुञ्जनि प्रियतम रुचि सुख दीजिये। ज्ञानाअलि मन भावन पिय संग अरस परस सुख भीजिये ८४॥ शरद ऋतु॥
पावसप्यारी पियसँग करत कलोल। घनधुनि मोर शोर श्रवणन सुनि पिय प्यारि पपिहा बोल॥ कनक अटा चढ़ि निराखि छटा छबि क्या चपला घनमोल। गौर श्यामतन तपनि नशावन पहिरि सुरङ्ग निचोल॥ भुजअंसन चितवनि हँसि बोलनि पिय प्यारी छबि लखिबे तोल। ज्ञानाअलि अनुपम चपलाघन घेरि खड़ी दामिनि अलिगोल ८५॥ राग झझौटी ॥ मोरि

तोरि भागि जागिवे पिय छबि प्यारि पागिवे । प्यारी छबि प्रियतम अनुरागी निशि दिन संग लागि वे ॥ ज्ञानाआलि तासों बड़भागी पायो बरमन मांगिवे ८६ पिय प्यारि शोभा भारिवे । देखो छबि न्यारि न्यारिवे॥ सिय मोरी गोरी बयस किशोरी संग सखी श्यामा सारिवे । प्रियतम श्याम किशोरि जोरि बनी रतिपति कोरि वे ॥ ज्ञानाआलि सुखमा न थोरि कैसे कहौं मति हारिवे ८७ देखो पियसंग प्यारी गरवा लगी । मनहुँ तमाल तरुन संग लपटी कनक लतासी प्रेम पगी ॥ ज्यों घन दामिनि चपल अचल दोउ छबि मन हारी दृगन जगी । नित नव रङ्ग रँगीले पिय सङ्ग करत रहत सुकुमारी सजन सगी ॥ ज्ञानाआलि यह युगल केलि पर तन मन वारी निरखि ठगी ८८ लागि मोरि तोरि यारी पिय भलिया । जैसी कृपा करी करुणाकर करि के फेरि न बिसारी मति छलिया ॥ ज्यों नागर नव नागरि स्वपनेहुँ तजत नहीं क्षण प्यारी संग रलिया । ज्ञानाआलि ज्यों बांह गही पिय छूटत है है हँसाई अवध गलिया ८९ ॥ अथ रथयात्रापद ॥ धुरपद ॥ देखु री सलोनो श्याम सङ्ग सुभग सीय बाम जग अभिराम राम रथचढ़ि आइहै । कोटिन तुरङ्ग नाग आस पास करि बिभाग बजत निशान नभ नई छबि छाइ है ॥ अवधपुर बीथिका बजार द्वार द्वार भीर सुमन सुगन्ध माल देवन झरि लाइहै । ज्ञानाआलि कनक अटान चढ़ि देखैं नारि भई हैं निहाल बाल जन्मलाभ पाइ है ९० ॥ रागपील ॥ मेरि सियप्यारि तापै पियबलिहारी ।

पिय बलिहारि तापै तनमन वारी ॥ दोहा ॥ विधुबदनी सिय रूप लखि, पिय चकोर दृग कीन। छबि अमृत रस पान करि, ह्वै रहे तेहि आधीन सर बस तासों हारी ॥ सुमन निकुञ्ज कुञ्ज सरयु पुलिन फूले जैसे मधु लोभी भौंरा रस अधिकारी ॥ दोहा ॥ रसिकभये सिय रूप लखि, रसिया नाम कहाय। तासों रसिकन के हिये, सिय बर रूप सुहाय यकटक रहत निहारी ॥ प्राण के हरैया दोऊ चित के चोरैया सजनी छबि दरशैया लखि शोभा न्यारी न्यारी ॥ दोहा ॥ पिय छबि में प्यारीरँगी, तासों श्यामा नाम। प्यारी छबि में पिय रँगे, तासों प्रियतम श्याम दोउ रसिकबिहारी ॥ लखि पिय प्यारि शोभा ज्ञानाअलि मनलोभा जम्यो उर प्रेम गोभा फिरै मतवारी ॥ ९१ ॥

इति श्रीसियबरकेलिपदावलीग्रन्थश्रीपद्मवदनिअनुचरिज्ञानाअलिकृताविरहव्यथा उत्कण्ठापियामिलन पावसआगमपदवर्णननामद्वितीयऋतुग्रीषम ॥ २ ॥

अथ बर्षाऋतु झूलन पद ॥

धुरपद रागमलार ॥ ये सखि सावन अति मन भावन पावन पियप्यारि झूलै छबिछावन। सहचरि हरषि निरखि यशगावै भावै सुख उपजावै शोक नशावन ॥ श्रीप्रमोद बनलता ललित छाई लखि सुनि घनधुनि जिय ललचावन। ज्ञानाअलि झुकि झूमि झुलावै गावै बरसि बूंदघन गरज सोहावन ९२ ॥ सावनी राग ॥ अवधबिहारी मोरि सुधि लीजै कीन। कैसो निठुरपन

लीन॥ इकतो मैं जारी बिरह दवांरीभारी दुजे सुकु-
मारी अँग अङ्ग। तिजे कियो भोरी अति बरजोरी पिया
निशि दिन हृदय अनङ्ग॥ समभयो बिषम बिषम सम
शरद सुखद दुखखानि। पपिहाकि बोली पिय पिय
गोली मानो क्षण क्षण मारत जानि॥ आपु न आये
पतिया पठाये नाहीं किन बिलमाये चितचोर। कैसे
समुझावों जियरा मानै नाहीं जैसे बिनु चन्द चकोर॥
अब तो बसावो जनि तरसावो नित छबि दरशावो सुख
दैन। ज्ञानाअलि सियजू की चेरी जानी बसिरहो हिये-
करि ऐन ९३ मोरि तोरि बारेकि लगनलागी। सु-
निय अवध नृपलाल॥ सियप्यारि नाते प्रीतम तोरे
लिये मिथिला शहर सुखधाम। मातु पिता तजि निशि
दिन रटत युगल यशनाम॥ अब न बिसारो जनि तर-
सावो प्यारे सरयुकिनारे छबिऐन। रसिकबिहारी बिहरौ
प्यारी संग प्रमदावन सुखदैन। श्रवण जुड़ैहैं पिय तोरि
बातैं सुनि बैन जुड़ैहैं यशगाय॥ नैन जुड़ैहैं पिय प्यारी
छबि लखि हृदय जुड़ैहैं कण्ठलगाय। युग युग जीवो
रसिक शिरोमणि सुन्दर चतुर सुजान॥ ज्ञानाअलि
और न भावै कछु तुम बिनु जगत मशान ९४ पिय
तोरि बतियां सलोनी लागैं श्रवणसुखद चितचोर।
कैसे करि पावों जियरा जुड़ावों भावों मनभावन छबि
तोर॥ उड़न न पावों पर बिनु प्रियतम बिनुपर उड़त
न जोर। इकतो अगम भवसागर ताको वार न पार॥
नाव न बेड़ा मीत खेवैया नाहीं तासों जिय डरत ह-
मार। बिरद सम्हारो जानि बिसारो जनि अब न

जरावो जिय मोर ॥ ज्ञानाअलि पपिहा पियासी नित छबि बरसावो जलजोर ६५ ॥ झूलना ॥ जनि ललचावो ललना लालन यह सावन कि बहार । झुलिहौं झ-मकि झुकि झुकि पियसँग करिहौं मैं शोर ॥ हौं शिंगार पहिरि चटक रँग चुनरी अरु सुमनन मणिहार । बनवां में बोलैं कल कोकिल तलवा में दादुर शोर ॥ उपबन मोरवा नाचन लागे गगन गरजि घनघोर । सुनि सियबानी हियहुलसानी झूलनको मन कीन ॥ चले पियप्यारी रसिकबिहारी दोऊ ज्ञानाअलि संग करि लीन ६६ धिरे धिरे झूलो रसिया रसतूलो रस रस सुखसरसाय । अति सुकुमारी प्रीतम प्यारो मोरी तुम जुलमी बरजोर ॥ अँगअँगफूली कुसुमकलीसी मानो रसलोभी चितचोर । सुभग झुलावै सहजा यशगावै यन्त्रन बजावैं बहु बाल ॥ बहु सखि ठाढ़ीं चहुँदिशि छबि भरी निरखत होत निहाल । सियकि सहेली जानैं सब रसकेली छबि अलबेली रसप्याय॥ ज्ञानाअलि बशकरि पीतम झूलन रसबरसाय ६७॥ रागखम्माच ॥ धीरे धीरे झूलो पियप्यारी सुकुमारी मोरी॥ बिजुलि चमक घनगरजतरज शोरी मधुर हुलन हिय हुलसत चित चोरी। ललना नवेली चारुशीला अति शीला अलियन्त्रन बजावैं गावैं नृत्यत सुथेई थेई ॥ सु-भगा सलोनि छबि निरखत तृण तोरी सुखमा लपेटि नृप जनकाकि बेटी भली । सब गुण जेटी बिधि स्वकर समेटी छबि ज्ञानाअलि झूलै झुकि झमकि दृगन जोरी ६८ झुकिझुकि झूकन झूलैं झूलनवाँ । सुन्दर

श्याम रामरमणी सिय पीतमप्यारी तूलनवाँ ॥ बन प्रमोद कुञ्जन द्रुमफूले सुरभी भँवर भुलाने फूलनवाँ। अलिगण गान तान मृदुछाई भूषण बसन सोहावन खूलनवाँ ॥ ज्ञानाअलि लखि चकित रही ठगि उमँगि उमँगि छबिपागी हूलनवाँ ९९ ॥ ठुमरी ॥ रसिकरस झूलिये झुलना मधुर मधुर हुलना। डरपत हिय कम्पत तन प्रियतम बयस मधुर तुलना ॥ दोहा ॥ बयस मधुर सुखमा सदन, मदनकोटि छबि अङ्ग। सुखसागर नागर नवल, नवला नवल उमङ्ग ॥ सुन्दरिश्यामा श्याममनोहर अङ्ग अङ्ग छबि खुलना ॥ दोहा ॥ रसिक राज रघुराज सुत, रस लोभी रस खान। रसगाहक रस बस करन, रसिकन जीवन प्रान ॥ ज्ञानाअलि बलिहारि तुम्हारी क्या झूले झुलना १०० ॥ रागमलार॥ झूलैं श्रीरघुबर जनकदुलारी। नवला सँग कोटिन पियप्यारी। अँगअँग सुमन शिंगार सवाँरी ॥ सुमन हिंडोल कुञ्जमनहारी। सुमन बरसि सुरसमय बिचारी॥ सावन उमग सोहावन भारी। गावहिं गौंड मलार मलारी ॥ बजहिं मृदङ्ग बीण सुखकारी। नाचहिं कटिकिङ्किणि रवकारी ॥ पग नूपुर पहिरे तनसारी। ज्ञानाअलि सब राजकुमारी १०१ ॥ खेमटा रेखता ॥ उमग रस झूलना झूलै। सियापिय संग समतूलै ॥ निकट सरयू सुमन कुञ्जैं। करत गुञ्जार अलिपुञ्जैं ॥ छवो नभ मधुर घन गरजै। चहूंदिशि दामिनी तरजै ॥ डरपि प्यारी पिया जानी। लियो भरि अङ्क सुखदानी॥ झुलावैं नागरीसारी। नवेली लाल सिय प्यारी॥ लाड़िली

लाल सुख सरसै। ज्ञानाअलि निरखि जिय तरसै १०२
सियबर झुलिहौं मैं तोरे सँग झुलना। करि प्रण प्रेम
नेम निशिबासर धरिहौं अंसन भुज मुलना॥ कनक
भवन दुख दवन गवनकरि जहँ सब ऋतु अनुकुलना।
मधुर मृदङ्ग बीणाध्वनि मृदुस्वर गान तानगति खु-
लना॥ यह सावन सब ऋतु सुख छावन फूलि रहे द्रुम
फुलना। ज्ञानाअलि पिय मुख मयङ्क रस पियत मि-
टत हिय शुलना १०३ रघुबर बांके छबीली सिय
बांकी। अलबेली बांकी सखियन सँग नीकी बनी छबि
झांकी॥ झुकि झूलनि हूलनि गति खूलनि बङ्क नयन
हँसि ताकी। भौंहैं मरोरनि छबि रस बोरनि अस बांकी
मति काकी॥ बाँके उर फूलन के गजरा निरखि छकी
मतिजाकी। ज्ञानाअलि तेइ धन्य रसिक जन जिनकी
गति मति पाकी १०४॥ घनाक्षरी ॥ सावन उमंग सुख
सुखमा न थोरि मोरि, झुलै श्रीकिशोरि मिथिलेशजू
कि नन्दनी। झुलना छबीलो तैसि ललना छबीली संग,
तैसो पिय पायो जाको वेद यश बन्दनी॥ तैसि नभ छाई
घटा दामिनि सुभामिनिसी, दमकै छबीली सब छाई
छबि चन्दनी॥ गावैं कल कोकिलासि यन्त्रन बजावैं
कोऊ, नृत्यत सुहावभाव भरी सुखकन्दनी। ज्ञाना
अलि नवला नवेली अलबेली सब, मन्द मन्द झूलैं
परि पिय छबि फन्दनी १०५॥ रागसोरठ ॥ नृप लालन
नवलकिशोरी झूकन झमकि झूमिझूलैं॥ सावन स-
रस सुमन द्रुम छहियां नव तरुलता धरे गल बहियां
अङ्ग अङ्ग छबि खूलैं। नवला नवल चहूंदिशि सोहैं

उमा रमा कोटिन रतिकोहै प्यारी समतूलैं ॥ झोंका देत डरपि गरलागी नव सनेह प्रियतम छबि पागी मिटि गइ हिय शूलैं । ज्ञानाअलि झूलन छबि बांकी रहि गइ निरखि खड़ी रस झांकी सुखमा हिय फूलैं १०६ ॥ खेमटा ॥ झूलै रसिक छबीले छैल छबिहि सिय संगरलिया । नव घन पिय तन सिय द्युति दामिनि मदन कोटि रति छबि छलिया ॥ पीतम अङ्क निशङ्क शङ्क तजि बिकसी सिय चम्पाकलिया। ज्ञानाअलि झूलन समाज लखि भूली सुधि बुधि गृह गलिया १०७॥ ठुमरी ॥ झूलनआई सजि सजिकै नवला रसरङ्ग रँगीवे। सुभगा सरस सलोनि ऐसि कहुं भईहै न होनी। साजि नव सात मन्द मुसुकात प्यारी पिय गरवा लगी वे॥ झुलै सारि ललना प्यारी प्रियतम छबि मतवारि। जीवन धनवारि नख शिख छबि सुधा पगी वे ॥ ज्ञाना अलि तेइ बड़भागी सियपिय पद अनुरागी । और हतभागी मन्द मति रागी तिन्हैं कलिकाल ठगी वे १०८॥ रागमलार ॥ सजनी सावन सरस सोहावन। झूलन आई पिय प्यारे सँग सिय प्यारी छबि छावन॥ नवतरु लता मधुर मृदुकुञ्जन मधुर मधुर ध्वनि सुनत सोहावन । नटत मयूर कोकिला गावत मनभावन चित चावन॥ नील पीतघन तड़ित बरन तन मदन कोटिरति छबि सरसावन । ज्ञानाअलि बलि बलि झूलन लखि गहि पिय कटिपट दावन १०९ रिमि झिमि बूंदन बरसत बारी। बन प्रमोद सरयू तट बिहरत रघुबर सिय सुकुमारी॥ ज्यों ज्यों भीजत

सुरँग पाग पिय त्यों त्यों सिय तन सारी। झीने बसन अङ्ग अँग भीने वह सुख सरस बयारी॥ दुरि दमकत दामिनि घन गरजत डरपि अङ्क पिय धारी। ज्ञाना-अलि पावस उमङ्गरस कियो बश करि मतवारी ११०॥ खेमटा॥ झूलै रसिक पिय प्यारी हमारी। अवध ललन मिथिलेश दुलारी॥ सिय गोरी पिय श्याम मनोहर अँग अँग भूषण बसन सवाँरी। घन चपला ह्वै अचल चपल चित पियपट पीत श्याम सियसारी॥ सुरँग पाग प्रियतम कटि किङ्किणि पग नूपुर रुनु झुनुरवकारी। हार हमेल चन्द्रिका चांदनि सिय नख ज्योति जगत उजियारी॥ श्रम जल बिन्दु इन्दु मुख शोभित मनहुँ अमीकण सुरुचि सवाँरी। ज्ञानाअलि यह युगल केलि कल धरत रसिक जन हृदय न न्यारी १११॥ लावनी॥ रसिक दोउ रहसि रहसि झूलै। सरस ऋतु पावस सुखमूलै॥ नवलतरुलता ललित दरसै। उमड़ि घन घटा अटा परसै॥ बड़ेबड़े बूंदन नित बरसै। झुलावै झूलै सुख सरसै॥ दोहा॥ अलि चपलावलि अचल ह्वै, पिय प्रियतम घन पाय। नित नवसुख बरसनलगी, झूलन गाय बजाय॥ सुनत पिय प्यारी चित फूलै॥ नवल सिय रसिक लाल झांकी। बिलोकनि अलबेली बांकी॥ नेकु जेहि ओर बिहँसि ताकी। सोई बड़भागिनि मतिपाकी॥ दोहा॥ श्रीसरयू तट निकटही, सोम श्रवन बट छांह। नाह नेह ज्ञानाअली, बढ़त धरे गलबांह॥ यही सुख प्रिय-तम अनुकूलै ११२॥ मलार॥ नव उमंग रस झूलन

में पिय प्यारी छबि खूलनमें। सावन सरस सोहावन पावन मन भावन प्रमोद बन घन घमण्ड नभ दामिनि दमकै नव सनेह रस हूलन में॥ बन प्रमोद मन मोद बढ़ावन बोलत मोर चकोर सोहावन दादुर धुनिकल कोकिलकुहुंकनि लता ललित द्रुम फूलनमें। सुखमा सरस सोहागन थोरी पिय मुख शशि सियरसिकच-कोरी बयथोरी ज्ञानाअलि बलि बलि जोरी युग समतूलनमें ११३॥ तिल्लाना॥ सिय रसिक बिहारी झूलै। सावन कुञ्ज सरित सरयूतट बनप्रमोद मुद मूलै॥ नख शिख सुमत शिंगार सजोरी अवध चन्द्र चन्द्राननि गोरी निवछावरि रति मदन करोरी तेहि सम एकन तूलै। सिय झूलै पिय झूमि झुलावै निरखि निरखि छबि बलि बलि जावै मन भावै कटि लचकनि मचमनि हरषि हरत हिय शूलै॥ नागरि बयस शिरोमणि सारी सिय प्यारी सब राज कुमारी लिये सौंज ठाढ़ी चहुंओरनि सेवा सुख अनुकूलै। मृगनयनी कलको-किलबयनी गजगमनी सब रति मद दमनी ज्ञानाअलि सब निमिकुल छवनी छिनछिन छबि लखि फूलै ११४॥ खेमटा॥ धीरे झूलौ रसिक रस बरसौ। तुम घनश्याम सिया द्युति दामिनि अरस परस तन परसौ॥ नवला नवल रूप रस प्यासी छबि अमृत दै दृग सुख सरसौ। ज्ञानाअलि गरजी अरजी सुनि भुज अंसन धरि नित नव दरसौ ११५ झूलन झूलै नवल रसरसिया॥ श्री नृप नन्दन जनकनन्दनी गौर श्याम मृदु मूरति ल-सिया। तरु तमाल जनु कनक बेलि मिलि भुजबल्ली

उरभानि मनबासिया ॥ ज्ञानाअलि अभिलाषनई नित कीजिय सियपिय चरणन दसिया ११६ ॥ मलार ॥ सिय अलबेली भूलन भूलैं। सखियां भुलावैं भावैं सावन गावैं ऋतु अनुकूलैं ॥ आये सुनि अवधेश लाड़िले लखि लाड़िलि सुखभूले। बलि बलि जात भुलावत भूलत धरि अंसन भुज मूले ॥ सुख सुखमा समरूप माधुरी गौर श्याम छबि खूले। ज्ञानाअलि सावन सुख सरसत तेहि सम और न तूले ११७ नित नव भूलन सुख बरसोनी। सरस सलोनी सिया भाग भरी दरशोनी ॥ सजि नवसातशिंगार अङ्ग अँग प्रियतम मन तरसोनी। छाय रही सरयूतट कुञ्जन सखियन संग सलोनी ॥ नेह सुधासर भूलन फूलन रस हूलन छबि लोनी। युगलचन्द छबि पीवत जीवत ज्ञानाअलि दृग दोनी ११८ रसिकबिहारी सिय सुकुमारी। धीरे भुलावो गावो प्यारीको रिझावो लै बलिहारी ॥ तुमगुण रूप उजागर नागर नागरि नेह सम्हारी। सिय मुख चन्द चकोर चोरपिय छबि अमृत अधिकारी ॥ गोय गोद भूलत रसलम्पट रसिकन हित सुखकारी। ज्ञानाअलि सहचरि यश गावत जागि सुभाग हमारी ११९ झमकि भुकि भूंकन भूलैरी। तन गौर श्याम अभिराम राम रमणी छबि खूलैरी १ सजि बसन बिभूषण सुमन माल ललना गण गावत पद रसाल मुख चन्द बिलोकत भइ निहाल दृगकुमुदिनिफूलैरी २ कमला कलकोकिल करत गान बिमला बीणागति अति प्रबीण सुभगाजुससस्वर

करि अलाप भुजअंसन मूलैरी ३ ज्ञानाअलि दम्पति रस बिलास नित कनकभवन कुञ्जन प्रकास भाविक जन जानत हिय हुलास नित यहि सुख तूलैरी ॥ ४।१२० ॥ रेखता ॥ अनोखी रसिक पियप्यारी। झुलन चली संग सुकुमारी ॥ सुरँग पिय पाग मनहारी। चन्द्रिका सीय शिर धारी ॥ छबीली लाड़िली सारी। श्याम कटि पीत पटवारी ॥ देव नर नाग नृप वारी। सबै निमिबंश उजियारी ॥ झुलावै झमकि झुकि झारी। गगनध्वनि गान रसकारी ॥ भयो रसरङ्ग अति जारी। परसपर झूलती नारी ॥ ज्ञानाअलि निरखि मन मारी। करौं क्या प्रेमगति न्यारी १२१ ॥ रागमलार ॥ अबकि सावन सुख सौगुन परसो पिय प्यारी संग झूलत दरसो। श्रीप्रमोद बनलता निकुञ्जनि कहि न सिराय माधुरी बरसो ॥ सिय दामिनि घनश्याम मनोहर नवल उमङ्ग अङ्ग भुज धरसो। नवला नवल झुलावै गावै मधुर मधुर ध्वनि सातौस्वर सो ॥ घन ध्वनि दामिनि दमकि दशौ दिशि पकरि श्याम श्यामा कर करसो। ज्ञानाअलि पावस सुखमा सुख पिय प्यारी सँग निशि दिन सरसो १२२ ॥ लावनीछन्द ॥ सरस ऋतु झूलन छबि छाई। निरखि पिय प्यारी मन भाई ॥ नवल तरु सुमन सरस फूले सोहावनि सरयू सरिकूले। भँवर रसमत्त फिरैं भूले पवन बह शीतल सुखमूले ॥ दोहा ॥ मधुर मधुर ध्वनि कोकिला, बोलत दादुर मोर। पिय पिय रटत पपीहा, प्यारी घन गरजत चहुंओर ॥ दामिनी दमकत दुरिजाई ॥ रसिक दोउ झूलन सुखदानी

सखिन रुचि जानी मन मानी। संग सिय सोहै पट-
रानी पिया की जीवन जगजानी ॥ दोहा ॥ भूलन लगे
हिंडोलना, अँग अँग उमँगन माय। ज्ञाना अलि छबि
लखि छकी, निशिदिन कछु न सोहाय ॥ भुलावैं भू-
लन पद गाई १२३ पिया संग भूलै अलबेली। अल-
बेलो पिय लखि प्यारी छबि भुज अंसन मेली ॥
कहौं क्या मौज फौज भारी। सजि नवसप्त बारहौ भू-
षण जनु फूलीबेली ॥ भुलावै भूलै भुकि भेली।
भनन भनन भींगुर भनकारैं अति कौतुक केली ॥
उमड़ि घन घुमड़ि घेरि छाये। ज्ञानाअलि सावनमन
भावन नित नव सुख रेली १२४ नवल दोउ भमकि
भूमि भूले। नवल हिंडोल कुञ्ज द्रुम फूले श्रीसरयू
कूले॥ नवल तन भूषण छबिपावै। नवल बसन नव नेह
परस्पर सखियन सुख मूले ॥ नवल नवला बहु सँग
सोहै। नख शिख रूप अनूप सोहावन स्वामिनि सम
तूले ॥ नवल घनचहूँ ओर छाये। ज्ञाना अलि रसभाव
बृष्टि लखि मिटिगइ हियशूले १२५ ॥ दादरा ॥ हिय
बिच खटकैरि सजनी निशि दिन पिय की बात। सा-
वन आवन कह्यो मन भावन सो दिन बीते जात ॥
भुलिहौं भूमि भमकि भुकि पियसंग परसि मनोहर
गात। ज्ञानाअलि अभिलाष मिलन की आइ मिले
मुसुकात १२६ पिय सँग भुलिहौं भुलनवां पहिरि
भुलनियां आज। अँग अँग भूषण चटक चुनरिया प-
हिरि तजौंगी लाज॥ निशि दिन भूलौं पिय सुख तूलौं
छोड़ि सकल गृह काज। ज्ञानाअलि सिय सफल

मनोरथ कियो पिय सहित समाज १२७ पिय प्यारी झूलै झुलनवां मधुर हुलनवां आज । सावन तीज सोहावन पावन सखियन के हित काज ॥ श्रीकमला बिमलादि सहचरी सजि नव साज समाज । नाचत गावत यन्त्र बजावत दखल दियो रसराज ॥ नव तरुलता माधुरी कुञ्जैं सबै अलौकिक साज । ज्ञाना आलिनभ घन घमण्डलखि मनमयूर ज्यों गाज १२८ रसिया ना मानैं सजनी झूलत मन न अघाय । सोवत सजनी अपने भवनवाँ औचक मोहिं जगाय ॥ बन प्रमोद कुञ्जन कुञ्जनमें नित उठि झूलत आय । ज्ञाना-आलि सियपिय सँग झुलिहौं अभय निशान बजाय १२९ ॥ ठुमरी ॥ अबकी सखि सावन साँवलिया प्यारी सँग झूलैं रँग रलिया । नवतरुतमालतन श्याम लसै प्यारी अनुपम चम्पाकलिया ॥ झूलन छबिहूलन शूल हरै हँसिहेरिहरै तनमन छलिया । पीवै छबि जीवै सब अलिया ज्ञानाअलि पायो रस भलिया १३० इन रसिक पिया की बानिपरी झूलै दिनरैन महारँगरी । नहिं भावत भूषण प्यास कछू प्यारी भुज अंसन बाँह धरी ॥ हँसिहेरि हरै मन मौजकरै गावै मनभावै चित्तहरी । झूलन छबि हूलन देखि खरी ज्ञानाअलि पियसँग आजुअरी १३१ नवल रसिक पिय प्यारीके सँग आजु पिया झूलन चलिये । श्रीसरयू तट नवल हिंडोला अरस परस शोभारलिये ॥ घनघमण्ड करि चहुंदिशि छाये हरितभूमि शोभाभलिये । पिय पिय रटत पपीहा प्यारी निजछबिछटामदनदलिये ॥ मानिय अरज दृगन

सुख दीजै जोवत मग तुव सब आलिये। पिय प्यारी दोउ भूलन लागे ज्ञानाअलि लखि बलि बलिये १३२ पियासँग भुलिहौं भूलनाहो। भूलन सबसुख मूलना हो॥ श्रीप्रमोद बनकुञ्ज मनोहर फूलिरहे द्रुम फूलना हो। करि सोरहो शिंगार मनोहर पहिरि सुरंग दुकूलनाहो॥ शरद् चन्दमुख निरखि सोहावन मिटिहौ हियकी शूलनाहो। ज्ञानाअलि यहि सम न आन सुख चारिउ फल तेहि तूलनाहो १३३ चलो सखि देखन चलिये सिय पिय भूला भूलै। नवल हिंडोल कुञ्ज नवला नवेली संग सखियां भुलावै लखि तनमन फूलै॥ भूलै० ॥ मानौं घनश्याम श्यामा दामिनि अनूप छबि मुद बरसावै सुखऋतु अनुकूलै॥ भूलै० ॥ जैसे रघुलाल सुख सुखमा अपार अति तैसी छबिखानि सियाइक समतूलै॥ भूलै० ॥ ज्ञानाअलि छबि प्यारी देखि मोहे नरनारी यहि फल चाहै दोऊ निशिदिन दूलै॥ भूलै० ॥ १३४ ॥ मलार ॥ प्यारे दोउ हिलि मिलि भूलैं सखी नवल हिंडोर॥ सावन सुभग सोहावन राजत घनगरजत अतिशोर। दादुर मोर पपीहा बोलत सुनि ललकत मन मोर॥ प्रियतम प्राणप्रिया तन हेरत सिय निरखत पियओर। दोउअंसन भुज धरे परस्पर रति मनमथ चितचोर॥ सीतारमण राम रमणी सिय नेहभरेछबि फूलै। ज्ञानाअलि लखि युगल छैलछबि तनमनधन सुधि भूलै १३५ ॥ लावनी ॥ प्रियतम प्यारी दोऊ मीत हिंडोरे भूलैं। सरयू तट कुञ्जनिकुञ्ज सखिनसुखमूलैं॥ रसमत्त परस्पर रूप छके

सम तूलैं। करिहाव भाव दृग फेरि हरषि हिय फूलैं॥ दोउ रसिक छैल छबिखानि हरत हियशूलैं। ज्ञानाअलि झोंकादेत परस्पर हूलैं १३६॥ गज़ल ॥ सावन सखी सुख मूल है छबि देखिये भारी। घरघर अवध में धूम झूलनकि तैयारी॥ सजिकै समाज साजलाज काजको तजिकै। गलियोंमें औरतैं फिरैं सियलालकि प्यारी॥ जिस्ने कभी देखा न सुना शौक़ यह न्यारी। ज्ञाना अली तिस्से कभी नहिं चाहति यारी १३७ क्या अजब बहारदार है झूलन कि तैयारी। तैसी बनी सिय लाड़िली नृपलालकि प्यारी॥ चञ्चलचपल चपलाचमक छाई घटाकारी। झुकि झुकि झुलावैं तान गावैं औरतैं सारी॥ निशिदिन भरी अनुराग में झूलनउमँग भारी। ज्ञानाअली छिन छिन यही हिय चाह है जारी १३८ ॥ मलार ॥ ये सलोनी सीया झूलन झमकि चली। गोरी सुभग चपल दामिनिसी रतिछबि मानदली॥ भूषण बसन मनोहर राजत सखियन सङ्गरली। पानखात मुसुकात देतसुख रघुबर मनहिं छली॥ प्रियतम सङ्ग उमङ्ग भरी अँग झूलत जनकलली। ज्ञानाअलि मधुरे स्वर गावत शोभा निरखि भली १३९॥ खेमटा ॥ तेरि अजब झुलन सुखकारि रे॥ प्रियतमसङ्ग उमङ्ग भरी अँग झूलै श्री जनकदुलारि रे। गौर श्याम अभिराम मनोहर नखशिख छबि उजियारि रे॥ भूषण बसन सोहावन अँग अँग रचिरुचिसखिन सम्हारि रे। ज्ञानाअलि की अरज यही अब राखौ निकट सुधारि रे १४० हिंडोरे झूलैं श्रीलाड़िलि लाल॥ घनदामिनि

बर बरण लसत दोउ रँग रँगीलि संग बाल। रतन जटित मणि खचित हिंडोला रबिसमक्रान्ति रसाल॥ झोंकादेत लेतनिज रुचिसुख छबिलखि होताबिहाल। ज्ञानाअलि प्रियतम पियप्यारी क्षणक्षण करत निहाल १४१॥ रागसोरठा ॥ नवल रसिक झूलैं प्यारी सङ्ग लीने। मनसों मन दृगसों दृग दीने॥ चारुशिला अलिहरषि झुलावै गावैं ताननवीने। बजत मृदङ्गताल सारंगी लेततान स्वर झीने॥ बढ़त उमङ्ग अङ्ग अँग क्षण क्षण पियप्यारी रँग भीने। ज्ञानाअलि छबि निरखति ठाढ़ी सो समाज वितकीने १४२॥ मलार॥ झूलत रसिक श्यामाश्याम। श्रीजनकनृपनन्दनी रघुनन्द आनँद धाम॥ नवलघनतन श्यामसुन्दर तड़ित द्युति सिय बाम। युगल छबिअवलोकि झुकि झुकि काम करत प्रणाम॥ चहूंदिशि घन घेरि आये चपल दमकतदाम। मधुरमृदुरव कोकिला ध्वनि सुनत मन बिश्राम॥ अतिअनूप हिंडोलना छबि सखिन को अभिराम। ज्ञानअलि सिय लाल मुख छबि निरखि पूरणकाम १४३॥ ख्याल॥ झूला तो छबीली बनो कहौं क्या बनायकै। जाकी छबि देखे बनै दृगन लगायकै॥ खम्भा डाँड़ि मरुआ बेलन अतिहि सोहायकै। कलश कँगूरा छतुरी रहि छबि छायकै॥ सुभगसिंहासन आसन देखि ललचायकै। ज्ञानाअलि बैठे पिय प्यारी रुख पायकै १४४॥ रागमलार॥ आजु दोऊ झूलनआये बनिठनि सखिन मन अति भाये॥ श्रीप्रमोदबन कुञ्ज मनोहर मेघ चहूं दिशि छाये। गरजत घन सुनि सिय

डरपत जब प्रियतम अङ्क चोराये ॥ मानहुँ कृपण परम निधि को लहि बहुबिधि यतन कराये । ज्ञानाअलि तिमि सिय उरगोई गइ मणिफणि फिर पाये १४५ ॥ ठुमरी ॥ झुलन छबि निरखि हरखि प्यारी । नवल रसरङ्ग उमङ्ग अँग अङ्ग लखोभारी ॥ छबि मतवारी वे सियसुकुमारि प्यारी । कोटि रतिवारी जगत उजियारी मदन नारी ॥ ज्ञानाअलि रसिक रसीली नित नव सुख बरसीली । दामिनि दरसीली झुलै पियसङ्ग अङ्क धारी १४६ ॥ सोरठा ॥ नवल दोउ झूलत अलिगण साथ । नवलसखी समबयस अतुलछबि लखि रतिमदन लजात ॥ नवलहिंडोल कुञ्जद्रुम फूले त्रिबिधपवन सरसात । नइ नइ तानन दोउ मिलि गावत मन्दमन्द मुसुकात ॥ नवल बसन भूषण अँग सोहै लखि छबि दृगनसमात । ज्ञानाअलि सुखबराशि न आवै शिथिल भयो सब गात १४७ ॥ ख्याल ॥ रसिक दुलारे प्यारे झूलन पधारे । श्रीदशरथसुत जनकनन्दनी सिय गोरी पियघनतन कारे ॥ रतनरचित मणिजटित हिंडोरा बिमलादिक सखि सुरुचि सुधारे । सरयूतीर कुञ्जद्रुम फूले गुञ्जत भवँर सुरभि मतवारे ॥ कोकिल मोर पपीहा बोलत घन गरजत सुख बृष्टि प्रचारे । बजत मृदङ्ग ताल सारंगी सखि गावहिं बर चरित सँभारे ॥ शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह सखितन अतन बढ़ावन हारे । ज्ञानाअलिके धन जीवन दोउ निज सहचरि लखि निकट हँकारे १४८ ॥ दोहा ॥ श्रीगुरु कथित सुचारि पद, झूलन समय जोदीन । ज्ञानाअलि सोइ

बीजलहि, तिलक पदावलि कीन ॥ पद्मबदनि पदपद्म युग, बन्दि पाय रसरीति। तबते दिन दिन बढ़ि चली, भाव भक्ति दृढ़ प्रीति ॥ चारिपद मूल मध्य ग्रन्थ में धरत हौं ॥ राग मलार ॥ झूलत सिया रघुकुल चन्द। प्रेम भरि अनुराग बाढ़्यो बदत नाना छन्द ॥ हास बीचि बिलास उमग्यो शब्द सुखमा कन्द। पद्मबदनि यह निरखि शोभा देवगण आनन्द १४९ झूलत रसिक मणि रघुलाल ॥ झुण्ड झुण्डनि चलीं भामिनि सोहगती मराल। देखि झूलत सियासियबर परी छबिके जाल ॥ देत झोंका हरषि उर सब निरखि फूलत बाल। निरखि नयनन परम शोभा पद्मबदनि निहाल १५० ॥ रागझंझौटी ॥ आजु तौ हिंडोरे झूलैं सिय रघुलालरी। सावन शुक्ल तीज अति सुखसाररी ॥ हिलिमिलि सब सखिचलीं सुख भाररी। भूषण बसन अङ्ग किये हैं शिंगाररी ॥ आइहैं हिंडोल कुञ्ज लखि सिय लालरी। निरखि बदन पद्म आनँद अपाररी १५१ ॥ कजरी ॥ देखो देखो रघुबर झूलैं जनकलली। गरज सुभग बरसत बदली ॥ लाल घनश्याम सिय दामिनिरली। बरसत सुख सखि शालिसि फली ॥ पायो फल सिय राम सेवा सुभली। कहत बदनि पद्म यह सुगली १५२ ॥ ठुमरी ॥ आजु प्रियतम सँग झूलौंगी। अबकी सखि सावन छबि छावन पिय के हिय फूलौंगी ॥ नभ घन घमण्ड दामिनि दरसै रिमि झिमि बूंदन बरसै जियरा तरसै करिहौं सोय तन रसिया रस तूलौंगी। नव साज समाज सखिन सजिकै गृह काज लाज सबही

तजिकै मन भावन दावन कर गहिकै नइ नइ गति खूलौंगी॥ सुन्दर सुख सानी सिय बतियां ज्ञानाअलि सुनि हुलसत छतियां मनमोहन जोहन योग दोऊ गोहन लागि हूलौंगी १५३॥ राग झंझौटी॥ सावनवाँ ऐलोरे झुलनवाँ झुलिहौं साजनवाँ॥ सावन ऐलोरे छबि दरशैलो सजनी रिमि झिमि बुन्द बरसैलोरे। ज्ञानाअलि मुद सरसैलो जियकी जरनि बुझैलो मनभावत सुख भैलोरे १५४॥ झुलनवाँ दीजे थोर धीरे झूलौ झुलनवाँ। सिय सुकुमारी वे जनकदुलारी प्यारी तुम रघुबंशकिशोर॥ अधरसुधा रस पीजै पिय प्यारी सुखदीजे लीजै गरवा लगाय पिय शुल नवाँ मेटैमोर। ज्ञानाअलि झूलि झुलावै बहुसखि-यन्त्र बजावै कोउसखि तान सुनावै घन ध्वनि दा-मिनि शोर॥ १५५॥

इति श्रीसियबरकेलिपदावलीग्रन्थश्रीपद्मबदनिअनुचरिज्ञानाअलि कृतभूलनबिलाससुखबर्णननामतृतियबर्षाऋतु॥ ३॥

अथ शरदऋतु पद॥

धुरपद॥ सुन्दरि सिय सखिन सङ्ग रासकेलि रस उमङ्ग अङ्गअङ्ग साजिशिंगार पीतम मग जोहैरि। आये सुनि रसिकलाल प्यारी दियो अङ्कमाल निरखि निरखि छबि निहाल अंसन भुज सोहैरि॥ गौर श्याम सुभग अङ्ग अङ्गन प्रति रतिअनङ्ग कोटि कोटि वारिवारि चितवनि मनमोहैरि। ज्ञानाअलि रसबिलास कनकभ-

न नित्य बास निरखत यह सुखसमाज तिनसम जग
कोहैरि १५६ देखो सखि सीय सङ्ग शरद निकुञ्ज
कुञ्ज नटवर बरबेष सुभग सुन्दरतन सोहैरि। नील
पीत बसन लसनि अंसन भुज मन्द हँसनि चन्द्रिका
किरीट सुभग चितवनि तिरछौहैरि॥ छुम छुम छन-
नननन तुम तुमतननननननन उघटत गतिलेत ल-
लकि ललनन मन मोहैरि। निशिदिन यह रास ध्यान
रसिकजनन जिवन प्रान ज्ञानाअलि युगल केलि
लखि लखि चितयोहैरि १५७॥ तिल्लाना॥ चतुरङ्ग के
गावै गति नागरिया। धृकटधूमकट सरिगमनि निशा
केलि कलान उजागरिया॥ हाव भाव रस सरस स-
लोनी रहसरसीली आगरिया। ज्ञानाअलि लखि प्रिय-
तम प्यारी छबि थकित भई सखि सागरिया १५८
बनिठनिके नाचै बहु रङ्गनसों॥ रहसि रहसि प्रियतम
प्यारी सँग लै रस भाव अभङ्गन सों। सप्तस्वरन सर-
साय गाय तुम तननन तान तरङ्गन सों॥ ज्ञानाअलि
बलि सियबर नटवर पर वारिय अमित अनङ्गन
सों १५९ नटवर उघटत गति नई नई। नाददानि
तुंमतदानित दारेदानि सखि चहुं दिशि उचरै थेई थेई॥
छुम छननननन स्वर पूरिरही गति उलटिपलटि सम-
काललई। सिय रीझि पिया गलबांहदई ज्ञानाअलि
निरखि निहालभई १६० नृत्यत प्रियतम प्यारी लखि
शरद रैनि उजियारी। चहुंदिशि अलि बहुयन्त्र
बजावैं मधुरमधुर स्वरताल मिलावैं पियमनभावैं लाग
डाटकरि लै मुर्छना सँभारी॥ थिरकि थिरकि थिरकरि

गति साजैं निरखि निरखि सुरतिय हिय लाजैं बिबिध भांति के बाजन बाजैं हाव भाव रसकारी जीवन धन श्रीजनकदुलारी उपमा खोजि खोजि हिय हारी। उमा रमा कोटिन रति वारी ज्ञानाअलि बलिहारी १६१ ॥ घनाक्षरी ॥ रसिक बिहारि आजु सिय सुकुमारि सङ्ग, शरद निकुञ्ज आय देखो छबि छाई है। गोरिहै किशोरि मोरि बयस मधुर थोरि, पिय घनश्याम अभिराम सुखदाई है ॥ अङ्ग अंङ्ग भूषण जड़ाऊ जामासारि प्यारि, न्यारि न्यारि शोभा लखि लोभा मनभाई है। पिय शिर क्रीट सिय चन्द्रिका बिशाल भाल, बन्दि बेंदि अलक झलक झलकाई है॥ तिलक अंजन दृग बेसरि बुलाक नासा, भौंहैं गौंहैं तकत मदन की सहाई है। कानन करणफूल कुण्डल कपोल गोल, करत कलोल रसलोल सो लुभाई है। बोलनि चलनि अनमोलहै अनोखी छबि, अधर मधुर मधुपियत छकाई है। अंस भुज धरनि सो बरनि न आवै सुख, जानत रसिक जिन यह रस पाई है ॥ किङ्किणि कलित कटि बिछिया नूपुरपग, रुनु झुन बाजें मानो बेद यश गाई है। रहस रसीली सब सिय कि सहेलि हेलि, जानैं रसकेलि कल उपमा न आई है॥ ज्ञानाअलि भाई मन तैसी करि गाई यश, सुखमा अपार जैसे तैसे मनलाई है १६२ पियमुख चन्द सिय चतुर चकोरि मोरि, छबि रसपियै दृगजियै नित जानकी । अचल सोहाग पिय निरखि सराहै भाग, अति अनुराग अङ्ग अङ्गन समान की ॥ सुखमा कि टेरि मेरे प्रानह्व

प्रानधन, जीवन न दूजी गति मेरे सुख प्रानकी। रहस-बिहारी लखि शरद उज्यारी प्यारी, कियो है तयारी नट नटनि कलानकी ॥ उघटै संगीत रस रीति को लखावै गावै, सुख बरसावै गति ताण्डव प्रमानकी। बहु यन्त्र तन्त्र तन्त्रतानन तरङ्ग रङ्ग सुखमा अभङ्ग अङ्ग कोटि शत भानकी ॥ भौंहाकिमोरनि हँसि अङ्गकि तोरनि लखि, कञ्जकर फेरनि अधर रसपानकी। शरद प्रकास रस रासको बिलास सुख, सब रस बासदास दासिका सखानकी ॥ कोऊ गुण गावै कोऊ पानन खवावै भावै, चंवर ढुरावै ज्ञानाअलि मन मानकी १६३ ॥ ठुमरी ॥ आजु रसकेलि मचावोंगी। इन पिय प्यारे को रस बस करि हियतपनि बुझावोंगी॥ करि नव सप्त शिंगार मनोहर अङ्गअङ्ग भूषण सजिकै गाय बजाय लगाय लालउर सङ्ग नचावोंगी। ततुं ततुं तुम तुम तननननन छुमछुम छुमछुम छुमछनननननन तादियन दिरना तुम तन दिरना गति दरशावोंगी ॥ सुनि सिय बानी सखिन सोहानी हिय हरषानी मन ललचानी। ज्ञानाअलि यश गाय गाय सिय पिय मन भावोंगी १६४ नटत नटवर नटि नागरिया। संग सोहै अनोखी नवल बाल गुण रूप उजागरिया॥ लखि शरद रैनि छबि छाय रही प्रियतम प्यारी गल बांह गही। मुख निरखि निरखि हिय हरखि हरखि नृत्यत सखि सागरिया ॥ मुख मयङ्क रस पान करै मुसुकान परस्पर प्रान हरै। जब उघटत संगीत गीत भई रस बस बावरिया ॥ क्षण क्षण नई नई गतिलावैं

दोउ मिलि गावैं स्वरन मिलावैं। ज्ञानाअलि गुण
गावैं मन भावैं पिय प्यारी छबि आगरिया १६५ नटत
रंगीले पियप्यारी दोउ ताताथेई । ताताथेई ताताथेई
ताताथेई ताताथेई॥ रसिकबिहारी संग सियसुकुमारी
प्यारी छबि उजियारी रसिकन सुखकारी दोऊ। करि
हाव भावदृग मोरैं अङ्गतोरैं सखियन चित चोरैं जब
धरैं गलबाहिं दोऊ ॥ उघटैं संगीत गीत स्वरन
मिलावैं गावैं जिय ललचावैं ज्ञानाअलि मनभावैं
दोऊ १६६ देखो देखोरी अनोखो सजनी नव सरस
रङ्ग ॥ शरद निकुंज आये पिय प्यारि सङ्ग । सियकर
बीन गति गुणन प्रवीन अति गावै स्वरभीन नित
नवल तरङ्ग ॥ नवला अनोखि छबि चोखि चहुं ओर
ठाढ़ी बजत मृदङ्ग मुरचङ्ग वे उपङ्ग । पिय घनश्याम
सिय दामिनि भामिनि भलि भरि रस भाव सुख सुखमा
अभङ्ग ॥ अचल सुहाग भाग रहस उमङ्ग रङ्ग ज्ञाना-
अलि मोहिं लागि रतिहु अनङ्ग १६७ रसकेलि कला
कल कामिनियां दमकै तनु अनुपम दामिनियां॥ लखि
शरद चांदनी चन्द्रबदनि सखियन सँग लै गजगा-
मिनियां । बिहरैं प्रमोदबन कुञ्जन में गुणरूपनवेली
नामिनियां ॥ रस रास बिलास उमङ्ग भरी अगरी छबि
रघुबर भामिनियां ॥ ज्ञानाअलिकी बड़ि भाग जगी
पायोसिय सीबर स्वामिनियां १६८ प्रियतम रस लोभी
छबि भलिया । फूली अलि चहुँ दिशि नव कलिया ॥
सुन्दर प्रमोद बन रस थलिया बिहरत सिय रघुबररँग
रलिया । नव घन दामिनि सुखमा दलिया उपमा न

मिली भूली गलिया ॥ रसराज मनोहर पिय बलिया चितवत हँसि सुधि बुधि मति छलिया। ज्ञानाअलि सुकृत सुतरु फलिया लहि स्वामिनि मिथिलाधिपललिया १६९ छुम छनननन पग नूपुर बाजै नटत छैल छबि अङ्ग भरे। बिच बिच श्यामा श्याम मनोहर युगल युगल गल बांह धरे॥ छोरनि गहनि कहनि कछु हँसि हँसि अरस परस छबि फन्द परे। कञ्चन लता तमाल तरुन तरु रस बिहार जनु फूलि फरे॥ ज्ञानाअलि सुख स्वाद रसिक जन पावैं ते कबहूं न टरे १७०॥

झपताल ॥ छुम छनन छाय रहि नटनि गति गानकी। महारस रास यह परम मङ्गल महा उघटि संगीत गति विविध श्रीजानकी॥ अमित नवनागरी मनहुं तारावली मध्य राकेश पिय मधुर रस पानकी। सुभग शिर चन्द्रिका क्रीटकुण्डल हलनि श्रवण ताटङ्क करु कोटि शत भानकी॥ मधुर मृदु बीण ध्वनि यन्त्र तन्त्रादि मिलि मृदँग टङ्कोर चहुं ओर स्वर तानकी। ज्ञानाअलि लाड़िली लाल रस केलि सुख कहत नहिं बनत यह रहस सुनि कानकी ४।१७१ नटनि अवलोकि अवधेश नृपलालकी। चकित लखि ललकि सिय सखिन सँग रहस छबि गाय मृदु तानदै सबहि सुख जालकी॥ सप्त स्वर ग्राम त्रय मुर्छना मोरि मुख मन्द मुसुकानि हिय उमङ्ग उरमाल की। डारि भुज अंस पिय प्यारि दोउ परसपर लटकि रहे अमित कहि सकत नहिं हाल की॥ छिटकिरहि चांदनी अमित चन्द्राननी निरखि छबि थकित रहि रसिक सियबालकी। ज्ञाना-

अलि सखिन संग पिय तरस माधुरी तृप्त नहिं होत
लखि नटनि सुनि ताल की १७२॥ राग ईमन ॥ पिय
प्यारी गावत दूउ मिलितननन। सप्त स्वरन त्रय ग्राम
मुर्छना हाव भाव रस बश ह्वै तन मन ॥ मधुर बीणा
ध्वनि मृदंग मनोहर बिबिध यन्त्र तन्त्रादिक झननन।
लाग डाट दृग मोरनि मृदु हँसि नटनि अलिन सङ्ग
छननन छननन॥ अभिनय बिनय जोरिकर कञ्जनि
थेइ तातथेइ उचरत अलिगन। कोउ सँगीत उघटत
अलबेली लै मृदङ्ग गति अनुपम घननन॥ श्रीबिदेह
नृपराज दुलारी अवध ललन संग बैठि सिंहासन।
ज्ञानाअलि सुख देत लेत मन जब हँसि हँसि पावत
मुख पानन १७३ खञ्जन दृगन लेत मन सयनन।
सुखसागर नागर छबि आगरि प्रेम विवश कहि कहि
मृदुबयनन ॥ पिय बल्लभाप्राणधन जीवन जा बिनु
निशिदिन क्षण पल चयनन। त्यों चकोर चित चोर ब-
दन शशि पियत सुधा छबि रस भरि नयनन ॥ जग
जीवन जानकीरमण छबि कबि कोबिद गावत मति
पयनन। ज्ञानाअलि दोउ छके रूप रस सुख सुखमा
अँग अँग भरि मयनन १७४ परि दोउ सुघर शिरो-
मणि सांचे। रघुबर प्राण प्रिया सिय सुन्दरि धन जी-
वन जन इन सँग राचे॥ सिय दामिनि घनश्यामराम
छबि लखि मयूर मन प्रमुदित नाचे। कृपादृष्टि सुख
वृष्टि मधुर जल पियत स्वादरस छबि मन माचे॥
जोइ जोइ पियै जियै जग युग युग त्रिबिध जरनि दुखते
जन बांचे। ज्ञानाअलि मति कूरकर्म बश फिरि फिरि

फँसत मन्द मति कांचे १७५ ॥ राग कल्याण ॥ धन जीवन युगल किशोररी। प्रियरमणी सिय पिय मन रञ्जन द्वउ मनमोहन मोररी ॥ गौरश्यामबर बरण बरोबरि घन दामिनि द्युति थोररी। श्यामा श्याम सरस मन भावन सम बययौबन जोररी॥ कनक भवन राजत सियबल्लभ सेवत अलि चहुं ओररी। ज्ञानाअलि युग चन्द्र सुधा छबि पियैकरि दृगन चकोररी १७६ छबि सुन्दर सूरति श्यामकी। बैठे सुमन सिंहासन सियसङ्ग क्या घन दामिनि कामकी ॥ नखशिख सुमन शृँगार सुभग तन सुमन कुञ्ज अभिरामकी ॥ फूले सुमन लता तरु चहुं दिशि पियप्यारी मन बिश्रामकी। फूली अलिन मध्य पिय भौंरा रसलोभी सुखधाम की ॥ ज्ञानाअलि रस पियत रसहिरस बलि बलि रसिया नामकी १७७॥ ठुमरी ॥ अब न तजौंगी पिय प्यारे। श्रीदशरथ नृप-वारे॥ सिय जीवन धन प्राण प्राण के रूप गुणन मतवारे। मदन कोटि शत रोम रोम पर निवछावरि करिडारे॥ चित चकोर सुखमा शशि आनन पियैं दृग रसिक हमारे। ज्ञानाअलि आशिक तुव छबि पर बदन सदन छबि भारे १७८ बतिया तुम्हारी रस सानी। रसिक जनन सुखदानी॥ सुनि सुनि छकी बिकी बिनदामन मनभावन मनमानी। चितवनि जुलुम जोर जियमारनि कौन बचै अस ज्ञानी॥ चलनि मत्त गजगति गर्बीली निरअंकुश दरशानी। ज्ञानाअलि बलि मौज तुम्हारी गावत हिय हुलसानी १७९ रसिक बिहारी मनहारी। सुरति बिसारी मेरि बारी ॥ सिय

बर सुघर सुजान शिरोमणि बांकी बर बिरद सम्हारी।
जग जानी यह बानि तुम्हारी करगहि करत न न्यारी॥
चेरी चरण शरण तकि आई राखिय सुघरसुधारी।
ज्ञानाअलि गरजी अरजी यह सुनिय जु श्यामशि-
कारी १८० ॥ पुरबी ॥ रसिक रसलोभी हो पिय मोर ।
लगन लगी जिय जोर ॥ सुन्दर सुघर शिरोमणि सिय
बर हँसि चितवनि चित चोर । फूली कली अली अल-
बेली पियै छबिरस नहिं थोर ॥ ज्ञानाअलि पियरसिक
रसीली पियत रसहि रसबोर १८१ तनिक हँसि बोली
हो मृदुबैन । रसिक जनन सुखदैन ॥ सिय जीवन सु-
खमा समुद्रछबि छाइरहो उर ऐन ॥ भइ बदनाम बिकी
बिन दामन बिनदेखे नहिं चैन । ज्ञानाअलि गरजी
मरजी रुचि सुनिये रञ्जित मैन १८२ कसक कैसे छूटै
हो बिनुश्याम । करकत आठौ याम ॥ ज्यों चन्दहि चित
चतुर चकोरी चितवत मन बिश्राम ॥ चसक लगी
सिय रसिक मिलनकी रटनि लालललि नाम । ज्ञाना-
अलि लखि युगल माधुरी रसिक जननको काम १८३
छुटत नहिं माननीको मान । सुनिये चतुर सुजान ॥
काह कही कहिये नृप लालन हौं हारी तन प्रान ।
चलिये आपु मनावन प्यारी गाय मधुर मृदुतान ॥
ज्ञानाअलि लखि ललकि मिली उठि करत अधर मधु
पान १८४ राम बिनु धिक जीवन केहि काम । भटकत
आठौ याम ॥ नहिं सेवन सुमिरण सियबरको तनु
पोषक बिधिबाम । अति अभिमान धाम धन सुत
लखि निशि दिन भये गुलाम ॥ ज्ञानाअलि तब सूझि

परैगी जब जैहै यम धाम १८५ यतन करो। झूठो जग ब्योहार। समय न बारम्बार॥ लख चौरासी जनमि जनमि जग लखौ न सारासार। हरि गुरु चरण शरण सन्तन तजि निशिदिन फिरत गँवार॥ ज्ञानाअलि गजगीध अजामिल हरि सुमिरण भव पार १८६ जनक नृप लाडिली रघुलाल। जयति सुनयना बाल॥ कौशल्यानन्दन जग बन्दन युगल रूप रस जाल। पिय रमणी सियरमण राम पिय बड़े बड़े नयन बिशाल॥ तरु तमाल पिय कनक लता सिय जनु अरुझी उरमाल। शोभा सदन मदन मद मोचन निरखत होत निहाल॥ ज्ञानाअलि युग ललित पदावलि नामावलि रसचाल १८७॥ लावनी॥ रसकेलिकलोल अमोल लोल दोउ कनक अजिर नृत्यत रसिया। अवधेश ललन मिथिलेशलली छबि छैल छबीली मन बसिया॥ सम बयस किशोरी सहचरिया दमकै तन दामिनि द्युति लसिया। गति गान तान लै सप्त स्वरन उघटत संगीत नइ नइ गँसिया॥ अनुपम मयङ्कयुग मध्य चहूं दिशि छबि ललना उडुगण दसिया। ज्ञानाअलि देखत सुख समाज अस को न फँसै यहि रस फँसिया १८८ युगुल छबि आजु लखो प्यारी। पिय घनश्याम सिया द्युति दामछटा न्यारी॥ कनक भवन भरिवे भामिनि दामिन सारी। रहस मतवारी सबै सुकुमारी उमँग भारी॥ पियसँग केलि कलोलै कोउ मृदु हँसि हँसि बोलै। बचन अनमोलै लेत मनमोलै नवल नारी॥ ज्ञानाअलि पान खवावै कोउ बहु यन्त्रबजावै।

कोउ कलगावै पितम मनभावै रासजारी १८९ ॥ लावनी ॥ सियाजू सखियन सँग सोहै। शरदऋतु आगम मग जो है ॥ सोहागिनि बड़भागिनि प्यारी। नवल रसरङ्ग उमँग भारी ॥ सदा प्रियतम छबि मतवारी। सलोनी सखियन सुखकारी ॥ दोहा ॥ शरद चाँदनीसी खिली, सियदामिनि द्युतिअङ्ग। भूषणतन उड़गणलसै, बसन मनोहर अङ्ग ॥ निरखि छबि रसिकराज मोहै ॥ नवेली अलबेली अलिया। रासरसमाती छबिभलिया ॥ फूलिरहि जनु चम्पाकलिया। अमित रति रमा मानदलिया ॥ दोहा ॥ ज्ञानाअलि नटनागरी, नटनागर पियकाज। नटनिवेष अँगअँग सज्यो, जनु उमग्यो रसराज ॥ आज रघुराज सुवन कोहै १९० शरदऋतु दम्पति छबिछाई। नेकु रति मदन भीखपाई ॥ अलीगन गावै मनभावै। बजावै बाजन सुखछावै ॥ नईनइ तानन सरसावै। सप्तस्वर क्षणाक्षण दरशावै ॥ दोहा ॥ नटनिकला कुशला सबै, पियप्यारी रुखपाय। नाचन लगी उमंगसों, गति स्वर ताल मिलाय ॥ मुर्छना छुम छननन भाई ॥ बिबिध रस केलि कला छाकी। छबीली अलबेली बाँकी ॥ निरखि सिय रसिकलाल झाँकी। सखिनकी गति मति सब थाकी ॥ दोहा ॥ चटक चाँदनी शरदकी, पियप्यारी मुखचन्द। चष चकोर ज्ञानाअली, छबिरस पियत अनन्द ॥ नवलयश उमगि उमगि गाई १९१ शरद निशि चाँदनि छबिछाई ॥ रहस रच्यो श्रीजनकनन्दनी रघुनन्दन पाई। चन्द्रवति चन्द्रकला सुभगा चन्द्राननि अरु चारु शिलादिक सहचरि जुरि-

आई ॥ नवलरस दम्पति सुखदाई। गान कलाकल कोकिल बयनी रहसि रहसि गाई ॥ सुनैनाललो भलो भाई। ज्ञानाअलि नृपललन नवलसँग नितसुख सरसाई १६२ देखु सखि अनुपम छबि न्यारी। बिहरत श्रीप्रमोद बनकुञ्जन प्रियतम पियप्यारी ॥ चाँदनी छिटकनि सुखकारी। मतवारी कोटिन मृगनयनी मृदुबयनी नारी ॥ निरखि निशिचन्द उमँग भारी। नवला नवल रङ्गरस माती कियो रास त्यारी ॥ मधुर ध्वनि यन्त्र तन्त्र बाजै। तानतरङ्ग रङ्ग नभछायो नाचै दैतारी ॥ सलोनी सुन्दरि सुकुमारी। नखशिख सुभग बिभूषण सुन्दर पहिरि श्याम सारी ॥ नवल नित दम्पति सुख जारी। ज्ञानाअलि सिय रसिक लाल पर तन मन धन वारी १६३ देखो सखि रहस कलोल नटत पियप्यारी। यह चटक चांदनी शरद चन्द उजियारी ॥ सुन्दर अशोक बन कुञ्ज सदा सुखकारी। फूले द्रुम लता बितान मधुप गुञ्जारी ॥ बीणा धरि बीणा बजाय गाय लयधारी। सहजा सितार कर धारि लेत गति न्यारी ॥ चन्द्रानिनि मृदँग टँकोर चन्द्रकलतारी। सुभगाजु सप्तस्वर धारि रहस मतवारी ॥ यह रासबिलास अपार सिन्धु अतिभारी। ज्ञानाअलि क्यों करिकहै पंगुमति हारी १६४ जगजीवन जानकि जान शरद सुखदानी। बिहरत अशोकबन संगसीय बटरानी ॥ ज्यों कञ्चनलता तमाल तरुन तरु जानी। अंसन भुज लपटी बेलि सदा अरुझानी ॥ शिरक्रीट चन्द्रिका धरनि मन्द मुसुकानी। नखशिख भूषणबर

बसन निरखि मनमानी ॥ सुखमा समुद्र सरि उमँगि बही रसखानी । ज्ञानाअलि पीवत नित्त तृषा नहिं भानी १९५ नृत्यतरस केलि निधान सखिन सँग नीके। धन जीवन प्राणअधार रसिक जनजीके॥ श्रुतिकुण्डल करत कलोल कपोलन पीके । लखि मुकुट लटक शिर कीट अलिनमन बीके ॥ अलकावलि अलिमुख कञ्ज रसिक रसहीके। रसमत्त भौंह धनु नैन पैन शर ठीके॥ कटि पीताम्बरकी कसनिहँसनि सँगतीके। लखिलगत कोटि नटनटनि मन्दगति फीके ॥ अस नटवर बेषबनाय हरत मनसीके। ज्ञानाअलि ऐसी कौन करति त्रयलीके १९६ सखि रहस रसीलो लाल लाड़िली गोहन। मानों घनदामिनि अचल चपल चितपोहन॥ लखि शरदरैनि छबि छटा छिटकि अति सोहन। सुन्दर तन श्यामाश्याम लसै मनमोहन॥ सिय पिय मयङ्कमुख छटा ब्योमशशि जोहन। लज्जित अकास ग्रहबास अपर असकोहन ॥ सुखमा समुद्र सुरधेनु अमल मनदोहन। ज्ञानाअलि दुहिदुहि पियै जियै रसवोहन १९७॥ ठुमरी ॥ शरदनिशि छटा छिटकिछाई। छबीलो पियछैल करै रसफैल छबीली पाई ॥ चहुँदिशि ललना गोरी ठाढ़ी सम बयस किशोरी । पियामुख चन्दचकोरी दृगजोरी मधुर बयथोरी रहसि गाई ॥ रहस रसीली बेनिको धनजीवन सीको। मण्डल रचि नटनि हँसनि छबि लसनि फँसनि भाई ॥ ज्ञानाअलि युगल बिहारी बिहरत शरद उज्यारी। अमितरतिमदन ऋदनकरि डारी निरखि छबि प्यारी हियेलाई १९८॥

रागसोरठ ॥ रघुनन्दचन्द मुख चाँदनि छबिरस रसिक नित्य पीवै। चष चकोरकरि रस सरसावै युगलकेलि कल निशिदिन गावै सुखपावै जीवै॥ सियगोरी पिय श्याम सोहावै चतुरचित्तधरि हृदयबसावै सुमति सुयश सीवै। ज्ञानाअलि पियसँग सिय अलबेली जेहि आगे रति रमागवेली नहिं गति मति छीवै १९९ नृत्यत नटवर नटनागरि आगरि थिरकि थिरकि प्यारी। श्री रघुनन्दन निमिकुल नन्दनि छाई छटा शरद निशि चाँदनि चन्द्राननि सारी॥ चञ्चल चरण लोलचित हेरनि भुज अंसनि करकञ्जनि फेरनि नवयौबन नारी। सुभगा सुखद सप्तस्वरगावै कोउ सितार बहु यन्त्रबजावै ज्ञानाअलि बलिहारी २०० सखिश्यामाश्यामबिहारी बिहरैं शरदकेलि कुञ्जै। नवतरु तला बितान चाँदनी कनक अजिर चहुँ ओर सुमन द्रुम मधुप मधुर गुञ्जै॥ नइनइ तान तरङ्गरङ्गभरि नवनागरि आगरि गुणसागरि सुन्दरि अलिपुञ्जै। ज्ञानाअलि सिय पिय रुखजोहै चषचकोर करि शशिमुखपोहै गुणगति मतिलुञ्जै २०१ नित नइ नइ केलि कलोल लोलदोउ बनप्रमोद डोलै॥ रसलम्पट सुखमा छबि सोहन मन मोहन प्यारी पियगोहन मृदु हँसिहँसि बोलै। चटक चाँदनी छटा न थोरी पियमुख शशि सिय रसिक चकोरी अंसन भुजतोलै॥ नवसनेह सुख रसकी बतिया हावभाव दृग फेरनि गतिया रस दँतिया खोलै। ज्ञानाअलि सिय पिय रसिक बिहारी बिहरत शरदरैनि उजियारी सखियन मनमोलै २०२ ॥ रेखता ॥ आजु रस

रास तैयारी । सखिनसँग सीय सुकुमारी ॥ मङ्गल भरि कनक करथारी । कलश कल सुरभिबरबारी । साजि नवसप्त मनहारी । नवलतन लालकी प्यारी ॥ सबै निमिबंश उजियारी । सलोनी सुमुखि छबिभारी ॥ यन्त्र तंत्रादि करतारी । सप्तस्वर सहित लयधारी ॥ मुर्छना मुरनि हँसिनारी । निरखि साखि सबै मतवारी ॥ ज्ञानअलि सौजसाजिसारी । पिया हित मिलन चलि-झारी २०३ छबीलोछैल गर्वीलो । रासरसमत्त उमगीलो ॥ जासु गुणरूप नहिं कीलो । थके कबि गनत गतिढीलो ॥ अरुण शिरपाग चमकीलो । कमरकसि सुरँग पटपीलो ॥ नुपुरपग मधुर रमकीलो । सखिन मन सुनत उरभीलो ॥ चपल चितचतुर सुखसीलो । निरखि पियप्यारि हँसि मीलो ॥ ज्ञानअलि भँवर मन जीलो । युगलछबि सुमन रसहीलो २०४ कहौ पिय रासरसबातिया । निरखिछबि चाँदनी रतिया ॥ देखावो नटनि गतिप्यारी । बजावो बीण कर धारी ॥ सप्तस्वर गान ताननसों । खान मुखलाल पाननसों ॥ भौंह धनु नयन शरसाजी । हरौ सखि सकुन मनराजी । कञ्जकर धारि गलबहियाँ ॥ रमौ पिय श्रवण बट छहियाँ । कृपण ज्यों पाय धनथाती ॥ धरत तिमि गोय किन छाती । डरौ जनि लाल सुखदानी । पियौ रसरास मन मानी ॥ ज्ञानअलि पीय जियभाई । प्रिया के बचन सुखदाई २०५ रामरमनीय छबिभारी । निरखि सिय कहति बलिहारी ॥ बने तुम छैल अतिनीके । कहां चले रास रसपीके ॥ रमावो राग ताननमें । शरदनिशि

कुञ्ज बागनमें ॥ नित्य यह रहस रसबातै। पियत पिय श्रवण नहिं मातै ॥ रसिक दोउ परसपर भीजे। ज्ञान-अलि गाय यशजीजे २०६ ॥ रागपर्ज ॥ रघुबर रसिक बिहारी छबि लसिया ॥ कोटि कोटि नटवर अङ्गनपर निवछावरि करिडारी मनबासिया। हँसि हेरनि फेरनि भुज अंसन भौंहैं धनुशर मारनि दृगगँसिया ॥ बयस किशोर चोर चितवत मन सुन्दर अबहिं उठीहै मुह-मसिया। ज्ञानाअलि ललि लालन बशकरि नइ नइ केलि कलोलन मृदु हँसिया२०७॥ ग़ज़ल ॥ लखि चाँदनी चितचावसों प्यारीने यों कही। चलिये चतुर्चूड़ामणी चित चातुरी गही ॥ रसरासकी प्यारी सबै ललना लतासही। सींचौपिया रसराजदै दावन पकर रही ॥ जीवनजरी सियश्यामकी बाणी सुधालही। ज्ञाना-अली रसकेलिकी सरयू उमँगिबही २०८ क्या शौक़ है सखिश्यामकी नटवर कलाधारी। छाईछटा छबि चाँदनी ललना लसै सारी ॥ कटि काछनी शिरपाग परकलगी झुकी न्यारी। कुण्डल कपोलन लोलहै अनमोल मन हारी ॥ जुल्फैं मनों दो नागिनी मुखपर लसैंकारी। चितवै जिन्हैं मारै सही बेदर्द मतवारी ॥ चितवनि हँसनि बोलनि चलनि मोहीं सबैनारी। ज्ञानाअली गावै नचै थेइ थेइ बजैतारी २०९ जीवनजरी सिय श्याम की अँग अँग उमँग भरी। जाके लिये नृप लाल ने नटवर कला धरी ॥ चितवैं चटक छबि चाँदनी चितचातकी करी। बाणी उमा रति माननी सुर नाग नर वरी ॥ श्यामा सलोनी दामिनीसी कामिनी खरी।

लखि माधुरी सिय लालकी ललना लताहरी॥ निशि दिन रहै पिय संग में तनमन बचन अरी। ज्ञानअली छबि बावरी बरबस गरेपरी २१० युग युग जगत जाहिर सदा सिय स्वामिनी मोरी। बिद्युतछटा कञ्चन लता रति माननी कोरी॥ गोरी पिया घनश्याम सँग देखो बनी जोरी। ललना नवेली संगमें ज्यों चन्द चकोरी॥ पीवै छटा छबि माधुरी मधु मत्त मति भोरी। झुकि झुकि परै फिरि फिरि पियै सियलाल छबि चोरी॥ रसकी भरी बाणी मनोहर प्रेम रस बोरी। सदके गई मुसुकानि पर सुखमा नहीं थोरी॥ प्यासी हौं सिय पिय रूप की छिन छिन तृषा जोरी। ज्ञानाअली शीतलभई रस रासलखि सोरी २११॥ झपताल॥ आजु रघुनन्द मुख चन्द सिय चन्दनी। छिटकि छबि छाय मनभाय भल भामिनी॥ दामिनी दमक तन मनहुँ छबिफन्दनी। मनहुँ निशिराज रसराज रघुराज हित साजि सबसाज नवसप्त सुख कन्दनी। लेत गति ललकि ललकारि ललना नवल बजाहिं बहु यन्त्रतन्त्रादि मिलि छन्दनी। जयति रघुबंश निमि बंशकुल नन्दनी इन्दिरा आदि रति उमामद मन्दनी॥ जयति रसकेलि कल कुशल रघुबर पिया जयति गुणरूप छबि बिश्व यशबन्दनी। जयति चन्द्राननी गौरबर बरणनी रमणि पिय सङ्ग नित नौमि छबि मण्डनी। ज्ञान अलि सुखद सब भांति रासेश्वरी राखिये शरण मिटि जाय दुखदन्दनी २१२ देखु सखि अवध नृपलाल नटवर बनो। शरद निशि कुञ्ज सखि पुञ्ज सिय सह-

चरी सङ्ग सजि सौज बहुरहस मण्डलठनो॥ भूमि
अस्फटिक मणि जटित बहु बेलिद्रुम फूलिरहे सुमन
नव सुभग सौरभ घनो। दिब्य चैतन्य चहुँ ओर दुमा-
वली कनक गृह अजिरबर ब्योमचाँदनि तनो॥ पीत
पट कछनि कटि कसनि छबि लसनि बर सुभग शिर
क्रीट मणि जटित द्युति अनगनो। सङ्गनृप जनकजा
मनहुं कञ्चन लता पाय तरु श्याम दोउ परसपर छबि
सनो॥ दिब्यसिंहासनासीन सिय बीनकर मधुर स्वर
गाय सुख पाय पियजैभनो। थिरकि थेइ थेइ करनि
मधुर स्वर गति भरनि ज्ञानअलि सखिन हित शरद
सुखमा जनो २१३॥ चञ्चरीकछन्द॥ नटवर बर थिरकि
थिरकि नइ नइ गति लावै। भावै नित नव उमंग
सखियन चितचावै॥ छुम छुम पग अवनि धरनि तुम
तननन स्वरन भरनि चितवनि हँसि प्राण हरनि
रहसि रहसि गावै। इत उत तकि लुकनि झुकनि
झांकनि झझकनि सुलसनि लचकि लचकि कटिकर
धरि प्यारिको रिझावै॥ बजहिं बहु सितार बीन
बांसुरी मृदङ्ग मुरज ताल तरतरङ्ग मधुर अनुपम
छबिछावै। प्यारी मुख चन्द निरखि प्रियतम हिय
हरषि हरषि ज्ञानाअलि अंसन भुजधरनि मोहिं
भावै २१४ रसिया नृप ललन नवल ललन संग
सोहै। प्यारी रुख निरखि निरखि सोइ सोइ गति
पोहै॥ पीताम्बर कछनि कसनि सखियन भुज अंस
लसनि चितवनि हँसि हेरि हरषि रतिपति छबि
कोहै। नूपुर पग छुम छननन लेत तानतुम तन-

नन बजहिं यन्त्रतन्त्रबिबिध सुनि सुनि श्रुति मोहै ॥ प्यारी मुख शशि चकोर प्रियतम रस रसिक मोर पीवत छबिरसन थोर निशि दिन रुचि जोहै । ज्ञानाअलि तन मन धन प्राण अँगअँगन पर वारि वारि जात निरखि रहसकेलि गोहै २१५॥ पूरबी ॥ शरदऋतु शरदऋतु हे हे सखि नित नवरङ्ग । पिय प्यारी मुखचन्द छिटकि छबि छाय रही चहुँ ओर ॥ मधुर मृदङ्ग बीण धुनि सुनि सखि श्रवण सुखद चितचोर । रसिया रसिक शिरोमणि सियबर रसिकनके हितकाज । नाचत गावत छबि दरसावत बरसावत सुख आज ॥ सिय गोरी पिय श्याम मनोहर दोउ रसकेलि प्रधान । अँग अँग भूषण बसन लसनि तन गावत नइ नइ तान ॥ श्रीसरयूतट सुभग श्रवणाबट बन प्रमोद रस गेह । रहस रच्यो रघुनन्द चन्द लखि चन्द्रबदनि हित नेह ॥ कटि किङ्किणि पग नूपुर रुनु भुनु करकङ्कण झनकार । हाव भाव रस गति दरशावत लखि लज्जित रति मार ॥ यह रस योग यज्ञ ब्रत बरजित त्रिभुवन सुख ते दूर । ज्ञानाअलि सियबर सतगुरु ह्वै देत हिये बिच पूर २१६ अवधपुर अवधपुर हे हे सखि अति आनन्द ॥ ब्योम बितान चाँदनी छिटकनि शरद चन्द निशिराज । उडुगण दीप दान नभ छाये श्रीरघुनन्दन काज ॥ पिय मुख चन्द चकोरी गोरी सिय सहचरि नहिं थोर । छबि अमृत रसपान परम सुख पियत दृगन पुटकोर ॥ नवलानवलरङ्ग रस बरसत दरसत नव छबिअङ्ग । मृगनयनी कलकोकिल

बयनी गावतनवल उमङ्ग॥ कनक भवन दुख दवन मनोहर सब ऋतु भोग बिलास। छाइरहे कुञ्जन कुञ्जन में मित्रप्रिया बहुदास॥ कोउ ब्यजन कोउ चवँर छत्र लिय कोउ तरकस धनु तीर। ज्ञानाअलिकर बीणा मधुर स्वर गावत रस गम्भीर २१७॥ राग बिहाग॥ रसिक रसमाते सियसँग सोहै। बिहरत श्रीप्रमोद बन कुञ्जन रतिपतिहू लखि मोहै॥ नटनागर आगर गुण-सागर चितवनि में चित पोहै। हाव भाव अनुभाव बिभावहु तकत परसपर गोहै॥ रसलम्पट रसरसिक रसीलो रस गाहक अस कोहै। ज्ञानाअलि रस बि-वश भई लखि पिय प्यारी मुख जोहै २१८ करत रसबाते छबि दरशाते। शरद निकुञ्ज पुञ्ज सखियन सँग मन्द मन्द गति जाते॥ नटनि कलाकल कुशल कलानिधि नख शिख सुभग सोहाते। अंसन भुज धरि निरखि निरखि मुख हँसि हँसि पान न खाते॥ सप्त स्वरन त्रयग्राम अलापत जानत सब रसघाते। गान तान मुसुकान परस्पर पिय प्यारी रसमाते॥ यह रस रास बिलास मनोहर ब्रह्मादिक यशगाते। ज्ञानाअलि के अतिमन भाते सुनि सुनि हृदय जुड़ाते २१९॥ राग सोरठ॥ रसिक रस खानी अब हम जानी। चितवत ही चित चोरि भोरि करि मन मृग गति मद भानी॥ मुख सुखमा छबि सदन सोहावन बोलत अमृत बानी। करि मन मधुप अधर रस पीजे यह मेरे मन मानी॥ हास बिलास रासमण्डल को सुनि मन मुदित जु-ड़ानी। ज्ञानाअलि तजि लोक लाज गृह सियबर हाथ

बिकानी २२० शरद सुखदानी मेरो छैल गुमानी । नटवर वेष धर्यो प्यारी सँग सकल गुणन की खानी ॥ सुन्दर श्याम माधुरी मूरति सियसुन्दरि पटरानी । चितवनि हँसनि हरनि तन मन धन नहिं राखत कुलकानी ॥ उपमारहित सरस सुखमा छबि देखत मति बौरानी । बाणी मौन थकित कबि कोबिद रूप सुधा मति सानी ॥ जुलमी जबर जगत यश जाहिर तिहुँ पुर नाम निशानी । ज्ञानाअलि जेहि ओर चितै हँसि सो यहि रस लपटानी २२१ ॥ अथ श्रीहनुमान् जन्म बधाईपद ॥ कार्त्तिककृष्णचतुर्दशी ॥ धुरपद ॥ अञ्जनी सुवन जायो त्रिभुवन यश छायो कृष्ण तिथि चौदशि कातिक श्रुति गाय है । भरी है सोहाग भाग अति अनुराग रङ्ग पायो है सुकृत फल जैसो मन भाय है ॥ गोद में खेलावै हलरावै गुण गावै भावै अतिसुख पावै जाकी उपमा न पाय है । ज्ञानाअलि भोरही दिवाकर उदित देखि उचकि उछङ्गते मधुर फल खाय है २२२ ॥ रागकाफ़ी ॥ पवन कुमार उजागर तिहुँपुर अञ्जनि पुत्र कहाये । सुर नर नाग प्रशंसत मुनिजन जय ध्वनि चहुंदिशि छाये ॥ कातिक सुखद शरदऋतु चौदशि योगलगन भलपाये । ग्रहबरबार उदार मुहूरत दिनकर किरणि छपाये ॥ केशरि सुवन जन्म सुनि कानन सुरन सुमन झरि लाये । निवछावरि तन मन धन दम्पति युवतिन मङ्गल गाये ॥ भोर होत दिनराज उदित कपि उचकि जानि फल खाये । हाहाकार दिशानहिं सूझै दिनमणि मनहुँ पचाये ॥ इन्द्र बज्रकर घात कोपकरि

धरितेहि तूरि बहाये। कछुक चिह्न हनुभवो तेही सों हनुमत नाम धराये॥ अस्तुति करत बिबुध अति आरत अञ्जनि सुवन मनाये। तब कपि दीन्ह सूर्य अति आतुर चढ़िरथ ब्योम सिधाये॥ यह सियलाल दूत यश मङ्गल जगमङ्गल बरसाये। नितनव बाल-केलि सुनि सुन्दर ज्ञानाअलि मन भाये २२३॥ लावनी॥ केशरीनन्दन सुखदानी। भये प्रगट श्रीराम काज हित असुरन मदभानी॥ सुखी सुर सन्त असुरहानी। बरषहिं सुमन देवकहि जय जय गावहिं गुण ज्ञानी॥ अञ्जनी पुत्र लाभजानी। तन मन धन निवछावरि करि करि निशिदिन हरषानी॥ अप्सरा नाचैं मनमानी। जन्मबधाई मङ्गल घरघर नितनव सरसानी॥ जियै कपिकेशरि पटरानी। ज्ञानाअलि जाको यश छायो बर-णत बरबानी २२४॥ राग गौरी॥ अञ्जनी कौन सुकृत तप कीनो। जेहि कारण हरबानर तन धरि त्रिभुवन सुख दीनो॥ पूत सपूत दूत सियबर को सकल गुणन पीनो। मारि असुर सुरथापि अभयकरि सेवक यशलीनो॥ जगयश बिदित प्रशंसत सुरमुनि भवन लोक तीनो। ज्ञानाअलि पढ़ि चारि अठारह राम सुयश भीनो २२५ अञ्जनि सकल सुकृतकी रासी। जायो पूत सपूत सुलक्षण सियबर चरण उपासी॥ जो बिधि जन्म देइ या जगमें मातु पिता असखासी। मित्र प्रिया सुत बन्धु धाम धन होय दास सियदासी॥ पवन सुवन गुण त्रिभुवन भूषण सियबर महलनिवासी। भक्तराज रघुराज सुवनसँग निशिदिन करत खवासी॥

केशरि सुवन सुयश बर गावत छूटत यम की फांसी। ज्ञानाअलि जेहि हाथ बिके सब रघुबर सिय पुर बासी २२६ अञ्जनि जग जीवन फल पायो। जायो सुवन सुभग शुचि सुन्दर जाको यश श्रुति गायो॥ श्री-हनुमन्त सिया हितकारण फाँदि सिन्धु सुधि ल्यायो। दालिमालि दनुज मनुज सुरमुनि सब अपनी बाँह ब-सायो॥ राम काज कपिराज बाज ज्यों शकुन निशा-चर खायो। आये अवध लषण सिय रघुबर बिजय निशान बजायो॥ सियबर चरण सरस सेवारुचि नाम मधुर मधुपायो। युग युग जियै पियै निशिबासर ज्ञाना-अलि मनभायो २२७॥ ठुमरी॥ कपि केशरि नन्दन जन्म लियो नृप दशरथ सुतहित जगमहियां। ऐसो शुचि सेवक लोक तिहूं हनुमान सरिस कतहूं न-हियां॥ जिन फाँदि सिन्धु सियदरश कीन फल खाय अघाय अभै गहियां। दहि लङ्क प्रबल गढ़बङ्क महा कहि सकल कथारघुपति पहियां॥ रचि सेतु शत्रु रण जीति लियो दै राज बिभीषण गहि बहियां। ज्ञाना-अलि सिय लै पियहि सौंपि दैराज अवधपुर यश लहियां॥ २२८॥

इति श्रीसियबरकेलिपदावलीग्रन्थश्रीपद्मबदनिअनुचरिज्ञानाअलिकृतरासबिलास विविधछन्दपदप्रसहनुमतजन्मबधाईपदवर्णननामचतुर्थऋतुशरद ४॥

अथ शिशिरऋतु बिवाहपदबनावनी॥

धुरपद॥ चतुर कुमार चारो चञ्चल तुरंगन पै चढ़ि के नचावै गति मोरहू न पाय है। आस पास सजि

कै बरूथ यूथ सखनके नवल छबीले छैल मिथिला सुछाय है॥ अकनि मृदङ्ग ताल गति को देखावै लखि सुर सुख पावैं कहैं गन्धप सिखाय है। ज्ञानाअलि निरखि निहाल भईं नारिसब अञ्चल पसारि सुरसुकृत मनाय है २२९ यकतौ छबीले छैल तुरँग छबीले गैल प्रमदाशिकार बन मिथिलाको आय है। अलकैं कृपान भौंहैं चढ़ी हैं कमान मानो नयन बान कियेहैं संधान को बचाय है॥ ब्याहि पछितानि अनब्याहि हरषानि मन सियजूके शरण चरण मनलाय है। ज्ञानाअलि अवशि पियारि पियसंग सखि सहित समाज सब अवध बसाय है २३० ॥ ख्याल ॥ रसिक रसीलो हेली छैल छबीलो ॥श्री मिथिलाकी कुञ्ज गलिन में बिहरत गुण गरबीलो। सुन्दर सुखमा सदन बदन छबि चितवनि चित्त गसीलो ॥ सुठि सुकुमार राम रमणीहित कटिपट पीत कसीलो। ज्ञानाअलि ये धनुष तोरि हैं मो मन यहै बसीलो २३१ बनरा लोनो सलोनि सिय बनरी बनी॥ गोरी सबगुण खानि सिया जू रघुबर श्याम सलोनो। घन चपलाबर बरन हरन मन नखशिख सोहत दोनो॥ या छबि सुखसमाज शोभा कहुँ भयउ नहै नहिं होनो। ज्ञानाअलि मिथिला पुर घर घर डारि दियो पढ़ि टोनो २३२ ॥ पूरबी ॥ ठुमरी ॥ बना बनिआयोरी माई अबहिं देखि आई हौं। सुन्दर श्याम नयनरतनारे देखतही धाई हौं॥ नख शिख सुभग साँवरो सजनी अङ्गअङ्ग छबिछाई। ज्ञाना-अलि सिय भाग सराहत जिन यह बर पाई २३३

बनापर हौं वारी वारी। शिवधनु तोरि पहिरि जय-
माला मिथिलानगरमग चारी ॥ अब नहिं कछु संदेह
सुनौ सखि बरि हैं बिदेहकुमारी। ज्ञानाअलि नभन-
गर कोलाहल सखि सब गावत गारी २३४ सियाबर
नीको री नीको । जाकी छबि अवलोकि ठगी हौं जग
लागत फीको ॥ सुन्दर श्याम नयन रतनारे हरत ताप
जीको । सुखमा सदन मदन मदमोचन त्रिभुवन शिर
टीको ॥ ब्याह उछाह राम रमणी को गाहक जनही
को । यह जिय जानि मानि निशिबासर गावत गुण
पीको ॥ रघुबर सुघर शिरोमणि बनरा जीवन धन
सीको । ज्ञानाअलि बलिहारिगई लखि चितवनि शर-
तीषो २३५ ॥ राग गौरी ॥ सलोनी बनी बनरा सलोनो
नृपलाल । रतन जटित मण्डप तर राजत लखिरति
मदन बिहाल ॥ गौरश्याम अभिराम मनोहर मौरधरे
छबिजाल । नासामणि अलकैं घुंघुरारी अरुण नयन
उरशाल ॥ सियशिर सुभग चन्द्रिका राजित उर मो-
तिन मणिमाल । अरुण पीत पटगांठि दुहुँनकी क्या
बरणौं छबिहाल ॥ सिय बनरी बनरा छबि क्षण क्षण
निरखत होत निहाल । ज्ञानाअलि जानै सो या सुख
जापर सिय जु दयाल २३६ सलोने सखि श्यामसुँदर
बनरा । मोहि लियो मनरा ॥ मौर धरे छबिखानि छ-
बीलो फबिरहो दृग कजरा ॥ ब्याह बिभूषण बसन
सोहावन फूलोंदि उर गजरा । ज्ञानाअलि छबि देखि
ठगीसी छिनपल नहिं कलरा २३७ सलोनी लोनी सिय
बनरी श्यामा । सुन्दरि द्युतिदामा ॥ रघुबर सुघर

बनाकी जीवन रटत रहतनामा। निमिकुलकुमुद शरद चाँदनि सिय अँग अँग छबिधामा॥ मृगशावक नैनी मृदुबैनी राम रसिक बामा। ज्ञानाअलि सिय चरण शरण भइ लहि मन बिश्रामा २३८ राजकुँवरि छबि-खानि अनोखिबनी। राजकुँवर बनरा सुखसागर बिधि बिरच्यो पहिंचानि॥ मिथिलापुर नरनारि मगन मन जहँ तहँ कहत बखानि। बड़भागिनि श्रीजनक-दुलारी बर पायो मन मानि॥ जाहि महेश शेश निशि बासर आगम निगम बखानि। ज्ञानाअलि चेरी भइ ताकी त्यागि लोक कुलकानि २३९ परी मेरे सियबनरे की बान। चतुराई की खान॥ चितवनि बान कमान भौंह सजि मारत तकि तकि तान। अलकैं कुटिल कटीली मुखपर चमकै मनहुँ कृपान॥ करि कतलान प्रान युवतिन के नयन चढ़े खरसान। जब हेरत मुसुकाय मोरि मुख देत फेरि जियदान॥ अलबेली छबि छैल छबीलो उपमा कहँ नहिं आन। ज्ञानाअलि बलिहारि बनापर वारि बचन तन प्रान २४० सुभग सलोनी सिया सुँदर बरपायो। मिथिलापुर नरनारि सराहत सबके मनभायो॥ धन्य जनकजा ललीमनोहर धनि दशरथ जायो। धन्य सुनैना धनि कौशल्या जिन सुख दरशायो॥ धनि मिथिला धनि धन्य अवधपुर जहँ मङ्गल छायो। ज्ञानाअलि बड़भाग सखिन के जिन मङ्गल गायो २४१ ॥ रागगौरी ॥ छैल छबीलो बनरा मेरे मनभायो हेली। सांवरो छबीलो शिरमौर चटकीलो सोहै जाकी छबि लखि मद मदन भुलायो हेली॥

धन्य नृपरानि जिन जाई ऐसी बेटि प्यारी धन्य सिय भाग जिन ऐसो बर पायो हेली। कहँलौं सराहौं सुख सुखमा अपारअति ज्ञानानिजचेरि सियजानि संग ल्यायो हेली २४२ मैं वारी सियाजू तेरि छबिपर वारी॥ अद्भुतरूप मार मदहारी श्रीमिथिलेश दुलारी। रघुबर सुघर शिरोमणि बनरा सोतेरी बलिहारी॥ निमिकुल कुमुद प्रकाशिनि सुन्दरि यश गावत श्रुति चारी। ज्ञाना अलि पर कृपा बिलोकनि निजदिशि देखि सँभारी २४३॥ ठुमरी॥ रसिक रसलोभी भौंरा वे॥ फिरि फिरि आवै पिय मेरि फुलवारी फिरै संग मानौं बौरा वे। श्री मिथिलापुर गलिन ललीहित आयो दौरावे॥ श्रीअव-धेश लाड़िलो सजनी नीको सँवरा वे। ज्ञानाअलि नइलगन जगीलखि ठाढ़ी कौरा वे २४४ सँवलिया मेरीवारि वे॥ फूलि रहीं सुखकारि मनहारि प्यारि देखो न्यारि वे। बारिबारि नारि क्यारि क्यारि ठाढ़ी प्यारि संगशोभा भारि वे॥ शीतल सुगन्ध मन्द त्रि-बिध बयारि जारि प्यारि प्यारि वे। ज्ञानाअलि बारि पिय सुमन सँवारि नारि ल्याई सारि वे २४५ सुनु प्यारे चश्मोंदी चोटैं क्योंकर जुलुम सहोंगी॥ मैंतौ छबि प्यासी तेरी कोमल कुसुमोंदी दिलदारकिया ज-ख़्मी मुझको मैंभी करदावँ गहोंगी। ज्ञानाअलि अलियोंमें मानौं फूली कलियों में पिय मन भौंराबश करिकै प्यारीसों जाय कहोंगी २४६ चल सजनी दे-खन चलिये नृपनन्दन छैल बनावे। मिथिला नगर छबिछावे चढ़े बरबाजि नचावे दृगनदरशावे सखिन

मनभावे चञ्चलगति लेत घनावे ॥ दुइ श्यामल दुइ गोरे मानौं बर हंसन जोरे ललकि मनमोरे निरखि तृण तोरे घोरेनहरिलियो मनावे। शिरपर चीरा पीरा कटि पट पीरा पीरा कण्ठमणिहीरा ललनमुखबीरा ज्ञाना-अलि दृगन सनावे २४७ सिय बनरी छबिरस रसिया मिथिलापुर गलिनअरे वे। जैसे रसलोभी भौंरा मणि बिनु फणिबर जैसे पीनबिनु मीन बिकल दुखदीन तैसी गति ललनपरे वे॥ भोरहि गिरिजाबारा चलेदोउ नवल शिकारि निरखि अलिपुञ्ज सुमन द्रुम कुञ्ज अङ्ग अँग उमँग भरे वे। ज्ञानाअलि गौरि सवाँरि पुज्यो मिथि-लेशकुमारी लह्यो बरदान निरखि पियप्रान सुधा छबि पियत खरे वे २४८ ऐसी लोनी सिय बनरी रघुबर जेहि हाथबिके वे। अवध नगर सुनि पाये जाके लिये पायन धाये शम्भु धनुतोर बड़ बरजोर जनकपुर कुँ-वर टिके वे ॥ सुर नर असुर समेता भय सबलोग अचेता मन्द भृगुनन्द कियो रघुचन्द चहूंयुग चतुर ठिकेवे। ज्ञानाअलि ब्याहि बजाई सखिसब मङ्गल गाई कुँवर बर चारि कुँवरि सुकुमारि मण्डपतर बैठि निके वे २४९ आजु सखी मिथिलापुर घर घर चौहट द्वार गली वे। गावैं कलकोकिल बयनी सखि मृगशावक नयनी सियाबर ब्याह चरित अवगाह बिकासि मानौं चम्पकली वे॥ सुन्दरि सुमुखि सुनैनी ऐसि कहुं भई है नहोनी पगी पियरूप परी रसकूप अमित छबि छटा दली वे॥ रघुबर बनरा लोनो तैसि सिय बनरि सलोनी दोऊ चितचोर लियो मनमोर ज्ञानाअलि भई भली

बे २५० ॥ रागझंझौटी ॥ सिय प्यारी बनरी सलोनी । ऐसी कहुँ नभहै न क्षोनी ॥ जाकी छबिछीट करोनी रच्यो बिधि रतिछबि लोनी । जाने बशकियो जगयोनी रघुबर सुयशजगोनी ॥ जाको योगी ध्यान न पावै करि पचि पचि मरि जावै । सोइ छबि मिथिला जगावै पियै भरिभरि दृग दोनी ॥ पियमुख चन्द चकोरी गोरी सम बयस किशोरी । निरखि हरखि तृण तोरी दलिमानौं दृगन डिठोनी ॥ ज्ञानाअलि भाग सराही जेजे पिय सिय सँगब्याही । अबाकि चरित अवगाही सोउ सिय सहचरि होनी २५१ बना बाँका अवध ललनवा । जाके बिनु पलन कलनवा ॥ बांकी शिर पगिया जरकसी कटि पट कसनि तरकसी । चितवनि हियरे करकसी कर धनुबान घलनवा ॥ बांकी भौंहैं अलकैं सवाँरी कारी अतिप्यारी झलकारी । छबि मतवारी न्यारी न्यारी संग श्रुति कुण्डल हलनवा ॥ बाँकीउर मोतिवोंदी माला बोलनि बचन रसाला । ज्ञानाअलि चलनि मराला सब अँग मदन दलनवा २५२ ॥ ठुमरी भैरवी ॥ श्रीमिथिलापुर प्यारी पिया छबि फुलवारी में फूलि रही ॥ सुन्दर श्याम गौर मृदु मूरति निरखि मदनरति भूलिरही । गिरिजा पूजन सिय सखियन सँग तन द्युति दामिनि खूलि रही ॥ गुरु अनुशासन सुमन लेनहित लषण सहित छबि तूलिरही । सुमनन दोना करन सलोना ज्ञानाअलि लखि झूलि रही २५३ ॥ दादरा ॥ नेकु सियाबर देखु अलीरी । आये रघुबर मेरी गलीरी ॥ मौरधरे शिरकुण्डल कानन नासा मणिद्युति होत भलीरी । भौंह

कमान बान दृगतीषे मारत तकि तकि हृदय दलीरी॥ अलकैं कुटिल कटीली मुखपर मनहुं दुहूँ दिशि अलि अवलीरी। कर धनुबान केशरिया जामा जनु दामिनि भामिनिसि रलीरी॥ पदजावक अनुराग रंगह्वै बसि रहे लखि बिश्रामथलीरी। नखशिख सुखमा मदन कदन छबि यश मयङ्क तिहुंपुर उजलीरी॥ श्रीमिथिला पुरगलिन अटन पर फूलि रही अलि चम्पकलीरी। ज्ञानाअलि मिथिलेश लली सँग सबकी सुकृत बेलि सुफलीरी २५४॥ ठुमरी॥ सखि सुन्दर राजकुमार बना बनरी सिय सुन्दरि छबि भलिया॥ तनगौरश्याम अभि-राम दोऊ शिरमौर चन्द्रिका द्युतिरलिया। समबयस किशोरी सियअलिया चहुँओर खड़ीलखि तृणद-लिया॥ नव नेह नवेली सब अलिया सखि फूलिरही चम्पाकलिया। ज्ञानाअलि सुधि बुधि मति छलिया सब भूलि गई गृहकी गलिया २५५॥ ग़ज़ल॥ चल देखिये महबूब को क्या खूब बनाहै। तैसी सिया बनरी बनी छबिरूप सना है॥ शिर मौर वो मौरी मनोहर ज्योति घनाहै। सेहरेकि शोभा क्या कहौं छबिजाल तना है॥ करि करि यतन इस जक्तमें बहुतोंने गना है। कहि कहि थके पाया नहीं तिहुंलोक जनाहै॥ तन मन बचन यारूपसों जिसको नपनाहै। ज्ञानाअली ते दूर है आनाभि मनाहै २५६ सूरत छबीले छैल की सुखमा को जाल है। करिमीन मन ललना फँसी मिथिला बिहाल है॥ जादू भरी आंखें कटीली लाल लाल है। चितवन्यड़ी बरजोर है युवतीको काल है॥ जे जे फँसी

पियरूप में ते ते निहाल है। जे दूर हैं तरसैं सदा तन मन में शाल है॥ सखि साँवरो छबि बावरो नव तरु तमाल है । ज्ञानाअली कञ्चन लता सिय कण्ठ-मालहै २५७ क्या जुलुम जालिम जबर जुलफैं अनोखी कारियां। चश्मोंकी मारीपरी मिथिला शहरकी नारियां ॥ क्या करै किस्से कहै जिस्तौरकी बीमारियां। आशिक सोई माशूक पर तन मन करै बलिहारियां॥ गर्क है पियरूप में निशिदिन फिरै मतवारियां। जख़्म को मानै नहीं देती है चुनि चुनि गारियां ॥ सारी सलोनी श्याम की सिय की सहेली प्यारियां । ज्ञाना-अली पियरूप की प्यासी सबै सुकुमारियां २५८ क्या अजब सियको बना है देखने लायक बना । जक्त में जाहिर जहाँलौं जिस्के आगे कलपना॥ कानों में कुण्डल छबीलो मौरहै शिर छबिघना। जुलफहै जालिम अनोखी क्या कहौं छबिसोंसना॥ क्या कमान भौंह है नयनोंके बानों से तना । ताकै तनक जिस्की तरफ तिसको करै जगसे मना ॥ क्या कहौं सेहरे कि शोभा देखिकै कीन्होंपना। ज्ञानाअली पिय श्यामको गावोंगि निशिदिन गुनगना २५९ क्या कहौं सुमुखी सलोनी बनि रही सिय श्यामकी। नेहकी पालक सदा दायक प्रणत बिश्रामकी ॥ श्रीजनक नृपनन्दनी रघुबर पिया सुखकन्दनी। जगबन्दनी छबि गुणभरी बलिबलि गई इस नामकी॥ शीशपर मौरी मनोहर चन्द्रिका छबिधाम की। भागकी भाजनभली भाविक जनौं के कामकी॥ प्राणकी जीवन जरीसी जानकी प्रियराम की। देखि

कै छबि बिकि गई ज्ञानाअली बिन दाम की २६० ॥
खेमटा ॥ ललन अलबेलो सियाबर मौरधरे छबिजाल।
करकङ्कण मेहँदीपद जावक चलतमत्त गजचाल॥
सुधि बुधिहरत देखाय बदन छबि चितवत करत निहाल। ज्ञानाअलि बलिहारि बनापर ह्वैहौं मैं पिय उरमाल २६१ अजब बनि आयो सियाबर श्रीमिथिलापुर आज। कोटिन राजकुमार छैल सँग सजि सजि साज समाज॥ रथ गज बाजि निशान गान ध्वनि जनु सावन घन गाज। गज मणिमाल लालदृग अञ्जन शिरपर सोहै बरताज॥ अङ्ग मनोहर बसन बिभूषण जनु उमग्यो रसराज। ज्ञानाअलि मिथिलेश ललीहित अरु सखियन के काज २६२ बनिको बनानीकोरी सजनी मोहिलियो मनमोर। मृदु मुसुकाय चोराय लियो चित नेकु चितै दृगकोर॥ बड़े बड़े नयन पयन शरतीषे जुल्फैं जालिम जोर। श्रुति कुण्डल शिरमौर मनोहर रसिक छैल चितचोर॥ गरबीलो गुण रूप उजागर नागर नवल किशोर। ज्ञानाअलि पिय मुख मयङ्क लखि करिहौं मैं नयन चकोर २६३ सियाको पिया बाँका बना सखि बाँकी बनी छबिजाल। श्रीमहराज जनक नृपनन्दनि श्रीदशरथ नृपलाल॥ कनक कलश कल भावँरि फिरि फिरि कर कङ्कण उरमाल। माथे मौर मौरि पदजावक मृदु गति गवनमराल॥ मणि खम्भन्ह छबि छटा छाँह दुरि प्रगटत करत निहाल। रतिपति विविध वेषधरि मानहुँ निरखत दृगन बिहाल॥ बर दुलहिनि दोउ सुभग सिंहासन बैठे रूप रसाल।

ज्ञानाअलि अबिचल सोहाग सियबर कर लहि तत-
काल २६४॥ पूरबी ॥ निरखु हेली निरखु हेली हे श्रीमि-
थिलापुर आज॥ ब्याहन आये अवधनृपति सुत साजि
बरात नहिं थोर। गजरथ तुरँग संग दुइ बालक घन
दामिनि द्युति जोर॥ जैसे राम लषण दोउ तैसे नख
शिख सुन्दर अङ्ग। दुइ श्यामल दुइ गौर मनोहर आजु
लखे यक सङ्ग॥ चारिउ कुवँर कुवँरि सुनु सजनी जो
बिधि बश अस होय। ब्याह उछाह एकं मण्डप तर
देखि जियै सब कोय॥ यहि बिधि करत मनोरथ हिम
ऋतु आइ गयो सुख मूल। ज्ञानाअलि नभ सुमन
बरषि सुर जानि समय अनुकूल २६५ लगन दिन
लगन दिन हे हे सखि लखि अनुकूल॥ देखन सिय-
बर रूप माधुरी बिबुध बिमानन छाय। सात द्वीप नव-
खण्ड तिहूंपुर भूप जुरे सब आय॥ अकनि निशान
सुमुखि सुर सुन्दरि गावहिं मङ्गल चार। उमा रमा
बाणी ब्रह्माणी तन मन सुधि न सम्हार॥ चारिउ कुँ-
वर चपल गति चञ्चल भये तुरँग असवार। चली ब-
रात बजाय दुन्दुभी श्रीमिथिलापति द्वार॥ लोक बेद
बिधि द्वार चार करि जनक मण्डपहि ल्याय। ज्ञाना
अलि निवछावरि तन मन सिंहासन बैठाय २६६॥
लावनी॥ सुनैना सुता भली जाई॥ जेहि कारण अव-
धेश ललन छबि देखनको पाई। नगर नभ मङ्गल
ध्वनि छाई॥ चढ़ि बिमान सुर सुमन बरषि लखि
जन्म लाभ पाई। देखि सिय दूलह मन भाई॥ अन-
ब्याही ब्याही सँग डोलैं परबश पछिताई। निरखि नृप

सुवन सुयश गाई॥ ज्ञानाअलि सिय सङ्ग रङ्ग नव नित नित सरसाई २६७ बनी प्रिय प्रियतमकी जोरी॥रतन जटित मण्डपतर राजत रतिपति छबि कोरी। माण्डवी भरत चित्तचोरी॥ लषण उर्मिला श्रुतिकीरति सँग शत्रु-शमन सोरी। जानकी जाहिर जगमोरी॥ भई प्रगट जग जनक नृपति हित सुयश नहीं थोरी। निरखि छबि सादर तृण तोरी॥ ज्ञानाअलि शारदसी चातुरि सुधि बुधि भइ भोरी २६८ सियाबर त्रिभुवन शिर टीको। देखु सखि जीवनधन जीको॥ मनोहर मण्डपतर सोहै। मौर शिर चितवनि चितपोहै॥ सोहागिनि सिय पिय मुख जोहै। यतनसों लाज भरी सोहै॥ दोहा॥ मनसों मन दृग दृग फँसे नेकु न हियते जाहिं। अरस परस दोउ छबि छके क्षण क्षण हिय हरषाहिं॥ बनी यह दम्पति छबि नीको॥ मुदित कल भावँरि करि फेरी। दियो शिर सेंदुर छबि हेरी॥ लही सुख सम्पति की ढेरी। सियासी स्वामिनि भलि मेरी॥ दोहा॥ ज्ञाना-अलि नित उमँग भरि निरखि सुकृत फल सार। ब्याहे चारिउ कुँवर बर यश गावत श्रुति चार॥ मनोरथ सुफल भयो हीको २६९ बना नृप नन्दन सुखदानी। बनी सिय सुन्दरि छबि खानी॥ पियातन श्याम सिया गोरी। लसैं दोउ बयस मधुर थोरी॥ कञ्जकर कङ्कण हँसिछोरी। न छूटै सुधि बुधि भइभोरी॥ दोहा॥ प्यारी छबि लखि पियछके पियछबि लखि सियबाल। कर कङ्कण करमें रह्यो सखी हँसी दै ताल॥ सकुचि नृप लालन सिय जानी। सुनयना सुकृत नहीं थोरी॥

निरखि सिय दूलह तृण तोरी। मनावत अञ्चल कर-जोरी॥ जियै जग युगयुग सुखसोरी॥ दोहा॥ सखियन कोहबर आनिकै रसबिलास बहु कीन। ज्ञानाअलि लहकौरि कर पिय प्यारी मुखदीन॥ भई सिय रघुबर पटरानी २७०॥ रागकाफ़ी॥ बीर तुम धीर मुनीशन गाये। आजु सखियन हाथ ठगाये॥ सुनियत मारि ताड़का पापिनि ऋषियन शोक भगाये। दलि मारीच सुबाहु सहित दल तिहुंपुर सुयश जगाये॥ शिला नारि भइ परसि चरणरज गयो सोहाग मँगाये। सिय कर कङ्कण छूटत नाहीं बात न मनहिं पगाये॥ जनि सकुचाहु प्राणधन जीवन सुनि हँसि कण्ठलगाये। ज्ञानाअलि सरहज की बातें सुनि सुनि अति मन भाये २७१ ललन ससुरारि छाँड़िकहँ जैहौ यह सुख कतहुं न पैहौ। सासु ससुर सारी सरहज सब मिथिला बिरह सतैहौ॥ मानि ननँद नाते ननँदोई फिरि बिधु-बदन देखैहौ। प्रमदावन भूलेहु जनि रघुबर निजकर पतिया पठैहौ॥ जो तुम साँच अवध नृपनन्दन साँची कहो कब ऐहौ। ज्ञानाअलि तब सफल मनोरथ जब हँसि कण्ठ लगैहौ २७२॥ अथ कोहबर मङ्गल॥ सुन्दरि श्यामा श्याम राम रमणी लसे। जनु तमाल तरु संग कनक बेलीगँसे॥ रतनजटित शिरमौर चन्द्रिका झुकि रही। मोतियन झालरि झूमि सुधासरि जनु बही॥ ब्याह बिभूषण बसन अङ्ग अँग सीयके। करकङ्कण पद जावक जानकि पीयके॥ चारिउ कुँवर कुमारिन दृगन निहारिकै। बलि बलि जात सुनैनाजु तन

धन वारिकै। जनक भवन नभ चन्द कुँवर बर चार हैं॥ लिय यक यक मानौ रोहिणि सँग सुकुमार हैं। अलिगण चाँदनि छिटकी चहूँ दिशि जोर है। उडु-गण मणिगण भूषण अङ्ग न थोर है॥ भरत माण्डवी सङ्ग लषण सँग उर्मिला। रिपुसूदन श्रुतिकीर्ति अनूपम छबिखिला॥ कोहबर करत कलोल सखिन सँग रसभरे। सारी सरहज बिपुल सबनके मन हरे॥ लखि दूलह छबि सिन्धु दुलहिनिन सँगलिये। जनु शिंगार छबि जाल परस्पर बशकिये॥ चितवहिं पिय छबि चातुरि सकुचि छपायकै। निरखहिं कङ्कण नगन रूप हिय लायकै॥ हास बिलास प्रकास सुवासिनि रसभरी। करि लहकौरि बिधान खवावहि कर धरी॥ बरदुलहिनि सकुचाहिं मनहिंमन गाजहीं। सुनि सुनि गारी गान सुबाजन बाजहीं॥ उठि कर जोरि निहोरि एक सखि हँसि कही। यह बाती दीजै टारि चतुरबर कर यही॥ यह देवी अतिगुप्त नवलबर पू-जनी। बैठी बदन छपाय चतुर चूड़ामनी॥ सुनि सखि बचन सुजानजानि चतुरी बड़ी। हँसि कहि ऐसी देवि कोटि चरणनपरी॥ सुनि रनिवास रहस बशदलि तृण बारिकै। मणि भूषण निवछावरि समय बिचारिकै॥ करि आरति मन मुदित सुनैना छबि छकी। देत अ-शीश अघाय सुकृत तरु फलपकी॥ लोकचार ब्यवहार लह्यो सुख निशि भले। बर दुलही जनवासहि भोरहि मिलि चले॥ यह कोहबर बर गवन ब्याह मङ्गलमहा। गावहिं सुनहिं सुजान रसिक जिन रस लहा॥ यह सुख

अगम अपार बिना सतगुरु बिन। लहै न कोटिहु यतन मरै पचि पचि किन॥ ज्ञानाअलि यश जीवन धन जिय जानिकै। जानकि जीवनकेलि रसहिं मति सानिकै २७३॥ रागजति॥ सुनैनाजू युगयुग बेद बखानी। जगजीवन धन नृपरानी॥ अचल सोहाग भरी सुखमा सुख तिहुँपुर जस सरसानी। मानी छबि पानी करि तृणसम सियजननी अस जानी॥ करिप्रण धनुष तोराय कुँवरकर कोटिन नृप मदभानी। सुर नर नाग प्रशंसत मुनिजन जय जय धुनि बरसानी॥ सिय जयमाल लाल उर शोभित अधिक सुछबि मनमानी। सुरन सुमन झरि करि निवछावरि तन मन धन हठ ठानी॥ चारिउ बर सुकुमार मनोहर निरखि हरखि हिय आनी। जगजीवन फल चारि चारु मानौ बिधि प्रगट्यो सुखदानी॥ कुल ब्यवहार बेद बिधि करि सब जानिसमय गुरुज्ञानी। ब्याहि कुँवर कुँवरिन लखि दम्पति सुखमा सदन समानी॥ दायज दानमान परिपूरण ब्याह उछाह कहानी। नगर निशान गानध्वनि तिहुँपुर उमगि सुसरित बहानी॥ कहि न सिरात रूप गुण बरसत कबिकोबिद थकि बानी। ज्ञानाअलि बानी बिलास कछु गावत मति हुलसानी २७४ गवन दिन सुनत सुनैना डेरानी। श्रीमिथिलाधिप रानी॥ कुँवरि कुँवर शोभा सुखसागर निरखत सुधि बिसरानी। मेरी प्राणकुँवरि चारो लखि जीवनधन सुखदानी॥ राखेहु पलक नयन फणि मणि ज्यों लोभी धन जसजानी। ज्ञानाअलि सिय मातु अरज यह जस

तुम्हरे मनमानी २७५ ॥ खेमटा ॥ सियब्बर मानौ हमारी बतिया। रहिदिन चारि और मिथिलापुर देहौं मैं सुख दिनरतिया॥ नयनन सयन बयन मृदु कहिं कहि बँचिहौं गुनन की पतिया। खान पान मृदु गानन तानन हाव भाव रस घतिया॥ ना पतियाहु लिखाय लेहु किन छांड़ि कपट छल मतिया। ज्ञानाअलि पिय चरण शरण बिनु और नहीं तिय गतिया २७६ सिय सँग चलिहौं अवध पिय रसिया। नहिं भावै धन धाम काम कछु ह्वै हौं चरण की दसिया॥ श्री-मिथिलापुर आइ सबन पर डारि चले छबि फँसिया। प्रेम ग्रन्थि छूटत नहिं छोरे कैसी करौं मन बसिया॥ मैं तौ पगी पिय रूप तुम्हारे कोटि करौ कोउ हँ-सिया। ज्ञानाअलि अब क्यों नित मारत पिय बियोग सर गाँसिया॥ २७७॥

इति श्रीसियबरकेलिपदावलीग्रन्थश्रीपद्मबदनिअनुचरिज्ञानाअलिकृतब्याह-उछाहमङ्गलविविधछन्द यथामतिबर्णनन्नामपञ्चमशिशिरऋतु ॥ ५ ॥

अथ बसन्तपद धमारि होरी शिशिरऋतुवर्णन॥

धुरपद॥ बसन्त आयो ऋतुराज आज सजिकै स-माज साज नवल उमङ्ग रङ्ग जङ्ग दरशाइ है। बचिहै न नवला नवेलि अलबेलि बाल लाल प्यारि सङ्ग सखि रस सरसाइ है॥ बजत मृदङ्ग गान तानके तरङ्ग मिलि छुटत गुलालमूठि रङ्ग बरसाइ है। ज्ञानाअलि सुनि

सुनि श्रवण समाज सुख उठत उमङ्ग अङ्ग जिय त-रसाइहै २७८ ॥ गज़ल ॥ पहिरे बसन बसन्ती यौवन उमँग भरा । श्रीअवधनृप लाल छबि लखि मार मन मरा ॥ चीरा सुरंगी शीशपर सित पीत रँग हरा । कलगी झुकी शिर पेंच पर मोती लरैं परा ॥ ऋतुराज साज साजिके क्या क्या न रँगकरा । ज्ञानाअली जाहिर सदा जुलमी जबर्खरा २७९ खेलैं बसन्त कन्तसों सिय जू उमङ्गसों । मानौं लरैं घन दामिनी सुखमा अभङ्गसों ॥ करकञ्ज पिचकारी भरी केशरि सुरङ्गसों । बरसैं किशोरी श्याम दोउ अभिराम जङ्गसों ॥ जीवै युगल जोरी सदा सो सुख तरङ्गसों । ज्ञानाअली भा-गिन भई प्यारी के सङ्गसों २८० ॥ कवित्त ॥ देखुरी ब-सन्त आज लाजको न काज कछु, प्राणप्यारो छैलमेरी गैलठाढ़ो रङ्गसों । सखन के सङ्ग सोहै सुखमा अपार कोहै, भूपके कुमार सुकुमार जोर जङ्गसों ॥ एकतौ गु-लाल लाल दूसरो नृपाल लाल, तीसरो बसन्त लाल रङ्गके उमङ्गसों । देखिकै समाज साज लाजहूको लाज गयो, ज्ञानाआलि भायो भयो प्यारीजूके सङ्गसों २८१ ॥ ठुमरी ॥ देखो ऋतुपति आयो सजि समाज । सुनि रामभये महराज आज ॥ कियो प्रथम भेंट सियको सो-हाग दूजे तरु कुसुमित समय साज । तीजे बहु बाजन सरस बाज सुनि बिसरि गयो गृह काज लाज ॥ नित नइ बहार निशि दिन अपार सुखमा सर फूल्यो द्वार द्वार । ज्ञानाआलि पिय मन भ्रमर पाय तेहि गलिन अलिन सँग रँगमचाय २८२ ॥ लावनी ॥ आयो बसन्त

सोहागिनिके हित जाको सोहाग तिहूँपुर छायो। और है कौन कहौ जगमें जेहि को यश बेद पुराणन गायो॥ सीय सहेलि नबेलि सबै अलबेलि भरी गुण रूप सोहायो। और कि काह चली सजनी जिन राजकुमारहि नाच नचायो॥ जाकी कटाक्ष बिलास अनोखि पिया चितचोरको चित्त चोरायो। ज्ञानाअली मनभावनको गहि आजु सियाजुको भेंट करायो २८३ खेलै बसन्त सिया जु पिया सँग अङ्ग उमङ्ग महा सुकुमारी। कोटिन राजकुमार कुमारि दुहूँदिशि भीरभई अति भारी॥ केशरि रङ्ग अबीर कुमकुमा धुंधिगुलाल छई अँधियारी। एक सों एक महारँगरी पिचकारिन मारैं प्रचारि प्रचारी॥ रङ्ग तरङ्गिनि भावतरङ्ग दुहूँ दल कूल समूल उखारी। लाज भगी भयमानि अभागिनि गावहिं गीत रसीली गारी॥ भीजिगये पियके पटपीत सिया जुकि भीजि गई तनसारी। ज्ञानाअली सुख सिन्धु परी नहिं सूझ कछू चहुँ ओर निहारी २८४॥ होरी धुरपद॥ प्राणप्यारि प्यारो लाल सङ्गकी सहेलि लाल अबिरगुलाल लाल रङ्गलाल जाल है। अङ्ग अङ्ग बसन लाल सखन समाजलाल कनकभवन कुञ्जलाल देखुरी रसाल है॥ सुन्दर कर चरण लाल मोतिनकी माल लाल अधर बीरि नयनलाल करत निहाल है। बीथिका बजार लाल सरयूकी पुलिनलाल ज्ञानाअलि चहूं ओर भयो लाल लाल है २८५॥ रागधमारि॥ सलोनी सियगोरी पिय सङ्ग खेलन आई होरी। साजि सब साज समाज सखिन मिलि घेरिलियो चहुँओरी॥ कोउ मुख

अबिर मलत बरजोरी कोउ कटिपट झटकोरी । कोउ अञ्जनदृग आंजि नबेली कोउ हँसत मुखमोरी ॥ नख शिख तिय छबि साजि छबीली छबि निरखत तृण तोरी । ज्ञानाअलि कर पकरि सियाढिग देखिय या नृप छोरी २८६ रसिक पिय होरी खेलन लागे प्यारिसङ्ग अँगअङ्ग उमङ्ग न थोरी । नव घन पियतन सिय द्युति दामिनि सुख बरसत चहुंओरी ॥ अबिर गुलाल कुम-कुमा झोरिन सखियन साज सजोरी । कर पिचका-रिन रङ्गन भरि भरि लालन सखन बटोरी ॥ छूटी मूठि अबीर गुलालन लालन करि बरज़ोरी । प्यारी कर झकझोरि भगे पिय फिरि फिरि भौंह मरोरी ॥ झपटि गह्यो कटि फेंट लाड़िली धरि अंसन भुजगोरी । ज्ञाना-अलि मुखचूमि पिया को भइ गति चन्द्र चकोरी २८७॥
ग़ज़ल ॥ होरी कहर दरियाव में दिल परगया मेरा । कहि कहि थकी मानै नहीं कै बार बहुतेरा ॥ देखो जिसे सोई परा चहुँओर अंधेरा । कैसी करौं सुनुरी सखी पियने मुझे घेरा ॥ जिस जिस गली सुनुरी अली बचनेको मैं चली । तहँ तहँ मेरे दिलदार ने पहिले किया डेरा॥ मर्याद लाज कुछ नहीं क्या साम सबेरा । लैकै सखों को संगमें करता फिरै फेरा ॥ रस रँग भरी पिचकारियोंसे जीकिया जेरा । किस्से कहौं इस हालको कोई नहीं नेरा ॥ माशूकहै मेरा पिया प्यारी चरन् चेरा । ज्ञानाअली ज्वानी भरा हँसिकै मुझे हेरा २८८ फिरते हौ किस फिराक़में प्यारे मेरी गली । कलकी ख़बर भूले पिया अलियोंने मुखमली ॥ तुम हौ चतुर चूड़ामणी जाहिर

जगतबली। फिरि फिरि परौंगे पाँवमें मानौ कही भली॥ करिकै कटाक्ष नागरी पियकी उमँगदली। बिकसी सबै ललना मनो कञ्चनलता कली॥ प्रियतम तुम्हारे संग में खेलौंगि रँगरली। ज्ञानाअली दावन पकर प्यारी निकट चली २८९ होरी अदल नृप लालने क्या खूब चलाई। युग युग जगत में जगिरही हालै न हलाई॥ लड़ता फिरै श्रीअवध में तन मन को जलाई। खाता है गारी शौक़ सों ज्यों दूध मलाई॥ ज़ुलुमी जबर जानै नहीं क्या जक्क भलाई। ज्वानी भरा मानैं नहीं मर्याद गलाई॥ सुनिकै फसाद प्यारिने प्यारेको बुलाई। ज्ञानाअली बलि बलि गई लखि लाल ललाई २९०॥

रागकाफ़ी॥ लाज निगोड़िनि बैरिनि मोरी कैसे मैं खेलौं पियासंग होरी। कैसी करौं समुझाय कहौ किन लाज बड़ी की बड़ी पिय गोरी॥ लाज करौं तौ सहौं दुख दारुण रङ्ग उमङ्ग मच्यो चहुँ ओरी। ताहू पर पिय मानत नाहीं मोदिशि देखत भौंह मरोरी॥ आखिर फिरि पछितैहै अभागिनि जबलैहौ गुलाल भरि झोरी। तब कह लोक बेद मरयादा जब चलिहौ सबसों तृण तोरी॥ खेलहि फाग सोहाग भाग भरि स्वामिनि संग सखी नहिं थोरी। ज्ञानाअलि सुधि बुधि भइ भोरी देखत मधुर मनोहर जोरी २९१ क्या तुमहीं होरी मतवारे आजु लखौ पिय फैल हमारे। इहां नहीं ऋषि मख रखवारी लाल गुलाल चलावो सम्हारे॥ जो बचिहौ दृग बाणन मारे तौ सुनिये नृप राजदुलारे। कर चूरी चूनरि नकबेसरि करिहौं दृग खञ्जन कजरारे॥

कानन करणफूल बन्दी युत मांग भरौं सैंदुर पिय प्यारे। शीश धरौं चन्द्रिका मनोहर संग नचावोंगि तन मन वारे॥ लोक लाज मरयाद बेद की करम भरम सबही ते न्यारे। ज्ञानाअलि सोई सुख लूटै जाको लगत सबी मतवारे २९२ मैंतो रँगी उनहीं रँग प्यारे काहे को रँग पिचकारिन मारे। गरबीले गुण रूप रँगीले छैल छबीले रसिक दुलारे॥ लाल गुलाल को कौन काम है नयन गुलाल सरसरतनारे। यद्यपि केलि कुशल छबि आगर नागर नवल जगत उजियारे॥ कहां सिखी ऐसी बरजोरी झकझोरी बहियां नृपवारे। ज्ञानाअलि रस केलि सिखे नहिं पढ़िआवो बलिजाउँ तुम्हारे २९३ को जानै छल छैल तुम्हारे औचक दृगन गुलालन मारे। मन कछु और बचन कछु औरहि रसिक छैल यौबन मतवारे॥ तुम रघुबंश उजागर नागर हौं निमि बंश उजागरि प्यारे। जानि नवल अबलन के धोखे आजु मिले बड़भाग हमारे॥ ठाढ़े रहौ डरौ मति जिय सों रँग पिचकारि चलावो सम्हारे। ज्ञानाअलि पिय खेलि न जानौ सुनि सकुचे अतिशय हिय हारे २९४ सलोनी श्याम सों आजु खेलत फागरली। गरबीली गुणरूप रँगीली रति मद मानदली॥ मानहु तरुतमाल सँग शोभित कञ्चन बेलि मली। काजर दृगन भाल बिच सेंदुर मुखसों अबिरमली॥ देखि देखि रस केलिकलापै कुञ्जनि कुञ्ज अली। पियत युगलरस रूप माधुरी यकटक दृगन हली॥ कहि कहि थके महेश शेश श्रुति जेहि सुखको नहिं एक चली। ज्ञानाअलि

सोई सुख घर घर अवध बजारगली २९५ छबीले छैलकी कछु आजु उमङ्ग नई। खेलन फाग छबीली सियसँग कर पिचकारि लई॥ अबिर गुलाल कुमकुमा झोरिन धुंधि गुलाल छई। चलीं ललकि ललकारि नारि सब अँग अँग मोदमई॥ सखियन नाम निरञ्जन मेट्यो अञ्जन दृगन दई। छीन लई करसों पिचकारी सुधि बुधि बिसारिगई॥ भूलिगये सगरी चतुराई हारे जगत जई। ज्ञानाअलि बड़भागिनि सियजू पिय उर हार भई २९६ कहँसिखे हौ ललन ऐसी रगर झगर। क्या तुमहीं अनोखे खेलारी अगर॥ जानिपरे पिय पीर न जानो निडर सदा यश जगत जगर। भरि पिचकारि दृगन तकि मारत अबिर मलत मुख बीच बगर॥ रसिक छैल छल छाँड़ि छबीले होरि खेलौ मति रोको डगर। नाज़ुक बहियां मुरुकि गइ मेरी भीजिगई तन सारी सगर॥ कौसलराजकुमार रँगीले धूम मचाई अवध नगर। ज्ञानाअलि प्रमोद बन कुञ्जन श्रीसरयू की कगर कगर २९७॥ तिल्लाना ग़ज़ल ॥ होरही होरी अवध में रँग रँगीले लालकी। श्रीजनक नृपनन्दनी ललना नवेली बालकी १ कञ्जकर पिचकारियों से कुमकुमा गुल्लालकी। नयन की सैनों से मारे नागरी हिय शाल की २ रँग भरी गाती हैं तानैं सप्तस्वर लयताल की। लालके उर यों लिपिटि गईं ज्यों लताद्रुम मालकी ३ रङ्ग रसमाती फिरैं ललना सबै बिन हालकी। लखि छकीं ज्ञानाअली पियके रँगीले गालकी ४ चलु हिलि मिलिरँग होरि खेलिये। श्याम सुन्दर मनभावन पिय

सँग रहसि रहसि रसभेलिये ॥ हाव भाव भरि भरि पिचकारिन केशरि नीर कञ्ज करझारिन । मतवारिन सजि संग सलोनी अबिर गुलालन रेलिये ॥ डफ मृदङ्ग घनघोर शोर सुनि सुख बरसत चहुँओर । मोर मन नचत चहत जल छबिरस पीजै पिय अंसन भुजमेलिये ॥ सुनि सियबानी रँग रससानी मनमानी सब हिय हुलसानी । सजि सबसौजा सलोनी सारी ज्ञानाअलि सिय कि सहेलिये २९८ बनि बनि आई भाई नवनागरिया ॥ नवकिशोर घनश्याम राम पियप्यारे शिरसोहै टेढ़ी पागरिया । अरस परस करि रँग रसबतिया लाय अङ्ककरि शीतल छतिया रसगतिया यौबनमदमतिया रँग बरसत भरिगागरिया ॥ करि कटाक्ष सजि नैन पैन शर करत घात मृदुगात हियेतकि हँसि प्यारी प्रियतम छबि पागी बड़भागिनि गुण आगरिया । नवउमङ्ग रँग रेलनि झेली अलबेली अंसन भुजमेली देत लेत सुख सिय पिय प्यारी ज्ञानाअलि सब सुख सागरिया २९९ ॥ दादरा ॥ ललना लोनीनवल रँग बरसै । झीने पट भीने तन लपट अटपट गारिन सरसै ॥ उड़त गुलाल कुमकुमा मारत सुमन गेंद कर करसै । पिचकारी भरि पिय सिय ऊपर डारि सकत नहिं डरसै ॥ कोटिन राजकुमारिन के बिच राम श्याम घन दरसै । सिय स्वामिनि दामिनि द्युति दमकत अरस परस तन परसै ॥ जेहि सुखको चाहत शुक शारद विधि नारद हरिहरसै । ज्ञानाअलि सोई यश गावत मिलन आश जिय तरसै ३०० ॥ ठुमरी ॥ खेलै नवल किशोर

किशोरी रहसि रहसि रस होरी ॥ अबिर गुलाल रोरी झोरिन सजोरी गोरी गरबीली गुण रूप रँगीली रँग बरसत झूम झोरी। रसिक रँगीलो लाल सिय जु रँगीली बाल ललकि ललकि ललकारि दुहूं दिशि नवयौबन सम जोरी ॥ निरखि युगल जोरी ज्ञाना-अलि तृण तोरी। निवछावरि रति मदन करोरी अँग अँग उमँग न थोरी ३०१ होरी मिस बरजोरी मोरी नाजुक बहियां मरोरी। रँग पिचकारी मारी चुनरी भिजोई सारी गारी दै दै निपट अनारी निडर डरै नाहिं सोरी ॥ ललना सलोनी सारी सिय सुकुमारी प्यारी पिय प्यारे पर रमकि झमकि पिचकारिन रँग रसबोरी। ज्ञानाअलि बलिहारी प्यारी ने बजाई तारी ललकारी ललना अलबेली मसलि लालमुख रोरी ३०२ आजु ललन तुमसों होरी खेलौंगी रङ्गरली। कालिह करी बरजोरी बोरी रँगचुनरि मोरी मसलि कपोलन रोरी हौ तुम छैल छली ॥ बय सम यौबन जोरी रघुबर जनककिशोरी युग युग जियै सुखसोरी खेलै मिलि फाग भली। अबिर गुलाल उड़ावै हँसि हँसि दृगन लड़ावै भावै मन गुण गावै ज्ञानाअलि नेहपली ३०३ ॥ अड़ाना ॥ चलो खेलिये पिय प्यारी। रसरङ्ग मौज तुम्हारी ॥ पिय अवधचन्द प्रकासी। तुम चन्द्रबदनि बिलासी ॥ शुभघरी सुदिन बिचारी। तुव बिजय कबहुं न हारी ॥ सुनि सखिन बचन सोहानी। सिय बिहँसि हिय हरषानी ॥ सजिकै नवल तन सारी। गुणरूप छबि मतवारी ॥ कोउ नयन सयनन मारी।

सजि भौंह जुलुम शिकारी॥ सखि युगल जयति उचारी। कह ज्ञानाअलि बलिहारी ३०४॥ गज़ल ॥ क्या खूब है होरी रँगीली लालकी प्यारी। निशि दिन रँगे जिस रङ्गमें भूली खबर सारी॥ साजिकै छबीले छैलपर निमि-वंश उजियारी। ललना झुकी चहुँओर से करकञ्ज पिचक़ारी॥ गाती है तानै नागरी रसरङ्ग मन हारी। नाचै नचावै लालको थेइ थेइ बजै तारी॥ सुखमा त-रङ्ग रङ्गमें भीजीं सबै नारी। ज्ञानाअली सियलालपर तन मन बचन वारी ३०५॥ झँझौटी ॥ चलोरि चलोरि खेलैं फाग। पिय प्यारे की पागरँगोंगी बहुत दिनन की लाग॥ लावोंरी साजि सौंज सलोनी होरी को बड़ भाग। ज्ञानाअलि सुनि श्रवण सोहावन क्षण क्षण नव अनुराग ३०६ रँगीले दोउ होरी खेलैं आज। श्रीरघुनन्दन सिय चन्द्राननि रसिकनके शिरताज॥ पिचकारिन कुमकुमा अबीरन अरस परस तजि लाज। ज्ञानाअलि बलि बलि दम्पति पर सखियन के हित काज ३०७॥ रागकाफी ॥ आजु सियाबर होरी मचाई। कुञ्जनि कुञ्जनि रहि छबि छाई॥ अवध नगर सुख-सागर नागर नव नागरि हरषाई। अरस परस रँग रारि मारि पिचकारिनकी झरिलाई॥ मनहुं बरषा ऋतु आई॥ अबिर गुलालन लाल भयो नभ घन घमण्ड दरशाई। सिय दामिनि घनश्याम राम सँग दमकि रही मनभाई॥ कहे को रूप लोनाई॥ मृदुमृ-दङ्ग धुनि गाम तान सुनि नित नव सुख सरसाई। ज्ञानाअलि सिय ओर खड़ी लखि बार बार बलिजाई॥

कृपिण ज्यों बहु धन पाई ३०८॥ दादरा॥ पिचकारि न मारौ नवल सारी। हौ सुकुमार कुँवर दशरथ के सासु ननँद देइहै गारी॥ यह सारी अनमोल तोल नहिं हमरे पियाकी अति प्यारी। ज्ञानाअलि भोरी मति जानै चितवनि बाण बिहँसि मारी ३०९ आजु नवल रसरङ्ग मचोरी। चलो सखि देखन सोरी॥ सिय उर्मिला माण्डवींके सँग श्रुति कीरति बयथोरी। राम भरत रिपुदमन लषण सँग अबिर गुलालन रोरी॥ केशरि रँग बरसत गोरी॥ फूलन गेंद कुमकुमन मारत मलि मयङ्कमुख रोरी। धाइ धरनि झकझोरनि छोरनि पिचकारिन रँगबोरी॥ कहै जय जनककिशोरी॥ दुहुं दिशि जयजयकार सुनी सखि ललनागण बरजोरी। धाइ धरै मुख चूमि ललनको भइ गति चन्द चकोरी॥ ज्ञानाअलि लखि तृण तोरी ३१० कौन सहै नित रारि तुम्हारी। होरी के मिस लाखन गारी॥ तुम जुलुमी बरजोर रोर पिय हौं अबला सुकुमारी। भाइन के बल ढीठ भये अब अबिर गुलालन मारी॥ कालिह प्यारी सँग हारी॥ ठाढ़े रहौ भागौ मति प्यारे सुनिये सुघर खेलारी। बहुत दिनन की लाग हमारी हमहिं चुकावनि हारी॥ कौरगो को रखवारी ज्ञानाअलि छबि मतवारी ३११ माननि मान न कीजिय प्यारी। मान कही तजि चूक हमारी॥ या होरी भोरी मति मोरी छोड़ी रँग पिचकारी। भीजि गई सारी तन सारी लै बदलो बलिहारी॥ फागुन भरि देनदेगारी॥ नव उमङ्ग सजिसाज सलोनी उठिये राजकुमारी।

खेलनदे रसरङ्ग रँगीली पूरणभाग हमारी ॥ सखिन सँग न्यारी न्यारी ॥ बार बार करजोरि पायँपरि भूषण बसन सँवारी। धरि अंसन भुज नाहनेह भरि ज्ञाना-अलि छबिवारी ॥ सदा यहि खेल खेलारी ३१२ ॥

अड़ाना ॥ रस रङ्ग जङ्ग मचोरी। श्रीअवधपुर चहुँओरी॥ नरनारि नवलकिशोरी। समबयस यौबन जोरी ॥ सुखमा उमंग न थोरी। डफ मृदङ्ग धुनि घन घोरी ॥ पिय चँद चाँदनि गोरी। छबिपियै दृगन चकोरी ॥ करकञ्ज अबिरन रोरी। करिगान ताननतोरी ॥ सिय रसिकराजकिशोरी। सँग सखन सखिनबटोरी ॥ खेलैं परसपर होरी। लखि ज्ञानाअलि रङ्गबोरी ३१३ ॥

ठुमरी ॥ देखु अलि केलितरङ्गन में ॥ आज भिजाय रिझाय भाव भरि पिय अँग रङ्गन में ॥ कालिह लालमुख मसलि गुलालन अबला बिकल भई तन हालन। करकत नयन अबीर हमारे सो रिस अङ्गन में ॥ सज्यो सौंज सारी सुकुमारिन श्रीकमला बिमला-दिक नारिन। चारुशिला सुभगा सिय सहचरि भरि रँग जङ्गन में ॥ कोउ मृदङ्ग डफ बीण बजावै सारंगी सितारलयगावै। कोउ तिय पिय धरि नाच नचावै सखियन सङ्गनमें ॥ सजि करकञ्ज रङ्गपिचकारी ज्ञाना-अलि श्रीजनकदुलारी। मृदु मुसुकाय चलाय लाल पर ललकि उमङ्गन में ३१४ चलोरी चलोरी सजनी पिय सँग खेलैं होरी। अबिरगुलाल रङ्ग केशरि सजोरी गोरी ॥ नये नये रङ्ग आजु रसिक बिहारी सङ्ग। सजिकै समाज उर उमङ्ग न थोरी मोरी ॥ कालिह तौ

बचायो प्यारी पियने भिजाई सारी। आजु तो नचावो
याको देखो जोराजोरी सोरी ॥ हेमा हरषानि चारु-
शिलाजू कि बानी मानी। सुभगासयानि सारी सखिन
समाज जोरी ॥ सुन्दरी सुलोचना सलोनि क्षेमा बरा-
रोहा। पदुमसुगन्धा लियो अगर अबीर रोरी ॥ ल-
क्ष्मणा ललित नाम सकल गुणान धाम। सुखमा अपार
जाकी उपमा रमासिकोरी ॥ जनककिशोरी संग स-
खिन मचायो रङ्ग। पियको रिझायो ज्ञानाअलि कटिपट
छोरी ३१५ होरी होरी छाई रोरी अबिर गुलालसोरी।
नवल उमङ्ग रङ्ग सरिता बही है जोरी ॥ कनक निकुञ्ज
मानौ उदधि तरङ्ग गोरी। लाज मर्याद द्रुम कूल सो
समूल बोरी ॥ रघुबर सियगोरी उर्मिला लषणलाल।
माण्डवी भरत सङ्ग पियप्यारी भोरा भोरी ॥ सुन्दरि
सलोनी श्रुतिकीरति रँगीली बाल। खेलै पिय प्यारे
रिपुसूदन सों लाज तोरी ॥ भिजि श्रीकिशोरी सारी
पियजूको जामापाग। भरि है सोहाग सुख सुखमा द-
खानै कोरी ॥ हियहुलसानि कछु निरखि समाज शोभा।
ज्ञानाअलि गायो जैसी मति हुलसानी मोरी ३१६ होरि
के खेलारि गभडू कहँ चले ललन रँगीले ॥ अबिर गु-
लालन मारे करकत नयन हमारे रसमतवारे प्यारे मोरि
तोरि लगन जगीले। आवो टेढ़ि जुल्फनवारे देखो रस-
फैल हमारे खञ्जन दृग कजरारे रसिकन प्रेम पगीले ॥
आजु पिय जियरा जुड़ावो नीकेरङ्ग पाग बुड़ावो हँसि
हँसि गरवा लगावो यजिगारी गाय जँगीले। सियबर
प्राण पियारे जीवन धन नृपवारे ज्ञानाअलि भाग

हमारे मिले तुम सजन सगीले ३१७ ॥ रागपीलू ॥ हेली अलबेलो पिय सिय अलबेली। सिय अलबेलि सङ्ग ललना नवेली ॥ पिय सङ्ग खेलै फाग अचल सोहाग भाग भरि अनुराग अङ्ग अङ्ग रङ्गरेली ॥ दोहा ॥ सुमनछरी लियनागरी आगरि रूपरसाल। कुमकुम अगर अबीर कर कोउ मुख मांड़ि गुलाल ॥ पिया उर उर झेली ॥ रङ्गसो रमाई ताको नई नई गारी गाई। आँगिया भिजाई सारी करिकै अकेली ॥ दोहा ॥ बड़भागिनि पिय अङ्कमें रङ्ग रँगीली बाल। झटकि पीतपट भगि चली अली हँसी दै ताल ॥ फूली मनहुँ चमेली। ज्ञानाअलि प्यारोलाल करत अनोखो ख्याल झपटि लपटि मीड़ों रङ्ग होरी खेली ३१८ होरी झोरा झोरी मोसों कीन्ही बरजोरी। कीन्ही बरजोरी मोरी मोती लर तोरी ॥ जैसे रस लोभी भवँरा सुमन सुगन्ध पावै द्रुमन सतावै यातौ बहिंयाँ झकझोरी ॥ दोहा ॥ संग कि सहेली भगिगईं मोहिं अकेली पाय। मनमानी सोइ सोइ कियो अबिरगुलाल उड़ाय ॥ सारी अँगरङ्गबोरी। गुण गर्बीलो हेली कारो नृपवारो प्यारो जग उजियारो पिय जानै रस चोरी ॥ दोहा ॥ सिय स्वामिनि सों श्याम की मेरी हाल सुनाय। आय बचावैं तौ भली होरी बड़ी बलाय ॥ लैके सखिन बटोरी। ज्ञानाअलि बलिहारी आजु तौ पिया सों हारी कालिह रङ्ग रसिया सों करौंगी न थोरी ३१९ ॥ ठुमरीपूरबी ॥ रँगीलेलाल रँग मानी सुन्दर सुखदानी। ज्वानी जुलुम जोर बरजोरी रस चोरी जानी ॥ दोहा ॥ कर पिचकारी रँग भरी, मधुर सुधा-

बानी। हँसिहेरनि दृग बानसजि, मारत तकितानी॥ करकत दृगन गुलाल लाड़िले नाहक हठ ठानी। नाह नेह रस बस करि प्रियतम सुख सुखमा खानी॥ दोहा॥ होरी होरी मति करौ, प्रमदामदसानी। मानिनं मद भानी अमित, सखि सब बौरानी॥ रङ्ग जङ्ग जानकी रमण छबि नित नव दरशानी। ज्ञानाअलि नृपललन कपोलन मलि गुलालरानी ३२०॥ रेखता॥ अनोखे छैल छलबलिया। छबीलेलाल सांवलिया॥ आजुनृप ललन रँगहोरी। रमावों रङ्गसों गोरी॥ गरूरी गर्बतजि प्यारे। सदागुणरूप मतवारे॥ सुनावो रङ्गरसबतिया। देखावो लाल गुणगतिया॥ चलावो रङ्ग पिचकारी। भिजावो नवल तनसारी॥ देखावोंगी तुम्हेंसैले। सलोने सुघर रस फैले॥ डरौ जनि जक्त उजियारे। अवध नृप राजकेबारे॥ दियो दृगसैन हँसि प्यारी।झुकी अलि औलि मतवारी॥ नवलतरु पाय जनु बेली। लपटि गइ अङ्ग अलबेली॥ चूमि मुख हँसी दैतारी। अधर मधुपियतकोउनारी॥ रसिक रसमत्तउमगीलो। सखिन सँग रङ्ग बरसीलो॥ ज्ञानअलि लेत बलिहारी। पिया पिचकारि तकिमारी ३२१॥ रागबिहाग॥ छके हैं युगल रस रङ्ग तरङ्गन। श्रमतन शिथिल सिया नृपलालन ललना नवल लालरङ्ग जङ्गन॥ फाग चौकसों सैन कुञ्जचले रति अभिलाषा उमँग अभङ्गन। नवतरुणिन तन ताकत हित भरि फेरि अंसभुजभरे हैं अनङ्गन॥ गावत बीण बजावत सहचरि पिय प्यारी गुण नये नये रङ्गन। ज्ञानाअलि मन मोद गोद सीय बैठि

सेजपर दोउ मिलि सङ्गन ३२२ अरस परस मुखचन्द सुछबि रस। पियत दृगनपुट भरि भरि दम्पति झुकि झुकि परत जम्हात मदन बस॥ यह होरी नित नव रस सरसत बरसत सुख कहि सकत कवन अस। अरुझे पिय प्यारी अंसन भुज कुण्डल अलकन हारन हिय तस॥ मन तन प्रानन नयनन बयनन चितचयनन सुख सेज कहौ कस। ज्ञानाअलि मति मूक छकी छबी बरणि न सकत स्वाद सुखरस जस ३२३॥ रागखम्माच॥ होरी के सुखसिन्धु तरङ्गन में॥ भीजिरहे दोउ रसिक रँगीले गुण गरबीले रङ्गन में। सुन्दर श्याम राम सिय सुन्दरि ललना नवलकिशोरी सङ्गन में॥ बिच बिच श्यामा श्याम लसै बहु सुखमाबयसम जोरी जङ्गन में। ज्ञानाअलि कल केलिकलोलै दोउ मिलि सुख तोलै अङ्गन में ३२४ खेलोगी सखि श्याम सों फाग भली॥ जब देखो तब खड़ोइ रहत है रसिया रस बरसीलो मेरी गली। चलोरि चलो साजि साज लाज तजि रघुबर रसिक छबीलो छैलबली॥ रसलम्पट कपटीधरि झपटी लपटी प्रियतम अङ्ग अनङ्गरली। ज्ञानाअलि मुख चूमि भगी सियसुन्दर ललन कपोल गुलाल मली ३२५॥ झंझौटी॥ खेलै होरी भोरा भोरी वे रघुबर जनककिशोरी। सिय गुलाल मुख मलत लाल के पियमोतीलर तोरि वे॥ उरझी अलकमाल अंसन भुज नीकी बनी छोरा छोरि वे। ज्ञानाअलि झटकी पिय कटिपट पियसारी रँग बोरि वे ३२६ सिय सुकुमारि प्यारि वे जीवनप्रान हमारी॥ अबिर गुलाल

सम्हारि न मारत देखोंगी रगर तुम्हारी। रसलोभी रसमर्म न जानत लिय कर रँग पिचकारी॥ ठाढ़ेरहौ भगो मति प्यारे मारो दृगतकनि कटारी। ज्ञानाश्रलि मुसुकात रँगीलो गरबीलो मनहारी ३२७॥ खेमटा॥ होरि खेलै न देहौं नवलरसिया। यह रसजान चतुर नागर बर तुव मुख अबहीं उठी मसिया॥ तकत नवलनवला नृपलालन मारौंगी नैना कटीलीगँसिया। ज्ञानाश्रलि गुणएक तुम्हारे चितवत करत चरण द-सिया ३२८ रँगमानी न मानै बिनय बतिया॥ अवध छैल यौबन मदमातो औचक आइ करत घतिया। तन कारो सारो तिहुँपुर को सिय प्यारो क्षत्री जतिया॥ बेधीमैन नैनशर तीषे रँगभीजी कम्पतछतिया। ज्ञाना-श्रलि यह नवल बधूटी खेलि न जानै बिकल म-तिया ३२९॥ बसन्त॥ नवनागर नागरि सिय अलिया। खेलै बसन्त पियसँग रलिया। क्षणक्षण उमङ्ग सरसै सुरङ्ग बाजै मृदङ्ग डफ गृहगलिया। बरसै गुलाल सिय रसिकलाल मुग्धा बिहाल भेलैं भलिया॥ भ-पटै लपटै ललना अनन्त पायो सुकन्त सँग दलम-लिया। लखिरङ्ग जङ्ग सुखमा अभङ्ग ज्ञानाश्रलि सु-कृत सुफल फलिया ३३०॥ दादरा॥ सियबर प्यारे म-चाई रँग होरी। आजु कुँवर बर छटे छबीले लोकलाज तृणतोरी १ कनक भवन प्रमोदबन कुञ्जन अवध नगरकी खोरी। एकओर रिपुदमन लषण सँग राम भरत यक ओरी २ बजत मृदङ्ग तालसारंगी गानतान सरसोरी। उड़त अबीर कुमकुमा भरिभरि मारमची

चहुँओरी ३ एकसों एक अनेक एकसँग बयस मधुर समजोरी। झकझोरनि छोरनि करजोरनि मलि मयङ्क मुख रोरी ४ लाजभगी मर्याद छूटि गइ को आपनि परकोरी। धाइ धरै धँसि महल महल प्रति अबलन रँग रसबोरी ५ श्रीउर्मिला माण्डवी के सँग श्रुति कीरति बयथोरी। ज्ञानाअलि सियओर सलोनी ललना यूथ करोरी ६। ३३१ ॥ दादरा ॥ अलबेली नवेली नवल रसिया। दृग होरी मचाई कटीली गँसिया॥ पियश्याम गौरतन सिय लसिया। मनमीनफँसन हित छबि फँसिया॥ मुखमोरि मरोरनि मृदुहँसिया। युगचन्द प्रकाशित मनबसिया॥ शिर पागपीतपट कटिकसिया। ज्ञानाअलि कीन्ही चरण दसिया ३३२॥ रागपीलू ॥ युग युग जिये मेरा होरी को खेलारी। होरीके खेलारी मेरी सिय सुकुमारी॥ रङ्गपिचकारी मारी चुनरी भिजोई सारी धरि झकझोरी बहियां मैंतो यासों हारी॥ दोहा ॥ रसिक छबीलो छलभरो कीन्हो सखिन बिहाल। जो धरि पावों लालको करौं गुलाल से गाल॥ देखोछबि भारी प्यारी॥ पियप्यारी दोऊरँगे नइनइ रङ्गतरङ्ग। पिचकारी दुहुंदिशि चलैं बचे न एकहुअङ्ग॥ ललना भई मतवारी॥ भागि बचे पिय भागसों आजु सखनमें जाय। ज्ञानाअलि तारी दई सिय स्वामिनि रुख पाय॥ ऐसे रसिक बिहारी ३३३ देखोरी सलोनो सजनी रसिक रँगीलो। रसिक रँगीलो नीको छैलछबीलो॥ नइनइ तानै गावै जिय ललचावै भावै कर पिचकारी सोहै कमर कसीलो॥ दोहा ॥ नयना

जाके मद भरे, भौंहैं चढ़ीं कमान। ज़ुल्फैं मानौ नागिनी, डसैं सखिन के प्रान ॥ प्यारो गुण गरबीलो। शिरपै सुरङ्गी चीरा तुर्रा वो कलँगी हीरा नख शिख लोनी छबि अतिहि हठीलो ॥ दोहा ॥ कालिहकि बातैं सुनुसखी, पिय मेरे घर आय। भागिबची मैं भागसों, रँगपिचकारि चलाय ॥ तासोंभयो है जँगीलो ॥ ज्ञानाअलिपूरी भाग जो खेलै पियासोंफाग। प्यारी जूने प्यारे जूको कियो अङ्गढीलो ३३४ प्यारे मतिमारौ मेरे रङ्ग पिचकारी। रङ्गपिचकारी तेरी अजब शिकारी। अब न खेलौंगी तोसों मुखहू न बोलौं तौलौं जौलौं न रँगौंगी ज़ुल्फैं कारी अतिप्यारी ॥ दोहा ॥ सुनु प्यारे कहँलौं सहौं नितानित तेरीरारि। तुम गरबीले साजना हौं अबला सुकुमारि ॥ मैंने छोड़ी ऐसी यारी। मैंतो बलिहारी तेरी सुनिय अरजमेरी। भागौ मति पैयां लागौं लाखों देवँगगारी ॥ दोहा ॥ सियगोरी पियसाँवरो, दोउ रसकेलि प्रधान। खेलन लगेउमंगसों, सखि लखि वारहिंप्रान ॥ रङ्गचुवैतनसारी। ज्ञानाअलि पियप्यारी होरीके खलारी भारी। हौं तौ बलिहारी तिनपै तन मन वारी ३३५ ॥ लावनी ॥ आजु पियप्यारेसों होरी। खेलौंगी अतिरगर झगरसों लोकलाजतोरी ॥ झपटि उरलपटि करौजोरी। खञ्जन दृगअञ्जन आंजौंगी मुख मीड़ोंरोरी ॥ लियोसंग सौञ्ज नहीं थोरी ॥ अगर अबीर गुलाल कुमकुमा भरि झोरिन झोरी। बजहिं बहु बाजन चहुं ओरी ॥ जय मिथिलेश लली नृपलालन ध्वनि बरणै कोरी। करहिं इक एकनसों चोरी ॥ मसलि गुलाल

छीनि पिचकारी धरि भुज झकझोरी। कह्यो सोइ कियो सिया गोरी॥ ज्ञानाअलि भयो सफल मनोरथ धनि स्वामिनि मोरी ३३६ नवलरसरङ्ग कियो जारी। सिय प्यारी सुकुमारी पिय सँग अङ्ग उमँग भारी॥ नवल घन पीतम सिय गोरी। बय थोरी जोरी अति सुन्दर रसिकन सुखकारी॥ नवल तनसारी झलकारी करि नव सप्त शिंगार अङ्ग अङ्ग घेरिखड़ीनारी॥ लिये कर कञ्जनि पिचकारी। मतवारी पिय रूप रँगीली नव यौबनवारी॥ बजहिं डफ ढोल तालतारी। नाचहिं गान करहिं पिय बयनी मृगनयनी नारी॥ निरखि रस रङ्गजङ्ग भारी। ज्ञानाअलि पिय मुख मयङ्क पर तकि गुलालमारी ३३७॥ ठुमरी॥ पिचकारिन मारि भिजोय दियो दशरथ नृप लाल बड़ो रगरी। मैं सरयू जल भरन जात रहि फोरि दियो शिरकी गगरी॥ बरजोर बली नहिं मानै अली चुनरी रङ्ग बोरि दई सगरी। ज्ञानाअलि लोककि लाज भरी गृहको डगरी पियसों झगरी ३३८ रस रङ्ग उमङ्ग रँगी सगरी अगरी गुणरूप उजागरिया। झपटै लपटै पियको डपटै मिथिला की बाँकी नागरिया॥ दृगबान चलै पियमान दलै न हलै छबि प्यासी सागरिया। मुख चूमि भगै सिय संग लगै टपकै रंग चूनरिचादरिया॥ प्यारीदृग सयन दई हँसिकै दौरीं लैलै रँग गागरिया। ज्ञानाअलि अंसन बाँह धरी रङ्ग बोरिदई पियपागरिया ३३९ सिय रघुबीर खेलैं रङ्ग होरी हो। बनप्रमोदकी कुञ्जगलिन में फाग मची बरजोरी हो॥ उत रघुबंशकुमार लाल

सँग इत लाड़िलि सङ्ग सखिय करोरी हो। अरस परस रँगरेल मचीहै रङ्ग भीजे पिय नवलकिशोरी हो॥ ज्ञानाअलि बड़ भाग सखिनके जे पिय मुख चितवहिं चष जोरी हो ३४०॥ रागसोरठ॥ छैल तुम खेलि न जानौ होरी। मोरी नाजुक बहियां मरोरी॥ साँझ समय रङ्ग डारत मो पै ऐसी करत बरजोरी। कलिह लेउँ याको बदलो मैं तौ मिथिलेशाकिशोरी॥ रसिक छैल यौबनमद छाके मैं तो दिनन कि थोरी॥ ज्ञानाअलि दोउ रङ्ग रसमाते बिहरत कुञ्जन खोरी ३४१॥ रागपर्ज॥ मो पै रङ्ग न डारो सुनिय प्रियतम प्यारो। रङ्ग परत हियकंप बढ़त है भीजे बसन अँगसारो॥ हटकतहौं मेरि मानो बिनय पिय नाहित सखिन हँकारो। तौ कहँ रङ्ग कहाँ पिचकारी धरि सखि करिहैं बिचारो॥ अस कहि अबिरमांड़ि सिय पिय मुख धरि गल भुज सुख भारो॥ ज्ञानाअलि यह युगल माधुरी चित्त चोरावनि हारो ३४२ रँग रारि मचावै मोरी गयल नित आवै। रसिक छैल छलखानि न मानै यौबन जोर जनावै॥ अब न डरौंगी पिय सों लरौंगी दृगन गुलाल भरौंगी। कर पकरौंगी मुख मसलौंगी गौर गुमान हरौंगी जो पै भाजि न जावै॥ सुनि सिय बानी सखिन सोहानी सिय स्वामिनि रुख जानी। ज्ञाना-अलि अति चपल पकरि कर प्यारीके ढिग आनी पिय गर लपटावै ३४३ मेरो जियरा डेरावै। नितनइ धूम मचावै॥ जब देखो तब आगेहि ठाढ़ो नइनइ तान सुनावै। रसिक छैल छल बल बहुजानै रस रस गारी

गावै ॥ यौबन जोर मरोरत करधरि रङ्ग पिचकारि चलावै। आजु सखी पिय पकरि नचावों नागरिरूप बनावों। ज्ञानाअलि गुलाल मुख मांड्यो धरि गल भुज सुखपावै ३४४ मेरी बहियां मरोरी नवल छैलबरजोरी। बहियां मरोरी धरि झकझोरी मोतियन की लरतोरी ॥ खेलि न जानै हारि न मानै दृगन गुलाल भरो री। ज्ञानाअलि अब पिय सङ्ग खेलो होनी होय सो होरी ३४५ ॥ काफी ॥ राम रसिक शिरताज आज होरी खेलन आयेरी। सङ्ग अनुजगण सखा बिराजत धूम मचायेरी ॥ केशरि अगर अबीर कुमकुमा चहुँ दिशि छायेरी। बाजत ताल मृदङ्ग झाँझ डफ सरस सोहायेरी ॥ सुनि आगमन धाय नवनागरि सियरुख पायेरी। अरस परस रँगरेल मची अति सुख न समायेरी ॥ फाग खेलाय लगाय लाल उर तपनि बुझाये री। ज्ञानाअलि जे पगे न या सुखते पछितायेरी ३४६ ॥ रागबिहाग ॥ नवल दोउ खेलत फागअरे ॥ रघुनन्दन श्रीजनकनन्दनी अंसन बाहँ धरे। मनसों मन दृग दृगन लरावत करसों कर पकरे ॥ अबिर उड़ावत दोउ मिलि गावत गति स्वर एक करे। उर लपटावत कर छुटकावत पिय सिय फन्द परे॥ ज्ञानाअलि यह युगल माधुरी यकटक ते न टरे ३४७ ॥ काफी ॥ आयेरी दोउ होरिके खेलैया ॥ होरी के खेलैया सखिन सुखदैया। श्रीनृपनन्दन जनकनन्दनी रतिमनमथ मददलन दलैया ॥ हाव भाव पिचकारिन भरि भरि दृग कटाक्ष रंगरेल रेलैया। कनक भवन कुञ्जन कुञ्जन में धूम

मचाई छैल छलैया॥ ललना ललकिचलीं चहुँदिशि ते झपटि लपटि गुलाल मसलैया। ज्ञानाअलि लखि यह समाज सुख पिय प्यारीकी लेतबलैया ३४८ होरी धूम मची दोउ खेलत नवल उमङ्ग॥ जनक लली रघुलाल सलोने नित नव केलि अभङ्ग। नव नागरि पिचकारि नवल कर मारत तकि तकि अङ्ग॥ नवल प्रमोद बिपिन कुञ्जन में नइनइ तान तरङ्ग। अरस परस रँग रारिमची है दुहुंदिशि बाढ़यो जङ्ग॥ श्याम किशोर किशोरी गोरी स्वामिनि सिय पिय सङ्ग। ज्ञानाअलि लखि नवल छैल छबि मोमन बि-बश अनङ्ग ३४९॥ खमाच॥ होरी के खेलारी रङ्गडारो न रसिया। चुनरि भिगोई मेरी चटक छबीली पिय कहँलौ सहौंगी तेरी नित नइ हंसिया॥ धरि झक-झोरी मोरी मोतीलर तोरी प्यारे ऐसी बरजोरी रोरी भरत दृगन मोरी। ताहूपै मारत तकि चितवनि गँ-सिया॥ सुभगा सलोनी चारुशिला अति शीला अलि। सौज तयारी सारी कियो है सुन्यारी न्यारी। ज्ञानाअलि खेलै पिय प्यारी छबि लसिया ३५०॥ रागसोरठ॥ दोउ रसिक छैल रस होरी जोरी रङ्ग जङ्ग झेलै। अगर अबीर गुलाल उड़ावै रँग कुम-कुमा सम्हारि चलावै अरस परस खेलै॥ मुख सु-खमाछबि खानिन थोरी पिय मुख शशि सिय रसिक चकोरी चितवनि रंगरेलै॥ ज्वानी जुलुम जोर जिय जानी। ज्ञानाअलि प्यारी मन मानी अंसन भुज मेलै ३५१॥ बिहागठुमरी॥ पिय प्यारि होरि खेलै

पिचकारि सननन। गति गान तानले तुम तननन॥ झुकि झमकि झूमि रङ्गन कि भरनि चित चपल चतुर भुज अंस धरनि पग नूपुर बाजहि सप्त स्वरनि। कर कङ्कण किङ्किणि छुम छननन॥ मिलि बजहि ढोल डफ मृदङ्गताल नभ घन घमण्ड छाई गुलाल। ज्ञानाअलि बरषहि सुमन माल दुहुँ दिशि जय जय धुनि घुमघननन ३५२॥ ठुमरी॥ रसिक रस खेलिये होरी। अबहिं बयस थोरी॥ ज्यों चकोर चित चतुर सुधा शशि पियत दृगन जोरी। पिय मन मधुप होय रस पीजै क्या गुलालरोरी॥ बिकसी कली अली ललि लालन प्रियतम बश तोरी॥ दोहा॥ रसिक राज जानी तुम्हैं, लोकलाज छोरी। होरी मिस बोरी ललन, नवल रङ्गगोरी॥ अबला जनि जानौ पिया अस सबला कोरी। जिनके बश नाचौ सदा बिसरि गये सोरी॥ नवल नेह रङ्ग रसकी बातैं केशरि रङ्ग घोरी। ज्ञाना-अलि भरि भरि पिचकारिन मारत सिय मोरी ३५३॥ रागकाफी॥ पिय चित चौगुनो तो सों होरी खेलन की लाग। चलिये बेगि बिलँब नाहिं कीजै तेरो अचल सु-हाग॥ मान न कीजै नवल लाड़िली खेलिय पिय सँग फाग। जो कछु भई जान दे प्यारी क्या सोवै उठि जाग॥ जो जिय होय सो माँगु लाड़िली तू तौ भरी रस फाग। या होरी सुख साज तुम्हैं बिनु ज्यों बसंत बिनुबाग॥ तज्यो मान मिथिलेशनन्दनी जग्यो स-खिन को भाग। ज्ञानाअलि ललि लालन मिलि दोउ क्षण क्षण नव अनुराग ३५४ लाड़िली लालको होरी

खेलन को चितचाव। दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा अँग अँग उमँग अमाव॥ नयनन सयन बयन मृदुगानन तान तरङ्गन छाव। झक झोरनि कर जोरनि छोरनि चञ्चलचपल सुभाव॥ पिचकारिन फुलगेंद अबीरन धुंधि गुलालन छाव। पियत युगल मुखचन्द सुधा छबि नव उमङ्ग दरशाव॥ नये नये रङ्ग अनङ्ग जङ्ग बसि पियमन प्यारि नचाव। ज्ञानाअलि बिनु छके माधुरी फिरि फिरि मन पछिताव ३५५ मति रोको हमारे गृहकी गैल। पिय जानी तुम्हारे हिय की फैल॥ होरी रस चोरी बर जोरी झक झोरी बहियां हो छैल। अब न बचौगे रसिकलाड़िले कुञ्जकुञ्ज उपबननशैल॥ बहुत दिननकी लाग हमारी आजुमिले पियजगत जयल। जानिपरी यह बानि तुम्हारी पावोगे फल अपनो कयल॥ मोड़ि मांड़ि मुख लाल गुलालन चीरि फारि तन सुरँग चैल। ज्ञानाअलि सुखमा समुद्र धँसि धोवोंगि निशि दिन मन को मैल ३५६ ऐसे चतुर खेलारी सों कौन जोर। जाके रोम रोम छल बलन थोर॥ औचकहि मारिरङ्ग भागि जात। यौबन मद मातो नवल गात॥ मुसुकात खड़ो तकि दृगनकोर॥ इक नागरि प्यारी रुचि बिचारि। पिय निकट जाय बोली प्रचारि॥ अब सजग रहौ मनहरन चोर॥ प्रियतम मन उरझयो तियाकि ओर। सिय झपटि लपटि अँग रङ्ग बोर॥ ज्ञानाअलि कटि पट झटकि छोर। पिय सकुचि रहे मन मगन मोर ३५७॥ काफी॥ होनी होय सो होय सखी मैं तौ पिय कि

पगरिया भिजावोंगी। पगिया भिजावोंगि नीके खि-
झावोंगि अपनी ओर बचावोंगी ॥ खञ्जन दृग
अञ्जन शिर सेंदुर नकबेसरि पहिरावोंगी ॥ बेंदी
भाल कपोलन रोरी कुमकुम मारि भगावोंगी। कर
कङ्कण चूरी पगनूपुर शिरसों चुनरिया ओढ़ावोंगी ॥
एतेहुपर जो हारि न मानै तो धरि सङ्ग नचावोंगी।
अबिर गुलाल लाल मुख मीड़ो धरिगल भुज सुख
पावोंगी ॥ ज्ञानाअलि जो औसर चूकौं तौ फिरि फिरि
पछितावोंगी ३५८ मैं तौ सदा तुवरूप रँगीलो काहे
को नित डेरवावत प्यारी। नख शिख सुभग अङ्ग अङ्ग
मेरो एक पगरियापै चोट तुम्हारी ॥ कीजै सफल मनो-
रथ मनको आजु बचाओ छबीली सारी। मतवारी
गुणरूप रँगीली आजुखेलाय बजावो तारी ॥ अबला
नाम सबल की बातैं प्रकट करौ किन प्राणपियारी।
पराकि गई तुम सखियन के बल छोड़ि समाज लरौ
किन न्यारी ॥ अँग अँग रङ्ग उमङ्ग रँगे दोउ बरसत
रङ्ग गुलाबी बारी। ज्ञानाअलि भरि भरि पिचकारिन
अबिरगुलाल भई अँधियारी ३५९ जो मैं रामतौ
प्यारि जुके संगमें सखियन सहित रमावोंगो। सखिन
रमाय रमौं तिनके संग चुनि चुनि गारी गावोंगो ॥
अबला प्रबल भई मोहूंसों पुरुषोत्तम न कहावोंगो।
बहुतदिननकी लाग हमारी एकहि बार चुकावोंगो ॥
भरतलाल लाड़िले लषण रिपुसूदन सखनसजावोंगो।
ज्यों बटेरिपर बाज चोट करि एकहि एक लरावोंगो ॥
जो जगदीश सहायकरै कछु बिजय निशान बजावोंगो।

ज्ञानाअलि नतु प्राणप्रियासंग कबहुं न रारि बढ़ावोंगो ३६० ॥ रङ्गपञ्चमीपद ॥ रागगौरी ॥ किशोरी होरी खेलै नवल किशोर। रङ्गपञ्चमी रङ्गभरेदोउ घनदामिनिद्युति जोर ॥ बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ जनु गरजत घन घोर। केशरि अगर अबीर कुमकुमा रङ्ग बरसत झम झोर ॥ आबिरगुलालन लालभयो नभ रङ्ग रस बढ़यो न थोर। दोउ दल प्रबल बिलोकि हरषि उर ज्ञानाअलि सिय योर ३६१ ॥ रागकाफी ॥ लालजी खेलत होरी सियसङ्ग भले ॥ अङ्ग अङ्ग सुखमा समुद्र सखि पिय प्यारि रङ्ग रले। पिचकारिन अबीर फुलगेंदन मुखनि गुलाल मले ॥ श्यामा श्याम श्याम श्यामा ह्वै रङ्गन भीजिचले। श्रीप्रमोदबन लता ललित द्रुम सरस सुफूलिफले ॥ नवला नवल लाड़िली लालनकेलि निकुञ्जहले। होरी रङ्गजङ्ग मदमाते नित यहि केलि पले ॥ करि असनान बिमल सरयूजल तन श्रम सबहि दले। पहिरि बसन भूषण नवीन तन सुमनन मालगले ॥ दम्भकपट पाखण्डदोष दुख होरी संग जले। सुखसमाज शोभानित नइ नइ रतिपति छबिहि छले ॥ श्रीसरयूतट करि बिहार ललनन कर लाल लले। ज्ञानाअलि सोहाग बर पावों भक्ति सुदृढ़न चले ॥ ३६२ ॥

इति श्रीसियबरकेलिपदावलीग्रन्थश्रीपद्मबदनिअनुचरिज्ञानाअलिकृतबिबिध होरीबिलाससुखसमाजबर्णनंनामषट्ऋतुउमङ्गषष्ठं शिशिरऋतु ॥ ६ ॥

अथाष्टकालपदसेवा समयउद्दीपन ॥

रागगौरी ॥ रसिक सुखभवन चले सियरौन। साँझ समय सानंद सखिन सँग चढ़ि बिमान छबिछौन ॥ साजि रथ बिबिध बाजि गज बाहन चतुरँग दल मद-दौन। कोटिन छैल छबीले चढ़ि चढ़ि सब उपमा गति गौन ॥ कनक भवन सुखमा समुद्र बर रत्नाकर कहि तौन। रतनकेलि नित नइ नइ प्रकटत रतन चौदहौ कौन ॥ श्रीजानकी महल शोभाकर थकित गिरा मति मौन। चौदह भुवन लोक तिहुँपुर सुखसम्पति चाहिय जौन ॥ मिलत फिरत नर नारि अवधपुर खेलि धुर-हरी पौन। जयदुन्दुभी गानधुनि सुनि सुर सुमनमाल बरसौन ॥ षटऋतुद्वादशमास दिवसनिशि जो यहि सुखसरसौन। ज्ञानाअलि तौ कर्म धर्म सब ज्यों ब्यञ्जन बिनु लौन ३६३॥ रागसोरठ ॥ रघुबर सुघर शिरोमणि प्यारी। रोम रोम पर कोटि मदनराति निवछावरि करि डारी ॥ सर्वानन्द भवन भाइन सँग सखन समाज स-वाँरी। सियसखियन सँग चढ़ि सुखपालन ब्यारू स-मय बिचारी॥ गज तुरंग बाहन बहु चढ़ि चढ़ि जननी भवन तयारी। धौंसाधुनि घनघोरशोर सुनि बहुनकीब ललकारी ॥ पहुँचे भवन पितामातन मिलि सिय सा-सुन मिलि सारी। घरी पाँच बीते कौशल्या नितकर-वावत ब्यारी ॥ मोहनभोग सोहारी सुन्दर सरस बि-बिध तरकारी। मालपुआ तसमई सोहावन भरे कनक बरथारी ॥ पावत केलि करत भाइन सँग कहत स्वाद

सुखभारी। करिशबरी फल सुरति छके सब दोउ स-
माज न्यारि न्यारी॥ कञ्चन झारी श्रीसरयूजल प्या-
वत मातुदुलारी। शुचि आचमन कराय मगन मन
पान खवावत नारी॥ करि आरती निछावरि मणिगण
पुनि पुनि लै बलिहारी। सुमन सुगन्ध मालबहु भूषण
पहिरावत महतारी॥ दै अशीश सुतबधुन सोहागिनि
नखशिख सुभग निहारी। बिदाकीन सनमानि सबन
को निज निज महल पधारी॥ गत युग याम यामिनी
दोउ मिलि श्यामा श्यामबिहारी। ज्ञानाअलि बलि
बलि स्वामिनिसँग जगी सुभाग हमारी ३६४॥ रागबिहाग
पहिलापद॥ रसिक पियरूप सुधा मदमाते। बैठे सुमन
सेज प्यारी सँग दोउ छबि अतुल तुलाते॥ सखियन
तौलि तराजू मनभरि अधिक न कोउ लखाते। है कछु
अधिक प्रिया प्रियतम लखि बार बार बलिजाते॥
आलस रस बस दृगन खुमारी झुकि झुकि परत ज-
म्हाते। करिआरती सैन छबि आगरि निरखत दृग न
अघाते॥ दैदैपान बिदाकरि सहचरि सोइरहे मुसु-
काते। अलिगण गावत यन्त्र मधुर धुनि सुनत श्रवण
मनभाते॥ यह दम्पति बिलास सखि जीवन ज्ञानाअलि
सोइपाते। सियबर कृपा कटाक्ष रसिक गुरु जाको
राहबताते ३६५ प्यारी प्रियतम दृग अलसाने। उनिदे
मनहुं सांझ सरसीरुह रतनारे मदसाने॥ क्षणमूंदत
क्षण खोलत नैना सखियनं रुचि पहिंचाने। सुमनसेज
मण्डप सुमनन रचि लखि सिय पिय मनमाने॥ अंसन
भुजधरि बैठि सेजपर मन्दमन्द मुसुकाने। ज्ञानाअलि

लखि यह दम्पति छबि धन जीवन निज जाने ३६६ रागभैरव ॥ यामिनी यामरही बड़भागी श्रीजानकि सखि जागी ॥ गाय उठीं भैरवँ सुराग सब पिय प्यारी गुण पागी। मुख मज्जन अस्नान अङ्ग अँग सजहिं शिंगार सोहागी॥ हिलिमिलि सर्वेश्वरी महल चलि जाय जाय पगलागी। सेवासमय सजगललनागण युगल केलिपट तागी॥ सखियन सहितचारुशीला अलि मन्दमन्द गति बागी। जाय महल पहुँची ज्ञानाअलि उत्थापन पद रागी ३६७ जगौ नृपनन्द चन्द चितचोर छबि अमृत रसबोर॥ अलिगणभीर अधीर दरशबिनु अरुण उदै भयो भोर। शशिकर निकर क्षीन तारागण गगन बिमल चहुँओर॥ सुनि उठि बैठि पियाप्यारी दोउ चितै कृपादृगकोर। निरखि युगल छबि छकी छबीली लगनजगी जियजोर॥ जुरि आई सुख सेज निकट अलि द्युतिदामिनि नहिंथोर। ज्ञानाअलि घन तड़ित घेरि ज्यों नचत मुदित मनमोर ३६८ लाड़िलि लाल जगे जग जीवन पियप्यारी दोऊ छबि जाल। मनहुं तमाल तरुनतरु के सँग लपटी कनकलता सियबाल॥ छूटी केश अलक अरुझानी बिथरिगई मोतिन मणि माल। अंसन भुजआलस रसमाते मधुरमधुरबोलत हियशाल॥ अरसपरस मुखचन्द बिलोकत क्याबरणौं चितवनिसुख हाल। ज्ञानाअलि रसिकनजीवनधन अधराधर मधुपियत निहाल ३६९ करैसखि मङ्गल बिधि सुबिचारि मङ्गल समय निहारि॥ कनक कलश मङ्गल सरयूजल भरि लयाईं अलि चारि। दूबहरित दधि

यव अंकुर नव श्रीतुलसीदल धारि॥ भरि मणिथार युगल अलिसुन्दरि करकञ्जनि सुकुमारि। कोउ मधु-पर्क खवाय गाय मृदु कोउ नाचत देतारि॥ बाजहिं बीण मृदङ्ग मधुरस्वर जय जय सुमुखि उचारि। सुमन बरषि ज्ञानाअलि बहुसखि लेत खड़ी बलि-हारि ३७० सलोने दोउ प्रात चले मुसुकात। उतरि पलँगसों मन्दमन्द गति लटपट परत चरण जलजात॥ द्वादश कुञ्ज समय सेवासुख देत सखिन पितु मात। सखन समेत दास पुरबासी सबके घरघर खात॥ श्री मिथिलेश लली नृप लालन सियगोरी पिय श्यामल गात। ज्ञानाअलि कुञ्जन कुञ्जन में जहँतहँ युगल रसिक दरशात ३७१॥ रागविलावल॥ एरिदोउ रूप सुधा मदमाते। श्रीरघुबंश उजागर नागर सियनागरि सँगराते॥ बिछी चौक चौकी चन्दनकी बैठि मन्द मुसुकाते। शिथिल अङ्ग शिरपाग लटपटी दतुइनि करत सोहाते॥ बिबिध स्वादफल सुधासरसरस ज्यों शबरीफल खाते। अर्घ्यआदि उपचार सोरहौ करि बिनती मृदुबाते॥ याम अर्द्ध दिन तेहि निकुञ्ज रहि कुञ्जेश्वरि यशगाते। मज्जन कुञ्ज चलेसँग सहचरि ज्ञानाअलि मनभाते ३७२॥ धुरपदभैरवी॥ दोउ सुकुमार अङ्ग ललना नवेलि सङ्ग मज्जन निकुञ्ज आय करत निहालहै। सुभग तड़ाग बाग अजिर बिशाल मध्य चहुँओर महल जटित मणिजालहै॥ सुन्दर सलोने श्याम सुभगा सलोनि बाम अङ्ग अङ्ग भूषणबसन लाल लालहै। ज्ञानाअलि ललकि लड़ैति लखि केलि कुञ्ज

बैठि प्यारेसंग सारि सुखमा रसाल है ३७३ ॥ भैरवी ॥
मज्जनकरत लाल पियप्यारी । रघुबर सुघर सिया सुकुमारी ॥ अन्हवावहिं नवनागरि आगरि गुणसागरि
झरकञ्चन झारी । शुचि सुरभित सरयूजल निर्मल
निज निज कुञ्जन न्यारी न्यारी ॥ लयपयफेन सरिस
कोमल पट अँग अँग पोंछति सभय सवाँरी । पहिरावत पट पीत पिया कटि सियतन गौर श्याम रँग
सारी ॥ अँग अँग भूषण बसन मनोहर सजि कमलाबिमलादिक नारी । बिछी फरस गद्दी तकिया धरि चौपरि खेलत तनमनवारी ॥ भूलि गये दोउ खान पान
सुधि याम एक दिन चढ़्यो निहारी । ज्ञानाअली कलेवा
कुञ्जहि चले क्षुधित सखि प्रेम बिचारी ३७४ ॥ धुरपद ॥
चढ़े सुखपाल लाल लाड़िली कलेवा कुञ्ज चले जात
भूखे दोउ सखियन भायकै । नागरी अपार सौंधरक्षिका
सुअग्र आय चली है लवाय ज्यों चकोरि चन्दपाय
के ॥ कनक अगार द्वार रचना न जात कहि तनेहैं बितान चारु रचना बनायकै । ज्ञानाअलि नवला लेवाय
ल्याई कुञ्जभौन भावसों भरी है भले पाहुने सुपाय
के ३७५ सियबर सुघर कलेऊ कीजै । अधराधर मधु
मधुर सुधा सम रहसि रहसि प्यारी सँग पीजै ॥ भरि
ल्याई मणिथार मनोहर ब्यञ्जन बिबिध मधुर रस
भीजै । बरफीतर गुलकन्द जलेबी घेवरबर अधवट
पथलीजै ॥ बीजपाग खाझादिक रुचि रुचि पाय
पवाय सखिन सुखदीजै । पिय प्यारी मिलि पाय
सराहत तन मन घृत ज्यों प्रेमपसीजै ॥ युगल चन्द

मुख धोय पोंछि पट पान खवाय गायगुण जीजै। ज्ञाना-अलि ज्यों कृपण गिनत बित त्यों सेवा धन हृदय धरीजै ३७६ युगल चन्द छबि दृगन निहारी। श्यामा श्याम सिंहासन सुन्दर बैठे सुमन कञ्जकर धारी॥ श्याम पीतरँग बसन मनोहर गौर श्याम तन जुलफैं कारी। अरुण कञ्ज दृग बाण भौंह धनु चितवनि जुलुम चलनि मतवारी॥ बिबिध हास कोउ गाय मधुर स्वर बजत जन्त्र मृदु नृत्यत नारी। डेढ़याम दिन चढ़्यो कह्यो अलि रीझि रसिक सिय सजी सवारी॥ चौंसठि आठ सोरहौ बत्तिस चारि यूथ सखि न्यारी न्यारी। चली शिंगार कुञ्ज ज्ञानाअलि युगल नाम जय जयति उचारी ३७७॥ धुरपद॥ स्यन्दन सवाँरि प्यारि सिय सुकुमारि संग रसिक शिंगार सुख समय सिधायहैं। बिनहिं शिंगार मुनि नारि भय देखि सब आपुही शिंगारके शिंगारबनिआयहैं॥ करत निहाल लाल लाड़िली निकुञ्ज पुञ्ज निरखि खड़ि सुबाल दृगन अघायहैं। ज्ञानागुण आगरी सुनागरी बिचारै सब करिय शिंगार पिय प्यारि रुख पायहैं ३७८ तखत बिशाल लाल जटित मणिनजाल बिछिबिछि बिछैहैं बिछौना सुअमोलहैं। भूषण बसनके अगार तौ अपार भरे सुन्दर सुरङ्ग रङ्ग उपमा अतोल हैं॥ सियकी सहेली सौंध रक्षिका नवेली सब चम्पकसी फुलिलखि बिकी बिनमोल हैं। ज्ञानाअलि सहित समाज सो बिराजै तहँ लिये सब सौंज अलि ठाढ़ी टोल टोल हैं ३७९ लहँगा घुमारो घेर सारी तापै प्यारी श्याम

प्यारी जूकि प्यारि मानौ श्यामरङ्ग बोरि हैं । चरण अंगुरी चारु बिछिया रमकदार बजत मंजीर मिलि प्रियमन चोरि हैं ॥ कञ्जकर चूरी चारु कङ्कण किङ्किणि कटि नासिका बुलाक नथ मोतिन अँजोरिहैं । ज्ञानाअलि कानन करणफूल बन्दि बेंदी ताकेतरबुन्दन सुबुन्दकियो गोरिहैं ३८० अलकैं सवाँरे नारिकारि प्यारि नागिनि सी अतर सिंचाइ पालि प्यारे पिय काज है । अँगुरिन पोर पोर छल्ला आरसी जड़ाऊ नग अनमोल सिय सुखमा को साज है ॥ नखन प्रकाशते प्रकाश तिहुँपुर जानो चन्द्रिका प्रकाश मन्द चन्दको समाज है । ज्ञानाअलि ताको सखि करत शिंगार चारु चातुरी सफलहेत सखिनको राज है ३८१ सिय सुकुमारि अङ्ग अङ्गन अनेकरङ्ग सजिकै पियाके अङ्ग करत शिंगार है । प्यारे शिर पगिया जरकसी सुरङ्ग रङ्ग तुर्रा औकलंगि झुकिरही शोभासार है ॥ तिलक बिशाल भाल करत निहाल लाल सुखमा रसाल श्रुति कुण्डल सुबारहै । ज्ञानाअलि अञ्जन सुखञ्जन दृगन सारि खड़ीहै निहारि नारिपरी छबिजारहै ३८२ पङ्कजसे पाँयनमें पनहीं प्रकाश मानौ तारागण नग नख चन्द्रमा लजात है । पीरा पायजामा कटि पटुका गुलाबीरङ्ग जामा जरकसीको सलोनो श्यामगात है ॥ कण्ठा कण्ठ नासिका बुलाक पहिराय सखि मोतिन की माला सो बिशाला दरशात है । अङ्गद पहुँचि बाहु करज मुदरि चारु ज्ञानाअलि सजिकै सुभग दोउगात है ३८३ आरति सखिन शिंगार

सजोरी । पियप्यारी छबि चन्दचकोरी ॥ बैठे सुभग सिंहासन प्रियतम सजल जलद सिय दामिनिकोरी । बरसत सुधामाधुरी बिहँसनि भरिभरि पियत दृगन पुटगोरी ॥ बिबिध स्वाद मेवा मनरोचक लियेखड़ी मणिथार भरोरी । दाख बदाम छोहारा किस्मिस गरी सरस मिश्री रसबोरी ॥ पाइश्यामश्यामा सँगशोभित नीकी बनी मनोहर जोरी । अतर पान दै गाय मधुर स्वर बजहि यन्त्र बहु नृत्य रचोरी ॥ सुमनमाल पहि-राय नागरी आरति करि बलि बलि तृण तोरी । लै आदरस देखावत सहचरि ज्ञानाअलि जय जयति मचोरी ३८४ ॥ धुरपद ॥ प्यारी मुखचन्द पिय चतुर चकोर नयन पियत रहत नहिं कबहुं अघातहै । भई है निहाल बाल युगल बिलास देखि घरिसात चढ़यो दिनसाजि नवसातहै ॥ सभाकेलि भवनकि सुखमा न जात कहि मनको अगम बाणी कहत डेरात है । ज्ञाना-अलि देव नर नाग औ गन्धर्बकन्या साजिकै समाज तहँ प्रथमहिं जात है ३८५ ॥ रागसारङ्ग ॥ सभा भवन सुख समय तयारी अवध ललन ललना सिय प्यारी । लाल पिया सुखपाल पालकिन चारु शिलादिक सहचरि सारी ॥ अपरसखी रथयान बिमानन चलीं सङ्ग सब राजकुमारी । दोउ समाज प्रमदा सरिसुन्दरि सभाभवन रतनाकर भारी ॥ मिलि बगमेल चलीं सङ्गम हित पिय प्यारीसँगन्यारी न्यारी ॥ सुभगदिब्य सिंहासन सुन्दरि बैठारे सब सौंज सवाँरी । चमर छत्र ब्यजनादिक दुहुं दिशि बिबिध यन्त्र तन्त्रादिक धारी ॥ अष्टखण्ड सुख

सभा कचहरी बैठीं तहँ जो जहँ अधिकारी। आठ प्रथम सोरह पुनि बत्तिस पुनि चौंसठि निमिबंश दुलारी॥ चारिखण्ड जे अपर कहे तहँ बैठीं देश देश बरनारी। सात द्वीप नवखण्ड तिहूंपुर सुरनर नाग नृपन की बारी॥ देश देश की नकल गानकरि लै लै युगल चन्द बलिहारी। नाचन लगीं झुण्डझुण्डन मिलि हावभाव करि बैठि जोहारी॥ सजीआरती मणिनथार बहु मनहुँ मची यह दिब्य देवारी। ज्ञानाअलि पुष्पाञ्जलि जय जय करहिं खड़ी बड़भाग हमारी ३८६ चेरी चतुरि चारु चलिआई। पाकशालसों सुभग सहचरी भोजन करन बोलाई॥ आइ खड़ीकर छड़ी छबीली कहि मृदु बचन जनाई। दिवस यामयुग चढ़योरह्यो कछु सुनिय लाल रघुराई॥ पाक प्रबीणा नाम प्राणप्रिय सिय प्यारी रुखपाई। करि बरखास सभा निकुञ्जते चले निशान बजाई॥ भारी चौक बिशाल कक्षतहँ खण्ड खण्ड सुखदाई। ज्ञानाअलि ललना समाज युत प्रथम ल्याय बैठाई ३८७॥ चञ्चरीकछन्द॥ देखो नृप अवध चन्द्रचन्द्राननि सीयसंग आये मिलि पाकशाल सखियन सँगसोहैरि। चन्दन चौकी बिशाल बैठे सिय रसिक लाल निरखत छबि दृग निहाल ठाढ़ी मुख जोहैरि॥ व्यञ्जन बिधि चारु चारि षटरस सखियन सवाँरि परुसत हियरुचि बिचारि चातुरि चितपोहैरि। पावत पिय प्यारि सङ्ग निरखत ललना उमङ्ग ज्ञानाअलि जल पियाय रसबस मनमोहैरि ३८८॥ झारिन॥ झारी भरि सरयुनीर सुरभित शुचि सुभगसीर सखियन अँच-

बाय सुरुचि शशिमुखकर धोयेरि। स्रक् सुगन्ध अतर घ्रान प्यारी सँग पायपान दरपण लखि मुखमयङ्क चषचकोरपोहैरि॥ चमर ब्यजनादि टहल ठाढ़ी अलि-सैन महल गावत सारङ्ग राग सुनत श्रवण मोहैरि। ज्ञानाअलि अति उमङ्ग झमकि चले सैन कुञ्ज देखत सुखसेज सुमन दोउ मिलि सुख सोयेरि ३८९॥ राग धनाश्री॥ शयनभवनशोभा कछु न्यारी। कहत न बनै जान जो देखै जापर कृपादृष्टि सियधारी॥ युगल चरण कोउ मृदुकरकञ्जनि चापति प्रेमभरी सुकुमारी। कोउ गावहिं मृदुयन्त्र बजावहिं कोउ ठाढ़ी मुखचन्द निहारी॥ कोउ बीटिका खवाय चन्दमुख निजनिज कुञ्जचलीं सबनारी। देखत फिरै चित्र रचना बहु कुञ्ज कुञ्ज सुखसेज सवाँरी॥ सोयरहीं सब जहँ तहँ सहचरि प्रियतमछबिछाकी मतवारी। चित्रकेलि दम्पति कलोल लखि ज्ञानाअलि पिय सुरति सम्हारी ३९० सोय जगी सिय सहचरि प्यारी। उत्थापन सुख समय जानि मन सेवा सजग सबै सुकुमारी॥ मुख प्रक्षालि अँगराग मनोहर साजि साजि भूषण बसन सवाँरी। चन्द्रकला बिमला कमलाअलि चारु शिलादिक सौंजतयारी॥ कनक थार पकवान बिबिध धरि मोदकसेव सलोनो न्यारी। सुमनमाल कोउ पान अतरबर कोउ सुरभित सरयू शुचिबारी॥ जाय गाय गुणरूप माधुरी रागश्री स्वर सरस सुधारी। ग्राम तीन मुर्छना सात स्वर ज्ञानाअलि सितार लयकारी ३९१ सुन्दर सुघर शिरोमणि जागौ। प्रियतम प्राण जिवन धन सियके मधुरकेलि रसपागौ॥

लिये सौंज ठाढ़ी ललनागण जो चाहो सो माँगो।
अवधचन्द चन्द्राननि प्रियसँग सखियन गोहन लागो॥
सुमन कुञ्ज जलकेलि तड़ागन मतमतङ्ग गति बागो।
युगल चन्द छबि नील पीत पट ज्ञानाअलि मन तागो
३९२ जगे यामदिन रहे सोहावन। बैठे सुमनसेज बश
आलस सियप्यारी रघुबर मनभावन॥ कुञ्जाधिपा ले-
वायगई तहँ जहँ सुखसेज महल छबि छावन। निरखि
छकी सुखमा अपार अति अरुझी अलक लगी सरु-
झावन॥ कोउ भूषण अँग बसन सवाँरहि कोउ नागरि
लागी अँचवावन। कोउ पकवान थारभरि ल्याई
लखि सुभगा अलि लगी खवावन॥ जल पियाय स्रक्
सुमन सुगन्धित अतर घ्राणहिय रससरसावन। ज्ञाना-
अलि गावहिं उमङ्ग भरि नटन लगी गहि पिय पट दा-
वन ३९३ सुमन शिंगार कुञ्जसुधि आई। जहँ जलकेलि
तड़ाग बागबन सुमन बाटिका निकटसोहाई॥ मनहुँ
बिरञ्चि रची निजकरबर मधुर सुभग सोपान बनाई।
रतन रचित मणि जटित मनोहर मध्य महल सिय
पिय सुखदाई॥ फूले बिबिधरङ्ग सरसीरुह फँसे भवँर
रस मत्त लोभाई। पिय प्यारी रुखपाय सङ्ग सखि चढ़ि
चढ़ि नावन केलि मचाई॥ भूषण बसन सम्हार अङ्ग
नहिं कूदि परी जल थल ज्यों धाई। ज्ञानाअलि
ललनन कलोल लखि फांदी सिय पिय हिय हरषाई
३९४ जलबिहार मिस रारि मचाई। पैरि पैरि जल डूबि
पकरिपग सुमन कञ्जलै मारति धाई॥ सियरुख पाय
अली चपलावलि पियघनश्याम घेरि लियो जाई। कर

पिचकारिन सुमनगेंद लै यह रसरारि देखि मनभाई॥ अमित केतुकर राहुशिरयशिर जल अकाश पिय शशि जनुपाई। भई रारि जनु सियरमणी हित गुप्तखण्ड थकि रहे लुकाई॥ अन्तर्द्धान भये सखियन लखि निकसि सबै टूटे अकुलाई। कुञ्ज कुञ्ज जल थल बन उपबन सुमन बाटिकन मन चितलाई॥ सखियन बिकल जानि आये पिय भीजे बसन मन्द मुसुकाई। ज्ञानाअलि प्रियतम प्यारी मिलि चली निदाघा कुञ्ज लवाई ३९५ झीनेपट झीनेतन सोहै। ज्यों घन कोट ओट दलि दिनकर छिटकि छटा छबि किरणि बिपोहै। भये निहाल लाल ललनन लखि तेहिक्षणकी सुखमा को जोहै॥ नहिं अधिकार बिना सखियन के की प्रियतम जिन हाथ बिकोहै। कुञ्जाधिपा लाय पट भूषण अति सुन्दर देखत मनमोहै॥ पहिरि लाल प्यारी प्रिय सहचरि रङ्ग रङ्ग लखि मन अटकोहै। भारी चौक बेदिका मणिमय जनु बिरञ्चि निज हाथ रचोहै॥ लता बितान सुमन द्रुम फूले बिछी फरस कुरसी बहुतो है। बैठे प्राणप्रिया सिय प्यारी सुकुमारी अँग अङ्ग लसो है। ज्ञानाअली शिंगार सुमनमय करन लगी नखशिख सरसो है ३९६॥ घनाक्षरी॥ सियजूकी सारी जुही सुमन सवाँरी प्यारी, पियकटि पटुका चमेली पीत प्यारे हैं। पगिया गुलाबकी सुचन्द्रिका चमेली श्वेत, कुण्डल झुमक कुन्द कलिन सवाँरे हैं॥ आपुहि

रँगीले नैन अञ्जन रँजीले चारु, खञ्जनसे चञ्चल अलक अतिकारे हैं। ज्ञानाअलि नासिका बुलाक पीत चम्पकली, अधर सुबीररस सरव्यता पसारे हैं ३६७
प्यारी जुकि प्यारी कारी नागिनि अलकमानौ, सखिन सवाँरि नीको अतर लगायकै। बन्दिबेंदी नासिका बुलाक नथ फूलनके, कलिन सवाँरि मांगमोतिन जगायकै॥ कण्ठा कण्ठ चम्पकली बाजूबन्द अङ्गद सु, चूरि कर कङ्कण सुरुचि पहिरायकै। ज्ञानाअलि आरसि अँगूठी सुसलोनेकर, बिछिया नुपुर कटि किङ्किणी सजायकै ३६८॥ तिल्लाना॥ सुन्दरि सिय श्यामा श्यामरी। बैठे सुमन शिंगार किये दोउ जगजीवन सुखधामरी॥ जनकलली नृप अवधदुलारे छबिगुणरूप अङ्गअँगभारे सँग ललना गणगुण गरबीली दमकैं ज्यों द्युतिदामरी। सुन्दर श्याम गौर मृदु जोरी वारि वारि रति मदन करोरी तृण तोरी नखशिख लखिगोरी बय थोरी अभिरामरी॥ नवललाल लाड़िली सलोनी अवध ललन ललना प्रियलालन गुण आगर नागर छबिआगर ललितलाल प्रियनामरी। भावभरे भामिनि सिय बल्लभ बड़भागी भाविक मनभावन ज्ञानाअलि जनु छबिशिंगार दोउ निरखत मन बिश्रामरी ३६९
अनुपम युग पूरण चन्दरी। सुमनकुञ्ज नभअलि तारावलि लघु उपमा द्युति मन्दरी॥ प्रमुदित उदित प्रगट सुररवनी छबिछवनी प्रिय तनमन भवनी गजगवनी

रतिछबिमददवनीघेरि लाल ललि फन्दरी। लिये चमर कोउ ब्यजन दुरावै कोउ गावै करमृदँग बजावै हाव-भाव करि नचत नागरी प्रगटि रास सुखकन्दरी॥ तेहि शिंगार बन पिय सिय प्यारी फूली बिबिध रङ्ग फुल-वारी ज्ञानाअलि सर्बानँद भवनहिं चलेलहि सुखम-करन्दरी ४०० ॥ रागगौरीख्याल ॥ सजि असवारी प्यारी दोउ न्यारी न्यारी। सुमन बिमान पिय सिय सुखपाल चढ़ि सखियन सँगकियो महलतयारी॥ पितमसमाज दास चतुर खवास बहुकोटिनकुमार नृपबयसम प्यारी। आय आय मिलत जोहारि जोरि जोरिकर भईहैं नि-हाल ज्यों लह्यो है मीनबारी ॥ क्षोम छबि ललित बिशाल स्वच्छ उच्च अति अजिर बिशाल मध्य बंगला सुभारी। ज्ञानाअलि लक्षखम्भ ललित बिशाल लाल मणिन जड़ाय छाय पिय सुखकारी ४०१ ॥ घनाक्षरी ॥ फरस रँगीली चारुचांदनीचटक तनी, मध्यराज मा-धुरी सिंहासन सजाय है। कोटिनफनूसझाड़ हंडि औ गिलास स्वच्छ, मणिन के दीप ताकी उपमा न पाय है॥ भरत छबीले लाल लषण रँगीले सङ्ग, शत्रुशाल सखनसमाज साजि आय है। ज्ञानाअलि भाय सङ्ग भाय भाय बातैं करैं, बैठे दुहुंओर नीके नीके मन भायहै ४०२ छाँड़िके छबीले छैल भूषण सजेहैं अङ्ग, कोटिन अनङ्ग अङ्ग देखिकै लजात हैं। टेढ़ीपेंचपाग शिर सखन कि नीकी नीकी, प्यारेके किरीट श्रुति

कुण्डल लखात हैं। गोरे गोरे गात मुख सुखमा न जात कहि, अङ्ग अङ्ग भूषण बसन सरसात हैं। ज्ञाना-अलि हासरस सखन सहायपायो, बिबिधबिलास हँसि हँसि पान खात हैं ४०३॥ लावनी छन्द ॥ सोहावन सभा सजीभारी॥ सर्बानन्द भवन मनभावन सब ऋतु सुख-कारी। चारिदश भुवन भूप आवै सातद्वीप नवखण्ड लोकातिहुँ चतुरङ्ग दलत्यारी। निरखि नृप अवधचन्द शोभा चषचकोर करि छबिरस पीवै जीवन धनवारी। चरण शिर कीटन धरि पूजैं बिबिध भेंट मणि थारन भरिभरि अस्तुति अनुसारी॥ जीवो जग युगयुग सुख दानी रबिसहस्रसम तेज सोमशत शीतल छबिहारी। इन्द्रशत सहस्रभोग भोगी धनद कोटि शतधन परि-पूरण त्रिभुवन अवतारी॥ कामशत कोटि बदन शोभा बरुण बिरञ्चि शेश शिव निशि दिन आज्ञा शिरधारी। सदा यह सुख समाज शोभा ज्ञानाअलि बिचारि देखो हिय मन मतङ्ग मारी ४०४ लाड़िली ललना सँग-वारी। झरोखन झांकहि झुकि प्यारी॥ अवध पुरबा-सिन की नारी। सलोनी सुन्दरि सुकुमारी॥ लगीं सब गोखन मगभारी। देखि सुखसभा छकी सारी॥ दोहा॥ श्रुति कीरति सिय उर्मिला, सुभग मांडवी चारि। पिय-मयङ्क सुखमा सदन, चषचकोरिका धारि॥ इकटक ताकैं छबि भारी॥ भरी दोउ सभा भीर नीकी। यही सुख जीवन धन जीकी॥ ब्यास शुक बालमीकि

हीकी। षष्ठदश आठ चारि ठीकी ॥ दोहा ॥ ज्ञानाअलि पढ़ि गुणि समुझि, करि बिचार गुरुसङ्ग। पुनि रसिकन कर साथ नित, यह रस ग्रन्थनरङ्ग॥ रँगेते यहि सुख अधिकारी ४०५ ॥ झपताल ॥ युगल सुख साज सखि सुभग सकको कही। निरस मति अन्ध अति मलिन मल ग्रसित मन दिब्य दृग होय तौ कहै लखि छबि सही ॥ बन्धु प्रिय सखागण दास जे खास बहु चमर ब्यजनादि करटहल निज निजगही। भरत कर छत्र श्रीशत्रुहन कर चमर लषण लखि ब्यजन अति चतुर सेवालही ॥ पवनसुत पान धनुबान सुग्रीव कर द्विविद असि ढाल उरमाल सेवाचही। अपरआसा छड़ी खास बरदार कर अवध नृपलाल छबि अतुल मण्डन मही ॥ यामगत चारि दिन निशा यामार्द्ध कछु मच्यो आनन्द दुहुंओर देखत रही। ज्ञानअलि प्यारि ढिग ठाढ़ि कर चमर गहि द्वादशौ कुञ्ज यह रहस सरिताबही ४०६ छोम छबि छिटकि नभ शरद निशि जनुबनी। भीत मणि श्याम नग जटित अभिराम अति मनहुं तारावली ललित चहुं दिशि घनी ॥ मध्य राकेश अवधेश सुत चारि जनु सखा नृप मण्डली घेरि बैठे भनी। मनहुं सुरयूथ निशिराज मिलि परसपर बैठि सब कहत सियराम यश रससनी ॥ दुहूँ दिशि नृत्य बहु गान बाजन बिबिध लाड़िली अलिन सँग मनहुँ बहु छबि जनी। देव नर नाग नृप रवनि

बहु बाहिनिसँग सहचरी अमित सुकुमारि अँग बनि ठनी॥ प्यारि सिंहासनासीन करबीन प्रिय लेत गति गाय मृदु सकै को गुन गनी। बाणि भइ मौन रति रमासी थकि रही अपर मति कौन ज्ञानाअली तिय मनी ४०७॥ राग ईमन॥ प्यारी बीणा सुनी पिय कानन। उठे नवल राजीव बिलोचन ज्यों मृग सुनि मृदु तानन॥ चले जोहारि सभासद गृह गृह प्रियतम खान प्रियाकर पानन। करि बरखास सियापुर बनितन परी चोट घन घोर निशानन॥ घटिका चारि चहूं युग बीते आइ मिले ज्यों तन प्रिय प्रानन। बैठे लाल लाड़िली के सँग घन दामिनि उपमा मद भानन॥ कियो निहाल लाल ललनन मिलि बिबिध हास कोउ करि दृग सानन। ज्ञानाअलि दम्पति बिलास रस पियताहि बनै मूक कहि जानन ४०८॥ दोहा॥ कनक भवन भीतरहि यह, सुख बिलास दिन रैन। मातु भवन ब्यारू करन, जात पिता सुख दैन॥ बन प्रमोद सरयू निकट, सखन संग नृपलाल। मृगशिकार भाइनसहित, खेलत करत निहाल॥ कबहुं सखन सँग अटन पर, चढ़े उड़ावहिं चङ्ग। रङ्ग रङ्ग नभ छै रह्यो, मचो परस्पर जङ्ग॥ चतुरँग चमू सजाय बहु, पैदल रथ गज बाजि। लरत परस्पर बिजय हित, भरत लषण दल साजि॥ दुहुं दिशि तोपन फैरकी, घोर शोर अति जोर। बज्रपात जनु होत महि, मनहुं मघा घनशोर।

यहि बिधि खेलैं खेल बहु, बन्धु सखन मिलि लाल। आय लाडिलीभवन पिय, कहि सब खेटक हाल॥ षटऋतु द्वादश कुञ्जबर, बारहमास बिहार। यहि बिधि बीतत दिवस निशि, कहत सन्त श्रुति चार॥ श्रीगुरु कृपा कटाक्षकरि, यह सेवा उपदेश। नित्य सदा जो प्रकृतिपर, जहँ दुख नहिं लवलेश॥ अति दुर्लभ सिय महल सुख, सुलभ कृपा सिय होय। पुनि अचार्य गुरु रसिक जो, उपदेष्टा जिय सोय॥ प्रकृति पाँच अरु बीस बश, पांचतत्त्व गुण तीन। काम क्रोध अरु लोभ मद, जिय ताके आधीन॥ कवन यतन सियलालकी, सेवा पावै जीव। घरही में ठग बसिरहे, हे रघुनन्दन पीव॥ रूपमाधुरी गुणकथन, नाम युगल अभिराम। धाम अवध मिथिला कथा, यह जीवन बिश्राम॥ ताते कछु मन मनन करि, ज्यों त्यों मन समुझाय। गाय लाडिलीलाल यश, निज मति सरिस सोहाय॥ पिङ्गल काव्य न कोषगति, गण अरु अगण न होस। यह सेवा फल सियकृपा, निश्चय परम भरोस॥ हे स्वामिनि सिय प्राणप्रिय, पिय बल्लभा किशोरि। रघुबर सियबर रूप निधि, गुणनिधि मम गति तोरि॥ हे जीवनधन लाडिली, हे नृपलालन मीत। हे मनभावन भाभिनी, दीजै युग पद प्रीत॥ हे नटनागर नागरी, छबिआगरि गुणखानि। हे शरणागत रक्षिका, निज चेरीकरि जानि॥ हे शशिबदनी छबिसुधा, अधराधर

मृदुबैन। पियचकोर चित लुब्ध नित, पियत माधुरी नैन॥ हे सुखमाकर साँवरे, श्याम सलोने लाल। मृगनयनी छबिजाल में, फँसेरहौ ज्यों माल। हे गुण गाहक नेह निधि, जगजीवन बिश्राम॥ सियारमण सुखमा भवन, बड़ भागी सुख धाम॥ हे निमिबंश उजागरी, अवधबिहारीबाम। हे रघुबंश प्रकाशकर, युगल चन्द अभिराम॥ हे कौसल्या लाड़िली, जयति सुनैनाबाल। जयति जनकजाया भली, जय दशरथ नृपलाल॥ हे रसिकनजीवनजरी, युगयुग पूरणचन्द। घटौ बढ़ौ कबहूं नहीं, नित्य सच्चिदानन्द॥ अगहन सुदी सुपूर तिथि, शनिबासर सुख मूल। पवनसुवन दिन जन्मकर, जानि समय अनुकूल॥ सियबर केलिपदावली, ग्रन्थ समापति कीन। ज्ञानाअलि श्रीअवधपुर, भक्ति निछावरि लीन॥

इति श्रीअष्टयामसेवाकुअष्टादशविलासपदावलीश्रीपद्मवदनिअनुचरि ज्ञानाअलिकृतसमाप्तम्॥

